करता । वृद्धाका रोना शुरूहीसे सप्तममें पहुँचाथा धीरे २ पञ्चमपर अ
लेकिन पञ्चममें भी कबतक ठहर सकता है होते २ सबसे नीचे गिरकर
हुआ । इतने समयतक मोतीलाल गम्भीर चिन्तामें डूबेथे । अब ७
हुए । भाग्य दोषसे आज मोतीलाल किसीको भी सन्तुष्ट नही करसके ॥

तीसरा ।

एक बजे बिहारीलालने आँगनमे खड़ा होकर पुकारा—" मा ! ओ
मा !-! ।"

माताका रोना उससमय थम्हगयाथा । सिरसे पाँवतक कपड़ा ओढ़क
रहीथी । मोतीलाल खिन्न चित्तहो अपने शयनागारमें बैठाथा । बिहारील
कुछ जवाब नही मिला सब चुपचाप थे । बिहारीलालने फिर पुकारा " भौ
भौजी !! एभौजी !!! अरे घर में कोई नही है क्या ? ॥

इसबार मोतीलालने धीरे २ घरसे बाहर होकर कहा—"बिहारी ! इधरअ

बिहारी बड़े भाई का मलीन मुख देखकर जल्दी से पास पहुँचा और
" भाई । सब कहाँ गई है ? "

मोती०—" मातो घरही में है और तुम्हारी भौजी झगडकर टेकचंद
मिहीलाल को लेकर न जाने कहा चली गई है ?"

बिहारी—" जानपड़ता है मासे झगड़ा किया होगा "॥

मोती०—" हाँ झगड़ा भी ऐसा वैसा नही "॥

बिहारी—" तो वह गई कहां ? "

मोती०—"चूल्हे में जाय " ॥

बिहारीलाल और कुछ नही कहसका । धीरे २ बाहर की ओर
मोतीलालने उसको बाहर जाते देखकर कहा—"अब जाता कहां है? "॥
बिहारी—"जरा देखें तो कहाँ गई है ?"

मोती—" अरे छोड़ो चरचा । इस वक्त क्या काम है । बेर ढरकगई है
भोजन करो माने भी खाया नही है उसको खिलावो फिर पीछे देखना । '

बिहारी—"दोनों लड़के साथ गये है एकबार...."

मोतीलालने बात काटकर कहा—" इसीसे तो कहताहूं कि कहातक ज
बहुत गई होगी तो मिसिर बाजार तक हद है ॥"

इतना सुनकर बिहारीलालने धीरे २ उस घरमे प्रवेश किया, जिसमें

यन करती थी । घरमें जातेही बिहारीलालने समझ लिया कि आज का कोप
ारण नहीं है । चुपचाप माताके पायँते बैठकर धीरे २ पाँव दाबने लगा ।
ा उस समय भी क्रोधके मारे अधीर थी । पुत्रकी सेवासे संतुष्ट नहीं हुई ।
छुड़ानेकी चेष्टा करने लगी । इधर बिहारी भी माताका कोप शान्त करने
कमर कसकर अड़ गया । किसी तरह पाँव नही छोड़ा । कुछ समय पीछे
ाने कहा—"दूर हो मुँहजरा । मैं तेरा मुँह देखना नही चाहती । तेरी कर-
मेरी हड्डी हड्डी जल रही है । अब मैं जीना नही चाहती मरनेसे ही अच्छा है ।"
बेहारी इस बातसे दुःखी नही हुआ । हँसते हँसते बोला—"मा तीसरा पहर
अबतक कुछ खाने को नही मिला । भूख बड़ी लगी है । दो कवर भात
ा खाले । अँतडी कुड़ कुड़ा रही है ।"

ाताने ऊँचे स्वरसे कहा—"अरे निठुरका । तुझे भात खाते लाज नही आती ।
आता कहांसे है ? एक कौड़ी कमानेको नही और खानेको राकस बना
है । इतनी देरतक कहांथा ? किसका काम करताथा ? ऐसा नसीबमें
ा आई कि एक भी सुपूत नही सबके सब कुपूतही निकले ।"

ाताने इससे भी बहुत कड़ी कड़ी बातें कहीं लेकिन बिहारीलालको फूलसा
लगा । सबको हारकी तरह लेतागया ... ही रोज ऐसा हार पहने बिना
रीके पेटको अन्न नही नसीब ... नही है । ठ... रीलालने खुशीमनसे यह सब
र हँसते हँसते कहा—" ... बढाहै । फिर तुम सु... पहले चारकवर भात खिला-
पीछे जो चाहे कह... ो सुसराल है दोनों अपनी २ ओर ...
जारहो आखिर ... ली रही तो क्या कुछ चिन्ता नही बहुत गयी थोड़ी रही
ड़ाती रसोई ... ीख माँगके बिता लूँगी । तुम लोग अपने रामको चेतो ॥"
—" ... लो ... की आँखमे आसू दीख पड़ा ॥ इसबार आंसू देखकर दोनों बेटोंको
बेहार... था हुई । बिहारीलाल थोड़ी देर तक खिन्न मन रहकर पीनकमें झूमने
... मोतीलाल ने कुछ समय तक सोचकर मातासे कहा—"कहो मा अब क्या
रनेमें भला है ? "

आसू पोंछकर माने कहा—"बेटा कल्ही तुम जाकर हमारी पतोहू और नातियों
पोतों) को लादो । उनको देखे बिना छनभरभी हमे बरससा वीतता है । मै
ब बहूसे झगड़ा नही करूंगी । अब वह मारेगी तो भी सांस न खींचूगी । बेटा
म कल्ही सैदपुर जाव ॥

पर राजी नही हुए। विहारीलालने कहा "सुनो भैया । जब मा इतना कहती तब तुमको जानाही अच्छा है ॥"

मो०--"तो तूही क्यों नही जाता ?"

बिहारी-"नहीं भैया, मुझे तो इसके वास्ते क्षमादो । आपही जाव हमको हुक्म दो तो हम जब तक तुम नही आवोगे तब तक घरका सब काज सभालूँगा । " लेकिन सैदपुरवालोंके साथ सिरपच्ची करते न बनेगा ॥"

बिहारीलाल सदा दूसरेहीके काम काज में बिताता था । अपने घरका काज कभी कुछ नही देखता था । आज उसके मुँहसे यह अनहोनी बात कर मोतीलाल बहुत अकचकाये और न जाने क्या सोचते हुए कुछ कर बोले-

"भई यही तुमसे नही होता । नहीं अगर घरका काम काज तुम देखो तो तो मैं सैदपुर क्या यमराज के यहां तक जानेको तैयार हूं ॥"

दूसरे दिन सबेरेही मोतीलाल बसन्तपुरके लिये रवाना हुआ। माताने के लिये बहुतसी मानमनावनकी बात कहला भिजवाया ।

पाँचवाँ ।

मोतीलालके घरसे बाहर जाने पर गदाधरकी माने भीतरके आँगनमे होकर पुकारा-"ओ माजी ! माजी ! अरे अभी भी उठी नही हो क्या ?"

घरसे मोतीलालकी मा तावरतोड़ बाहर आकर बोली-"काहेरे मा ! तेरा इतना कलेजा कि मेरे घरसे मेरी बहूको फुसलाके लेगयी ! मै सीधीसादी समझती थी, लेकिन तेरे पेटमें इतनी दुरबुद्धिहै ?"

गदाधरकी माने डरके मारे काँपते काँपते कहा-"ना माजी ! मै ऐसा नहीं जानती थी कि वह घरसे नाराज़ होकर गयी थी । उन्होंने कहाकि 'बाबा बड़े बीमार है सो मैं उनको देखने जाती हूँ । गदाधरकी मा तू मेरे साथ चल । माजी ! मै भला ऐसा क्या जानती थी कि बड़े घरकी बहू होकर इस तरह झूठ बोलेगी । जैसीकी तैसी उनके साथ चली गयी घर पर उन्होंने लानेको भी नही आने दिया । भला माजी ! तुम्ही कहो इसमें मैंने गुनाह किया ?"

मोतीलालने फिर कोपकी मात्रा बढ़ाकर कहा-"हाँ रे हाँ । तू बड़ी

जैसा चलाक दुनियामें कोई नही है। बूढ़ी भयी तीनपन बीत गया मरने किनारा आया आज भी कैसी भोली बनीहै बाप बीमारहै उसको देखनेके ते हमारी पतोहू दोनों नातियोंका हाथ पकड़कर पैदल बापके घर जायगी। तो तू रूठकर जाना और बापसे मिलनेको जाना इसमें क्या अन्तर है जानतीही नही दुधपिहुसा लड़की है तुझे क्या इसकी खबर कहाँ ! क्यों को गँवार समझके भुलाने आयीहै ?

गदाधर माकी आँखोंमें अब आँसू दीख पड़ा। वह रोते २ बोली—"ना मा ! हारा पांव छूकर कहती हूँ (रोतीहुई) गदाधरके माथ परभी हाथ रखकर मखा सकतीहूँ मै इसका कुछभी भला बुरा नही जानती। तुम्हारेही घरकी दाल खिलाकर मैं गदाधरको जिलायाहै वह अब जुआन जहान हुआ कन तुम्हारे घरके सिवाय किसीके दरवाज़े पर जाँचने नही गया। तुम्हारे क पानीसे पलकर मै तुम्हारा बिगाड़ करूँगी। क्या तुम हमको इतना नीच झतीहो ? माजी ! क्या जगत्में भगवानका डर नही है जो मै ऐसा करूँगी ! जी ! ऐसा हमको बेविसास मत करो अबभी संसारमें धरम है। अबभी ज चान जगत्में उगते है अभी नेकी आजमाना दुनियासे उठ नही गयाहै। सा करूँगी तो नरकमें भी मुझे रहनेको जगह नही मिलेगी।"

गदाधरकी मा फिर रोने लगी। उसका रोना देखकर मोतीलालकी माको अब आई। इस बार कुछ शान्त होकर माता ने गदाधर मा से कहा—" सुन दाधर की मा ! तुमको अक़ल थी तो आकर हम से पूंछ जाती, मै कुछ छः कोसपर तो थी नही। थी तो घरही मे न !."

गजाधर मा की आँखो का जल सूख गया और प्रफुल्ल चित्त से सिर काकर कहा—" हाँ माजी ! इतना तो हमसे कसूर जरूर हुआ। मेरी बुद्धि में समय यह बात नही आई। लेकिन अब मै ठगा गई। माजी ! अब मुझे छी हिदायत होगई। अब कोई हमको नही भुला सकेगा। एक बार जो वि सो बावन बीर कहांवै। बिना ठगाये आदमी खबरदार नहीं होता। "

मोतीलाल की माने कहा—" अच्छा गजाधर की मा ! भला बता तो लोगों को देखकर वहां वालों ने क्या कहा ! "

गजा० मा—" क्या कहूँ माजी ! वहाँ वाले सब के सब देखकर अक चका । सब टोल महाल के लोग थक्क से रह गये। बड़ी बहू ने जाकर कहा— मै अब गाजीपुरका मुँह नही देखूंगी नसीब में न जाने किस पाप से ऐसी सास

मिली कि पेटभर खाने को भी नही देती और ऊपर से रात दिन मारे गाली गाली के प्राण निकाले डालती है । इसी तरह और भी कई बाते बना बन कहीं जो हमको याद नही आती । ”

गदाधर की माने अपना कहना बन्द किया लेकिन जो कुछ कहा उसे कर मोतीलाल की मा कोप के मारे काँपने लगी । और आँखे लाल लाल कहा--“ हाँ ! इतनी ढिठाई अब वह इस घरमें नही आवेगी और हम लोग का मुँह नही देखेगी । अच्छारे अच्छा । तेरी यह बातभी मै देखूंगी । ”

ग०मा--“ माजी ! समाधिनने भी कहा कि अब बेटी को गाजीपुर का नही भेजूंगी । और बडी बहू ने उनसे यहभी कह दिया कि छोटी बहूभी नही आती । उसके बापभी बिदा नही करैगे । यह सब बातें बडी बहूने प्रका करदी । सब लोग थुडी थुड़ी करने लगे । ”

इतना सुनकर मोतीलाल की माका कोप और बढा आँखें चढगइ । ओ फरफराने लगे । आँसू दिखा दिखाकर बहुत कुछ खाह बाह बकने लगी अन्त कहा--“अरे बडी भूलहुई मैं ऐसा जानती तो मोतीको सैदपुर हरगिज न भेजती अच्छा देख बहन ! गदाधर मा ! यह बात किसी से नहीं कहियो । शहर कोई आदमी यह बात सुनने न पावे भला ? ”

ग० मा--नही मा ! यह बात क्या किसी से कहने की है ।”

इसीप्रकार दो चार बातोंसे मोतीलालकी माका सम्बोधन करके ।ज धर मा वहांसे चली । घरसे बाहर होतेही उसके पेटमें बातोंका ज्वार भाठा ने उसको इसबातके प्रगट करनेसे रोका गया है । अब उसको जबतक जाहिर नही करपाती तबतक उसका मन किसीतरह ठिकाने नही है । पर आतेही पहले यह बात किससे कहूं इसका वह विचार करने लगी । नसीबकी बात है रास्तेपर कोई उसे नही मिला ।

लेकिन गदाधरकी माको अब सहा नहीं जाता । पेट गुमसुम होरहा है बात अंतड़ियोमे खलबला रही है । झट रास्तेके एक ओर पासही एक कह के घरमें जाकर पुकारने लगी- “ अरे रौतारन । ए रौताइन ! अरे एक बात ना सुनिहो ! ”

कहारिन रौताइन रसोई घरके काममें लगीथी । जल्दी २ बाहर आयी औ लसी नथ हिलाकर कहने लगी--“ का है ! का है ! बहिनी का है ? ”

गदाधरकी माने इधर उधर देखकर धीरे २ कहा-“ लेकिन बहन माजी

बातको कहीं कहने के लिये मना किया है, फिर हमको कही किसीसे कहने क्या काम है ? हम लोग गरीब आदमी हैं उन लोगोंका दाना पानी खाकर ती है भला उनकी निन्दा हम लोग काहेको करैगी? ”

कहारिन रौताइनने मुसकुराकर फिर नथ हिलाते २ कहा--“ हां बहन और ां क्या ? ”

इसीप्रकार भूमिका बांधकर गदाधरकी माने जितनी स्त्रियां मिली उनसे सब कहती गयी । और जिनसे उसका कुछ अधिक घरौआ था उनको तो से जगा जगाकर सब हाल सुनाया इसीतरह बारह बजते २ यह बात सारे रमें पसरगयी ।

छठा ।

आठ बजते २ बिहारीलालकी नींद खुली । प्रात.क्रियादि करते करतेही नव गया लेकिन अबभी बिहारीलाल को सबेरेकी खुराक पूरी नही हुई । इतने माताने बिहारीलालको संसारी कामके लिये पुकारा । बिहारीलाल चटपट लगाकर माताके पास पहुँचा । जो चीजें पहले लानाहोगी वह सब सुन झ लिया ।

लेकिन बिहारीलालके पास तो कौड़ी नही थी एकतो वह बिना रोजगारके भर आवारा फिरा करता था फिर कहीं कुछ हाथ भी लगता था तो दम में लगा देता था । जब कभी दमकी भी जुगत नही लगती थी तब वाले सहयोगियोकी शरण लेता था ।

बिहारीलालने देखा कि दमके लिये सुभीता न हो तो दम चलसकता है किन खर्च बिना संसारका काम तो एक दिनभी नहीं चलसकता । अन्त में ाताने अपना चोरिका खोला और एक चौअन्नी दी । बिहारीलाल हँसीखुशी से ौअन्नी लेकर बाजारको चला ।

बिहारीलाल चौअन्नी लिये हुए बाजारके भीतर होनाही चाहता था कि ामधन मोदीने उसे पुकारकर कहा--“ अरे भैया बिहारी ! सुनो तो तम्बाकू ाये जाव । ”

यहा तो इसके लिये फकीरीही ली है । तम्बाकूका नाम सुनतेही दूकानपर ाटपके । रामधनने एक आसन लादिया । बिहारीलाल बैठे और रामधनने ड़े चटकमटकसे तम्बाकू बनाकर दिया । बिहारीने दांत निकाला और “पहले

आप खाव" कहकर एक चुटकी उठा मुँहमें डालली । फिर औरोंने भी मुँ
में तम्बाकूका चूरणडाला दूकान परके बैठे लोगोंमें थुकथुकी चली । फि
चिलम चढी एक, दो, तीन, चार, पांच, छः चिलमें फुँकगई दम चलने लगे
धूएँकी नालियां लोगोंके मुंहसे बाहर होने लगी । साथही गप्पोंकी छूट चली
बिहारीको बाजारकी कुछभी खवर नही रही । दमबाजोंमें भूलकर दमहीका द
लोग भरने लगे ।

दूकानपर एक एक करके आदमीभी अधिक जमा होगये थे । उनमेंसे एकों
अतिकाल होते देखकर अपने खाने नहानेकी वात छेड़ी । अब बिहारीलालको
अपने बाजारकी याद आई । मानो सोतेसे जागउठा और झटपट वहासे उठक
बाजार को चलनाचाहा ।

इतने में " रामनाम सत्य है । रामनाम सत्य है ।" करतेहुए लोग उधर से
निकले । बिहारीलालने देखा बड़े दु:खसे रामनाम करतेहुए तीन आदमी कन्धे
पर एक मुरदा लिये जारहे हैं

मुरदा लेजानेवालों में से एकने सामने बिहारी को पाकर कहा--" वाहरे
बिहारी क्या खूब ! सारे शहर में ढूंढ़मारा तुम्हारा कही पता नही । हम लोग
तीन आदमी कैसे इस मुर्देको लेकर पार लगेंगे । आवो जल्दी कांधे लगजाव
बिहारीलाल लज्जित मनसे जल मुर्देके एक कोने काँध देकर लगगया । बाज़ा
रके लोग बिहारीका काम देखकर अकचका गये ।

बिहारीलालको अब घरकी कुछ भी खबर नही रही । वह बाज़ारकरके जब
घर जायगा तब माता चूल्हा जलावेगी यह सब बातें भूल गयीं । शव वाहि
योंके साथ मिलकर बिहारीलाल गङ्गातटपर पहुंचा और शव दाहकर्म्म प्रारम्भ
किया । साथके और लोगोंको कुछ काम नही करना पड़ा अकेले बिहारी लाल
ने सब काम पूरा किया । शवदाहका सब काम होते २ सन्ध्या हो आयी ।
सब लोग नहा धोकर अपने २ घरको लौटे । अब बिहारी लालको अपने बाजा-
रकी पड़ी । माताने जो चौअन्नी दीथी वह भी उसके हाथसे खोगयी ।

अब बिहारी लालके मनमें कुछ डर हुआ । जिसके घरका मुरदा था वह एक
अनाथा विधवा है उसके और कोई नहीं है । मनमें चिन्ता करते २ बिहारी
लाल घर पहुंचा । दरवाजे पर पहुँचतेही बिहारी लालका कलेजा काँप गया ।
घरमें आकर देखा तो । किसी तरहका कुछ शब्द नही है । माताकी कुछ आहट
नहीं मिली । बिहारी लालने डरते डरते पुकारा " मा ! ओ मा ! मा ! "

बिहारी लालको कुछ जवाब नहीं मिला। उसने फिर ऊँचे स्वरसे पुकारा- " मा ! कहाँ गयी ? " उस समय माता गरज तरजकर बाहर आयी। और कहनेलगी-" अरे मुँह जरा। अब आया है ? दिनभरमें अब तेरा बाज़ार हुआ है। "

माताके आशीर्वाद सम्भाषणसे बिहारी लालके जीमें जी आया। उसने समझा कि माताने उसे गाली दी है तो कुछ हरज नहीं यह कोप जल्द दूर हो जायगा। और साहस करके बोला-" मा ! मिसर बाजारवाली मौसी मर गयी है उसीको जलप्रवाह करने गया था। गरीब जानके उसको कोई फेंकने नहीं गया। तीन आदमी बड़ी कठिनतासे लिये जातेथे इसीसे मुझेभी एककाँधे लगकर जाना पड़ा क्याकरें मा। ऐसी दशामें हमसे चुप नहीं रहा जाता।"

माताने कहा-" अरे हमारी नसीब और तेरी अक्किल ! इन मुरदा वालोंके मारे तो अब जीना कठिन हो रहा है न जाने हमीको हैरान करनेके लिये यह सब मरते है क्या और तेरी अक्किलको क्याकहू। रातदिन मुरदाजलाने और परवाह करने के सिवाय तुझे दूसरा तो कामही नही है। न जाने मुरदाही जलाने के वास्ते तेरा जन्महुआ है या क्या तू इन्ही सबमें भूलकर हमारा घर माटी कररहाहै "

अब माता बिसूर बिसूर रोनेलगी। क्रोधके अन्तमे रोना उनका स्वभावथा। कुछ देर पीछे शान्त होकर पूछा--" तो तूने कुछ खाया पिया भी है ?" " नही मा ! खाया कहाँ ?" बिहारीलालसे इतना सुनतेही माताके कोपका लक्षण दीख पड़नेलगा। फिर वह क्रोधके साथही रो उठी और कहनेलगी "अरे लोगनकी अक्कल तो देखो दिनभर हमरे बच्चेको मुरदा जलाने में लगा रक्खा और थोड़ासा जल भी नही पीने दिया।"

बिहारी--"मा ! खानेको देगा कौन ? मौसीको कोई है थोड़े।"

माताका कोप फिर दूर होगया। मृता बिधवाके लिये फिर पछताने लगी। उसके लिये आंखोंसे दो चारबूंद आंसूके भी गिराये। फिर बेटेके दिनभर निराहार रहनेकी बात याद आयी। ताबरतोड़ चूल्हे में आग जलायी और बिहारीलालसे कहा--" बेटा वह चौअन्नी देतो।"

बेटेके मुँहसे बातभी बन्दहुई। क्या जवाब देगा कुछ ठीक न करसका। बड़े दुःखसे डरते डरते कहा--" मा ! गंगाजी में नहाने लगाथा तब वह चौअन्नी गिरगयी।"

"अच्छा किया है बेटा। अब सो रहौ। बहुत बड़ा काम किया है, ठीक

किया है ।" इतना कहकर माता फिर रोनेलगी । कुछ देर पीछे रोना रोक बोली--"अरे चाण्डाल अबतो तू मेराजी जलाडाला, इसीतरहसे घरका काम च चलावेगा ?"

बिहारीलालने करुणास्वरसे कहा--" मा हमको भूखलगी है । पहले खाने देकर पीछे जितना चाहे बकना ।"

माताने जल्दी २ थोड़ासा चिउरा गुड़ ला दिया और कहा--"अब हमारे क्या है जो दूं यही है इसीको चबाकर नाद भरल । "

बिहारीलाल बड़े आनन्दसे चिउरा चबाने लगा । माता पास ही बैठ रोती आवाज़से कहने लगी "अरे रामरे हमारा बच्चा आज दिनभर भूखा रह दोकौर भात भी खानेको नसीब नहीं हुआ-हमारा मुँह जर जाय ऊपरसे ब को कितनी गाली दी । हे गङ्गामाई हमारे बच्चाको भला चङ्गा राखियो । हे--ग मरकी कमाच्छा देवी ! हमारे बच्चाको अच्छा राखो तुम्हें रामनौमी के धाममे आकर बकरा चढ़ाऊगी । देवीमाई ! दया करके अब हमको जल् चलो । दो बेटे पतोहू और दो पोते छोड़कर ससारसे चली जाऊँ अ मनमें कामना है ।"

माताको अपनी गाली पर पछताते देखकर बिहारीलालने कहा--"मा रोती काहेको । तुम्हारी गाली तो हमें आशीर्वाद हुई है । इसकी चिन्ता करती हो--।"

"नाबेटा । अब मै तुमको कभी गाली नहीं दूँगी ? अब गाला मुँहसे नि गी तो जीभ काट डालूँगी ।" इतना कहकर माता भीतर गयी और ब दिनोंका रक्खा हुआ एक लड्डू लाकर बिहारीके हाथमें दिया । बिहारी उस मारे आनन्दके फूल उठा । और अपनी दैनिक खुराक़ पूरी करके सेजपर लेट नशेकी नीद आगयी । लेकिन माता उस रातको विश्राम न पासकी । उन बेटा बिहारी आज निराहार सोया है इसी शोकमें रात भर छटपटाती रही ।

सातवां ।

दूसरे दिन मालिकनने सबेरेही उठकर घरका सब काम काज करलिया । और अपनी पूंजी मे से कुछ निकाल कर बाजारसे सामग्री खरीदने के लि एक पडोसिन के हवाले किया । उसी दिनसे अब बिहारीलालका विश्वास उ गया इसको कुछ खाने खर्चने को नहीं मिला । मालकिनका परिवार दरिद्र है कि

र्णपूज्य ब्राह्मण होनेके कारण सबलोग मानते जानते हैं। आजकलके अंगरेजी पढ़े लिखे बाबू इस बातसे चाहे अकचकायँ लेकिन अभी ब्राह्मण वंश में इतनी श्रद्धा मौजूद है कि हलका पतरा काम अगर वह कहें तो छोटे वर्ण के लोग बे तनख्वाह के नौकरकी तरह करनेको तैयार रहते है। कुलपूज्य ब्राह्मणदेव का यह सन्मान और कितने दिन तक जगत्में रहेगा सो नही कहसकते। हे देश श्रद्धालु ब्राह्मण! क्या तुम यह अपना सन्मान बरकरार नही रख सकते?

दस बजते २ माताने भोजन तैयार करके बिहारीको पुकारा। बिहारी ने आकर भोजन तो किया लेकिन आज भोजन करते समय उसको बड़ी लज्जा थी। खा पीकर बिहारी घरसे बाहर हुआ। माता अपना भोजन परस कर आहार करने बैठा चाहती थी कि इतने में मुलियाकी माने धीरे २ आँगन में आकर कहा—"काहे बहन यह क्या सच बात है।" सुनकर मालकिन थकबकायी और मुँह बनाकर कहा—"कौन बात बहन कौन बात?"

मु०मा०—"अरे तुम जानतीही नही और सारे शहर में मुहं मुँह चरचा हो रही है? सुना जाता है बड़ीबहूने घरजाकर यहाका सब हाल कहदिया है।"

मालकिनने कुछ कोपकरके कहा—"कहदिया तो कहदेन दे उसका बापका क्या कलट्टर है जो तोपसे उड़ादेगा।"

मु०मा०—"अरे बहन यह किसका दिमाग है। तुम बेटेवाली हो तुझको क्या कमी नही दसमिलेंगी, सुनाजाता है अब सैदपुरवाले उसको बिदाभी नही करेंगे।"

मा०—"नही बिदा करेगा तो न करे। बेटेका मै दूसरा ब्याह करदूँगी वह अपनेको झँखे।"

मुलियाकी मा जिस इरादे से आयीथी उसके पूरा होनेका ढंग न देख मनही मन कहनेलगी। इतना बड़ा मामिला दादा चुपचाप मिटा जाता है। इसके वास्ते तो जरूर २ कुछ करना चाहिये फिर मुराद पूरी करनेके लिये उसने कहा—"यह सब ठीक, लेकिल मै उस बड़ी बहूकी अक्ल पर बलि जातीहूं"

मा०—"बहूकी अक्ल तो मै सदासे जानतीहूं आज कोई नयी बात थोड़ेहै"। राम राम बुढ़ियाकी यह बात भी पत्थर पर तीर मारनेके समान हुई। अब माया लगना कठिन जानकर धीरे २ वहाँसे खिसकी। उसके खिसकते खिसकतेही चूड़ियाँ झन झनाती हुई जमना पहुची।

इसने भी मालकिनके भोजनमें बाधा दी। और मुँह सिकोड़कर कहा—"काहे हो सुनत है तुमने बड़ी को घरसे निकाल दिया है?"

मालकिनने झनककर कहा—"अरे तुझसे किस निगोड़ीने ऐसा कहारे जमुनिया?"
जमुनाने और कड़ा सुर पकड़ा उसने ओठोंको नाक तक चढ़ाकर कहा—"अरे कहेगा कौन ? सहर भरमें घर घर बात पसर गयी है । यह बात भी छिपी रहती है ?"

मालकिनने कुछ नरम होकर कहा— "अच्छा ऐसा है तो यही सही । हमारी पतोहू है । हमने उसको घरसे निकाल दिया है । इसमें सहर के बापका क्या लगता है ।"

जमुनाकी युक्ति भी बेकाम गयी उसकी आशा पर भी निराशाका पड़ा । और "अरे हम हूँ तो यही कह रही है ।"

कहती हुई धीरेसे चल खड़ी हुई । अब सुभीता समझ कर मालकिन बैठी दो चार कवर मुँहमें डाला होगा कि मिसुर बाजारकी रेखा पँडाइन पहुँ
पँड़ाइनजी शहरमें एक जाहिर लुगाई है । सब लोग उनके गले और से डरते है पँड़ाइनने आतेही कहा-"अरे राम, राम । आज तो महल्लेमें नही दियाजाता जहाँ देखो यही चरचा है । मारे लज्जाके सिर नही उठत सुनते हैं तुमने अपने बेटे और नाती पतोहुओंको मार पीटके घरसे कर दिया है ? "

बिहारीलालकी माका कोप इसबार बहुत बढ़ा । ऐसी अनुचित बातसे किस का कोप न बढ़ेगा । कोपके मारे काँपते ओंठोसे कहा—" अरे कौन पुतकाटी ऐसी बात कहती है हो ?"

अब धुरियायेही पाँवपर रेखा पँडाइनकी मुराद पूरी हुई । वहतो खोजतीही थी रोना चाहती थी आँख खोद पायी । अब क्या था । गरजकर बोली—"अरे तू हमको पुतकाटी कहती है ? तू पुतकाटी है कि मै तू पूतकाटी, तू पियारकाटी तूही दोनों बेटोंको चबाखा........"

इसीतरह खाने भकोसने लगी मालकिनभी मुँहका कवर फेंककर उठी और सामने आई । दोनोंमें रँड़हो पुतहो होने लगा । मानो महापुरकी भठियारियोंका दंगल होने लगा । दोनोके अनोखे भाव और विकट वचनवाणसे जो तुमुल संग्राम हुआ उसको हमारी लेखनी किसीतरह नही कहसकती । हे कलकारिनी कुलागारिणी ! क्षणभरमें पृथ्वीको उथलपुथल करदेनेवाली भारत कर्कसा ! तुम्हारी वह कर्कस बोली और हम विकट भावभङ्गी अङ्कित करनेमें हम सदा असमर्थ हैं । अतएव हम दूरहीसे तुम्हें माथ नवाकर तुम्हारे वर्णनसे हाथ खीचतेहैं ।

संग्राम में मालकिनकी हारहुई पँडाइन के गलेसे अँटनेवाले का अभी जगत्में
आरही नही हुआ है । रणविजयिनी रेखा चारो ओर कम्पित करके चली
विहारीलालकी मा किवाड बन्दकरके भीतरही भीतर रोनेलगी । गदाधर
ने चारोंओर जो आग लगादी थी उसकी लहरें आ आकर अब माल-
को जलाने लगीं ।

आठवाँ ।

दपुर एक बड़ासागाँव है । मकानोकी बनावट और म्यूनिसिपेल्टीके राज
को छोटा मोटा कसबा कहना चाहिये । गाँवमें पुलीस स्टेशन और अ-
ल है लड़कोंके पढ़नेको स्कूल है । ब्राह्मण, बनिये, कायस्थ, अहीर, नाई,
छिपी, कहार, चमार दुसाध सब जातिके लोग बसते है। उनमें कायस्थोंका
अधिक है । गाँवमे मुसलमान भी बसते हैं । हाट बाजार दर दूकान
ही से जाना जासकता है कि; सैदपुर कोई साधारण गाँव नही है । इन सब
रहते भी सैदपुरमें कई बातें दोषकी है । शराबकी दूकान चमरटोली
आदि भी वहाँ मौजूद है गरज कि सब तरह का सामान वहाँ मौजूद है ।

इस गाँवमें रघुबरदयाल नामके एक समृद्धिशाली व्यक्ति हैं । यह पहले
कमसरियटमें गुमास्ताका काम करतेथे काबुलकी लड़ाईमें बहुतसा धन कमाकर
देशको आये थे । इनदिनों वह काम छोड़कर घरमें योगभ्यास कर रहे है ।
उनके पहले एक कन्या जन्मीथी । जिसका नाम चम्पा रक्खा, चम्पा बाल वि-
धवा थी वही उनके घरकी मालकिन स्वरूप थी । उसके बाद शिवदयाल और
गुरुदयाल नामके दो लड़के हुए । आज तीन वर्ष हुए शिवदयाल संसारसे उठ
गये है उनकी विधवा तारा शिशुको लेकर अपने बापके घर रहती है । गुरु-
दयालने पहली स्त्रीके मरजाने पर दूसरी शादी की है । इस नई नारी का नाम
बेनी है ।

रघुबरदयालकी एक पेट पोंछनी कन्या हुई थी जिसका नाम रक्खा धूमा-
वती इसी धूमावतीके साथ गाजीपुरके मोतीलालका ब्याह हुआ था । यही धूम
मचानेवाली धूमावती हमारी बड़ी बहू है । इसके पीछे रघुबरदयालको कोई
लड़का बच्चा नही हुआ । सात आठ वर्ष हुए रघुबरदयाल की स्त्री भी का-
लग्रास हो चुकी है उन्होंने बेटे बेटियोंका मुँह देखकर अब दूसरा ब्याह नही किया ।

रघुबरदयाल इस वक्त साठ बरसके होंगे, लेकिन देखनेमें वह इतने दिनी नहीं ।

जान पड़ते । गाँवमें उनकी मान मर्य्यादा बहुत है । आजकल यह घरका काम
काज छोड़कर एक प्रभुभक्त साधु हो बैठे हैं । तंत्र मंत्रमे आप पहलेसे पक्के थे
अष्टाङ्गयोगमें भी उनका अच्छा अभ्यास था । जब पश्चिममें इनका रहना हुआ भी
था । तब वहाँ एक परम योगीके साथ इनका परिचय हुआ था । और उन्हीं से
उन्होंने दीक्षा लेकर योगाभ्यास शुरूअ किया था । गुरु देवमें इनकी अचल भक्ति
थी । वह समझतेथे कि उन्होंने जो कुछ पाया है वह सब गुरु महाराजकी कृपासे
पाया है अब भी वह कभी २ गुरु दर्शन देकर कृतार्थ किया करते है ।

रघुबरदयाल के मुँहसे सदा—" गुरु महाराजके आगे चिन्ता क्याहै, गुरुकी
दयासे सब होसकता है ।" इत्यादि सुनने में आताथा ।

रघुबरदयालने योग लिया है लेकिन् कभी २ दीवानी फौजदारी के मुकद्दमे
आकर उनके काममें रुकावट किया करते थे । जिनकी उनसे अधिक आमद
जाही नही थी वह रघुबरदयालको एक साधू समझते थे । जो उनके यहां आते
जाया करते थे वह लोग गुप्त रीतिसे उनके विषय अनेक अफवाह उड़ाया
करते थे ।

गांवमें यह बात उड़ी थी कि सैदपुरकी सीमापर एक देवी है वह सदा अँधेरे
में रातको उन्हें दर्शन दिया करती है । रघुबरदयालका आकार देखकरही आदमी
उन्हें भक्त कह उठेगा । शरीर स्थूल, वर्ण सोनेसा धपधपाताथा । वस्त्र गेरुआ,
गले में रुद्राक्षमाला भक्तके इन चिह्नों के साथ साथ रघुबरदयाल को धन सम्पत्ति
का भी अच्छा संयोग था ।

किन्तु पिताके इन आचरणों से बड़े बेटे शिवदयाल को बड़ी नाराजी थी ।
इसके लिये बाप बेटे में सदा कलह हुआ करताथा । बापभी बड़े बेटे पर नाराज थे
लेकिन् वह ठीकेका काम करके अच्छा धन कमाताथा, इस कारण ऐसे कमाऊ
लड़के पर वह किसीतरह ताडन शासन करना ठीक नहीं समझते थे । अन्त में
शिवदयालके मरने पर वह बेफिक्र हो बैठे । बेटेके मरजाने पर उनमें शोक का
कुछभी परिचय नही पायागया । जो लोग रघुबरदयालके घरका यह भीतरीहाल
जानते थे वह उनको मनहीमन गाली देते थे । और जो इन बातो से कोरे थे वह
रघुबरदयाल को माया मोहसे अलग एक संसार त्यागी विरक्त साधु समझकर
बड़ी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे ।

छोटा लड़का गुरुदयाल पिताका सदा प्याराथा । बड़ेभाई के मरनेपर उसने
ठीकेका काम चलाना शुरूअ किया । वह कालिज का एक पढ़ालिखा नवान

था । बी. ए. पास करके वकीलों के इम्तिहान देनेकी तदबीर कर रहे थे । लेकिन् बड़ेभाई के मरनेपर बापके कहनेसे वह सब छोडकर इसीलाभकारी रोजगार में लगे ।

शिवदयालके मरनेपर रघुबरदयाल दो काम में लगे पहला शिवदयालका सब काम गुरुदयाल के नामसे करादेना दूसरे बड़ी पतोहू ताराको बाप के घर भेजवाना ।

रघुबरदयालने दोनों काम पूरे किये बेटा गुरुदयाल छिपे २ चाहे जो करे लेकिन् जाहिरा बापकेही मनसे चलनेलगा । नामके गुरुदयालपर काममेंभी गुरुने बड़ी दयाकी थी । आपने गाजीपुरमे एण्ट्रेसपास करनेपर भारत की राजधानी कलकत्तेके एक बड़े कालिजमे बी. ए की डिग्री पासकी थी । कालिजके प्रिंसपल गुरुदयालको बहुत मानते थे पठनपाठनमे तेज होनेके कारण गुरुदयाल प्रिंसपलको इतना प्रिय होगये थे कि गुरुजीने अपने सब गुण दया करके गुरुदयालको देदिये । यह पूरे यङ्ग बङ्गाल स्वभावके आदमी होगये किसी धर्ममें गुरुदयालका विश्वास नही था । इसीसे वह अपनेको धार्मिक समझकर बड़ोंके आचार बिचारको वह बाल सनीचर की आँख से देखते थे । लेकिन् पिताके सामने अपनी कुछभी राय जाहिर न करके उन्हींके कहनेपर चलते थे । इन्ही सब कारणोंसे गुरुदयाल पिताका बडा प्यारा लडका होगयाथा ।

अब यहां रघुबरदयालकी बडी लड़की चम्पाका कुछ पता देना जरूर है । हम पहलेही कह आये है चम्पा बालविधवा थी । इस कारण वहभी पिताके बड़े आदरकी कन्याथी । लेकिन् रघुबरदयाल का यह आदर इतना ऊंचा उठाथा कि उसके दाबसे दुनिया काँपती थी । मानों चम्पा एकही छलाङ्गमें सारी दुनिया रसातल पहुँचानेका सामर्थ्य रखती है ।

चम्पाकी चाल चलनमें बड़ीबात यह कि, वह किसीका भला नही देख सकती थी । चम्पा बालविधवा होनेके समयसे सदादैवसे यही मनातीथी कि, तुरत जगत् की स्त्रीमात्र बिधवा होजायँ । किसीके विधवा होनेका समाचार पानेपर चम्पा आनन्दके मारे फूल उठती थी । पाठक पाठिका ! तुममे से किसीको हिंसा, द्वेष, अहङ्कार और अनुचित अभिमानका जीवन्तरूप देखनेकी इच्छाहो तो हमारी चम्पाको देखलेना । इसीसे तुम्हारी सब कामना पूरी होजायगी ।

और रघुबरदयाल की छोटी लड़की धूमावती के बारे में हमको कुछ कहना नही पड़ेगा । केवल इतना जरूर कहना चाहिये कि यह उसी चम्पाकी छोटी बहन है और रूप गुण सब बातो में उसकी बहन होनेका दावा रखती है ।

नवां ।

मोतीलाल उसी दिन शाम होते २ सुसराल पहुँचे । घरके सामनेही सर दामादकी देखा देखी हुई । इसबार मोतीलालको ससुरजीका आदर सत्क नहीं नसीब हुआ दामादने प्रणाम किया । ससुरजी लापरवाहीसे लेकर कुश सम्वाद पूछते २ चले गये । मोतीलाल बैठकमें पहुँचे । एक नौकर डाली मिठाई और लोटेमें पानी रखगया ।

मोतीलाल हाथ पाँव धो रहेथे कि, गुरुदयाल हाथमें छड़ी लपलपाते हु खानेको निकले । बैठकमें बहनोईको देखकर कहा—"अरे कौन मोतीलाल कब आये ? अच्छे तो हो ?"

मोती०—"हाँ अच्छे हैं । बहुत दिन हुए आप लोगोंसे भेट मुलाकात नहीं हु थी । इसीसे मिलने आया हूँ ।"

गुरु०—"अच्छा ! आपने बड़ी दया की जो मिलने आये कहिये अब अस बात क्या है ?"

मोती०—"असल बात हो यह कि तुम्हारी बहन नाराज होकर चली आ है उसे बिदा कराने आया हूँ ।"

गुरु०—"क्यो क्या अब भी बिदाकराकर मार डालनेकी नियत है ।"

मोती०—"मारडालनेका मतलब कैसा ?"

गुरु०—"मारडालनेका मतलब नहीं समझते ? चाहे गला दबाकर मारना या खाने बिना सुखाकर मारडालना"

यह सुनकर मोतीलालको क्रोध तो हुआ लेकिन् वह भाव छिपाकर उन्होंने कहा "हमारे दिन बिगड़े है इससे आपभी ऐसा कहतेहो ?"

गुरु०—"दिन बिगड़ने की बात क्या जब तुम खानेको नहीं दोगे और ऊपर से कुवचनकी मार करोगे तो तुम्हारे घर आदमी कैसे टिकेगा ? बिना जुल्म हुए कोई घरसे पाँव निकालता है ? तुम लोग असह्य वेदना नहीं देते तो क्यों भाग के आती ?"

मोती०—"आप अपनी बहनको जैसा समझते है उनका स्वभाव भी ऐसा नहीं है ।"

गुरु०—"अच्छा उसका स्वभाव अगर खराब समझकर तुमने निकालदिया है तो हम उसके पालनेकी ताकत रखते है । फिर उसे बिदा करानेका कुछ काम नहीं है । तुम आयेहो तुम्हें भी पालने के लिये हम तैयार हैं ।"

मोती०—"हम तो इस उम्मेदमे नहीं आये हैं...."

"अच्छा वह सब बातें पीछे होंगी । मै जरा घूम आऊं ।" कहकर गुरुद-याल बाहर गये । मोतीलाल चिन्तित मनसे बैठे रहे । थोड़े समय पीछे उसके दोनो लड़के पहुँचे । एक उनकी गोदमें बैठा दूसरा कन्धे पर पहुँचा । दोनों लड़कोंका मुहँ देखतेही मोतीलाल सब अपमान भूल गये । उनका मन प्रसन्न सा आया । आह्लादके मारे फूल उठे । इतनेमें एक दासीने आकर उनको भीतर जानेके लिये कहा ।

मोतीलाल भीतर चले । दोनों लड़के भी पिताके साथ हुए । आहारादि समासकरके सन्ध्या समय अपनी स्त्रीसे मिले ।

उस घरमे उनकी बड़ी शाली चम्पा भी थी । राम कुमारके गृह प्रवेश करते ही उसका मुँह चलने लगा—"अरे बापरे । अच्छे दामाद हो दादा । दो दिनभी गउमसे नही सहा गया । पीछे ही लगे आपहुँचे । ठीक है जबतक आदमीके मुँहमें दाँत मौजूद रहता है तबतक वह दाँतका आदर नही जानता । अच्छा अब मनमें क्या सोचके आये हो सो कहो ?"

मोती०—"लड़कोंको विदा कराने आयाहूं ।" इतना सुनतेही चम्पाने धूमावती की ओर लक्ष करके कहा—"काहरे धूमी । बतातो तेरी पीठका घाव अभी अच्छा हुआ या नही ?"

धूमावती न मुँह सिकोड नाक चढ़ाकर कहा—" बताना क्या न जाने किस मुँहसे बिदा करानेकी बात आदमी कहता है शरीरमे लाज हया तो कुछ है नही । कौन मुँह लेकर यहां आते बनाहै यही मै विचारती हूं ।"

मोतीलाल ने झझककर कहा—" तेरे ऐसी बदजात स्त्री हमने दुनियामें नही देखी ।"

धूमा०—" हाँ हो, हाँ । तुम सुजात हो तुम्हारी मा सुजात है तुम्हारे सब सुजात है हम बदजात हमारी सातपीढ़ी बदजात लेकिन न जाने सुजात बद-जातके घर अपने मुँहमें काली लगाने क्यों आता है ।'

फिर चम्पाकी ओर लाल लाल आँखे करती हुई बोली-" देखो बहन तुम लोगोका दामाद आयाहै तुम लोग जाकर हँसी खुशी करो ख़बरदार हमारे सामने मत लाइयो ।"

चम्पाने हाथ मुँह चलाकर कहना शुरूअ किया—" अरे तुम लोगोंकी हालत देखके तो अवाक होना पड़ता है । स्त्री रूठ करके आयी है सो तुम आये तो उसे फुसला पोल्हाकर भुलाना चाहिये उसे खुशकरके बिदा करानेको कहना चाहिये कि आतेही झगड़ा नाधनेलगे । क्या कुछ नशा करके आयेहो क्या ?"

मोतीलालने लम्बी सांस लेकर कहा—" हाँ नशा खाकरही आयाहूं ऐसीही हालतमें सुसराल आना होता है अब मै अभी जाताहूं ।"

मोतीलालके उठते उठतेही धूमावती ने करुणास्वरसे कहा—" अरे बहन सुनलिया कि नही ? तुम सब जो कहा करतीथीं कि बड़े चाहते है बड़ी प्रीति करते है सो प्रीति और चाह तो देख चुकी न ?"

चम्पाने मोतीलालका हाथ धरकर कहा—" अरे करते क्या हो ? ऐसाभी कोई करता है । अब साझ होगयी है बेर डूबती है अब कहां जावोगे । ऐसाही है तो रातभर रहो कल सबेरे चले जाइयो ।"

शालीकी बात सुनकर मोतीलाल बैठगये । बहन चम्पाकी यह बातें धूमावतीको कैसीलगी सो हमारी कुछ पाठिका स्वयम् समझ सकती है । हम उसको जानने समझनेकी शक्ति नही रखते । हां इतना हमने धूमावती के मुँहसे सुना उसने कहा—" अच्छा आजकी रात तो बीते फिर कलकी बात कल देखी जायगी ।"

इतने में परमसुन्दरी चौदह वर्ष की मोहिनी बालिका अपने रूप और हँसी की छटा चहुँओर छिड़कती हुई जल्दी जल्दी आई और मोतीलाल से पूछने लगी—" काहे भैया । हमारे घरके सब अच्छे है ? "

बालिकाकी यह मिश्रीसे भी मिठास भरी बात पूरी नही होनेपाईथी कि चम्पा गरज तरजकर अति भीषण कर्कश स्वरसे बोली—" आमर ! अरे सहा न है जाता तो जाके ननदोई के ऊपरही काहेनही गिर पड़ती । जो मा बाप सात जनमसे खोज खबर नही लेते उनका समाचार पूछने चली है । इनहीके अरको के मा बाप मेरे होते तो ऐसे मा बाप के मुँहमें साझे लुआठ लगादेती ।"

बाणविद्ध कुरंगिनी की तरह विचारी बालिका इधर उधर देखकर उसी जगह एक किनारे बैठगई उसने पहले जानानही था कि उसकी पिशाच रूपिणी नँनद वही विराजती है ॥

जलतीआग जलसिञ्चनमे जैसे निस्तेज होजाती है । बालिका भी उसी प्रकार निस्तेज होकर बैठी । अब बालिकाके मुँहपर वह आभा नही न वह शोभा है बदनपर का वह लावण्य जातारहा अधरोंकी हँसी लोपहुई । बालिका की उस सौन्दर्य्य राशि मे कालिमाकी छापलगी मोतीलाल भी चुपचाप बैठेथे । कई मिनटतक वहाँ सन्नाटा रहा थोड़ी देर पीछे मोतीलालने कहा—" हा बेनी तेरे घर सब अच्छे हैं । " लेकिन यह बातें बेनीके कानतक पहुँची या नही सो नही कहसकते । क्योंकि बेनी उसवक्त मुरदेकी तरह अचला थी।

कानोंको सुननेकी इससमय शक्ति है कि नही सो भगवान् जाने। पाठक पहँचान रक्खो यह बालिका बेनीही गुरुदयालकी दूसरी पाणिगृहीता नारी है ॥

फिर चम्पाने सुर बाधा—" राम, राम। आज दो बरस आये हुआ न जाने कैसे पत्थरके माँ बाप है कि एक बारभी कुशल मगल नही पूछा। ऐसे बापका समाचार पूछना चाहिये ? अरे हम होती तो ऐसे मा बापका जिन्दगीमें नाम तक नही लेती।"

इतनेमे बाहरसे किसीके जूतेकी मचमचाहट सुनाई दी। धूमावतीने कहा—" जावहो भौजी जाव। भैया आगये उनको भोजन परसदो।"

बालिका धीरेसे उठ खड़ी हुई उसका उठना था कि माथेपर वज्र गिरा। गर्जकर चम्पाने कहा—" चल, चल। रहनेदे। तेरे परसे बिना नहीं बिगड़ा जाता। भतार के यहां जानेकी बात सुनके कैसी जल्दी उठी। नहीं मुरदेकी तरह गुमसुम बैठीथी। तू जा उधर और काम काज देख। सबका खाना पीना हुए बिना आवेगी तो पीठ सलामत न जायगी।"

बालिकाने धीरेसे लम्बी सांसली और गुप्तरूपसे आँसू पोछती हुई चलीगई। थोड़ी देर बाद औरभी बहुतसी बातोंके बाद चम्पाने धूमावतीसे यह कहतीहुई चली—

" ए धूमी ! तू यहा रहेगी तो रातभर दोनोमे झगड़ाही होता रहेगा बहनोई को यहीं रहनेदे तू आ हमारे साथ सोइयो।"

" जा, जा ! तेरे मालकिन बननेका यहा काम नही है " कहकर धूमावतीने चम्पाको घरसे ठेलकर दरवाजा भीतरसे बन्द करलिया।

दरवाजा बन्दकरने पर देखा मोतीलाल अभी उसीतरह हाथपर गाल धर सोच रहे है चट हाथसे गाल हटाकर धूमावतीने कहा—" सोचा क्या जा रहा है ?"।

मोती०—" यही सोचताहूँ कि तुम्हारी बहनके ऐसी एक हमको भी बहन होती तो बड़ा अच्छा होता।"

धूमा०—" अच्छा क्या होता ?"

मोती०—" अच्छा यह होता कि तुम्हारी सब चलती हेठ होजाती।"

धूमावतीने इस व्यंग्यका अर्थ समझा या नही सो नहीं जानते किन्तु उसने और ढंगसे स्वामीका जी बहला लिया और पति पत्नीका झगड़ा इसीतरह बहारम्भे लघुक्रिया होकर मिटगया।

दशवाँ।

चम्पा घरसे बाहर होकर गुरुदयालके कमरेमें घुसी और उनके खाने पीने की तदबीर करदी। गुरुदयालने कहा—"काहे बहन! परसवैया क्या कोई और नही है जो तुम्हें आना पड़ा?"

गुरुदयालके मनमें था कि उनकी नवपरिणीता स्त्री उनके पास बैठकर खिलाती। लेकिन चम्पाने उनके जवाबमें कहा—"और परसवैया कौन है? तुम जो व्याह करके कन्या लाये हो वह तो आदमी हुई नही उसको जानवर समझना चाहिये। खाली हम लोगोंका जी जलाया करती है।"

अछता पछताकर गुरुदयाल भोजन करने बैठे और मनही मन कहने लगे—"मैंने इस बालिकाके रूपमें मोहित होकर ऐसा अन्याय किया है तब तो हम[illegible] लिये यह एक उलटे गलग्रह हुई।"

किसी तरह भोजन करके उठे और अपने शयनागारमें जासोये द[illegible] दण्ड घरी दो घरी बीती घंटेपर घंटे बीतने लगे। नयी दुलहिनकी आशामें गु[illegible] दयाल करवट बदलते रहे, लेकिन उसका रूप कई घंटोतक देखने में नही आया। उसके आनेमें जितनीही देर होने लगी उतनाही गुरुदयालकी नाराजी बढ़ती गयी। अन्तमें जब घरके सब सोगये। चारो ओर सुनसान हुआ। तब वही बालिका बेनी चुप चाप चोरकी तरह गुरुदयालके शयनागारमें आयी और भीतर होकर धीरेसे दरवाजा बन्द कर दिया और चिराग बुझाकर अपने [illegible] एक किनारे शरीर ढाककर पड़ रही।

गुरु दयाल अब भी जागते है। वह अपनी स्त्री के व्यौहारसे बहुतही अस[illegible]। वह यह चाहते थे कि उनकी भार्य्या आज कलकी पढी लिखी स्त्रि[illegible] उनके सब काममें सहाय होगी। और जीवन की सङ्गिनी बनकर [illegible]दो कालिबके रूपमें जिन्दगी बितावेगी। लेकिन भाग्यकी बात है [illegible] यह श्रद्धापूरी नही हुई। उनके मनमें यह विश्वास होगया कि [illegible] नही करती। इस कारण ऐसी भार्य्याके साथ वह अपना दिन [illegible] सकेंगे। लेकिन यह छोटीसी बालिकाके छोटासा हृदयका [illegible] करनेकी शक्ति गुरुदयालको नही थी।

[illegible]—"काहे बेनी तुम हमारे साथ इसतरहका व्यौहार [illegible] को इतना चाहते है, लेकिन तुम हमको कुछ भी [illegible] धीरे २ कहा—"बहुत जोरसे बोलना ठीक नही

गुरुदयाल इस जवाबसे और नाराज हुए। और चुपचाप पड़े पड़े इधर उधर करने लगे। लेकिन ऐसा भी उनको असह्य हुआ। और क्रोधके मारे अधीर होकर सेजसे उठे ॥

इस अवसरपर बेनी यदि गुरुदयालको बाहर जानेसे रोकती और मीठी २ बातें कहकर उन्हें खुश करती तो सब बखेड़ा मिट जाता। लेकिन बालिका को इतना साहस नही था और ऐसे समय क्या करना चाहिये यह वह अभी समझ भी नही सकती थी। उसकी बाघिनी ननद उसकी बातें न सुनले इस बात के लिये सावधान रहनेमें वह पक्की होगई थी। सदा इसीपर उसका ध्यान रहता था। लेकिन इधर उसका कैसा सर्व्वनाश होरहाथा यह वह नही जान सकती थी ॥

गुरुदयाल बाहर आया। घरके सबलोग सोगये थे। गांवमें सर्वत्र सूनसान था। लोगोका नागरिक, कलरव, गगनचारी विहंगगणका कलकण्ठ निसृत स्वर तरग सब बन्द था। मानो इस गम्भीर निशामे सृष्टिके सभीजीव अचेत पड़ेथे लेकिन गुरुदयाल इस सुनसान के समय सचेत था। उसके हृदय में आग जलती थी। वह ठहर न सका। शयनागारसे निकलकर कुछ देरतक चुपचाप छतपर टहलता रहा। बहुत कुछ करने परभी अपनी चिन्ता दूर न करसका फिर धीरे २ अपने शयनागारमे घुसा और भीतरसे दरवाजा बन्दकर चिराग जलाया।
चिराग जलाने पर जो बात उसने देखी उससे वह बहुतही अकचकाया। देखता क्याहै उसकी स्त्री फो फों करके नीद लेरही है। जिस बेनीसे स्नेह सत्कारकी कामना करके गुरुदयाल व्याकुल है वह निश्चिन्त होकर पलंगपर नीदले रही है। अबतक जो भाव बेनीकी ओर से गुरुदयालके जीमें होरहा था वह अन्तसीमा को पहुँचगया। मारे कोपके गुरुदयाल अधीर होपड़ा। और सोतीहुई बेनीका झोंटा पकड़कर जोरसे खीचा।

बेनी सोते २ उस समय सपने में देखती थी कि उसको स्वामी के साथ बात करते सुनकर उसकी पिशाचिनी ननँद चम्पा उसको झोंटा पकड़कर मार रही है, किन्तु बालिकासे रोते भी नही बनता।

ऐसे संकटके समय गुरुदयालके झोटा पकड़ने से जो उसकी नीद खुली तो सामनेही ननँदके बदले स्वामीको पाया अब मारे लज्जाके बेनी चुपचाप जमीन देखनेलगी।

बेनीके नीदसे सावधान होनेपर गुरुदयालने कहा—" तू मेरे साथ क्यों ऐसा

माताकी मान मनावनवाली बात, भाईका समझाना बुझाना दोही एक दिनमें मोतीलाल भूलगये।

तो क्या मोतीलालमे मातृभक्ति और भ्रातृस्नेह कुछभी नही है; यह बात हम लोग सहजही मंजूर नही करसकते। तो क्यों ऐसा हुआ यह बात जरूर विचारनेकी है।

संसारमें अक्सर ऐसी घटनाएँ होती है कि हम लोग विवेक और बुद्धि रहते भी उसको काममें नही लाकर किसी आकस्मिक घटना स्रोतमे भासमान हो जाते है। और उससमय हमलोग कर्त्तव्यज्ञान रहते भी उसके अनुयायी काम करनेमे सक्षम नही होते। ऐसी दशामे हम लोगोंको बिलकुल "जड़भरत" होजाना पड़ता है॥

मोतीलालकी भी इसवक्त वही हालत है। वह समझते है कि उनका यह काम अच्छा नही है और क्या करना चाहिये यह भी वह खूब जानते हैं लेकिन जाननेसे होही क्या सकता है। इसमे उनके हाथ कुछ नही है। घटना स्रोतमे भासमान है॥

मोतीलाल बडे कोमल स्वभावके आदमी है। मनमें कुछ भी दृढ़ता नही है, लेकिन उनकी स्त्री धूमावती उनसे बिलकुल उलटे स्वभावकी है। वह जो बात मनमे लाती है उसको जबतक पूरा न करले तबतक निश्चिन्त नही होती॥

धूमावती चाहती है कि उसका पति सदा उसके हाथ मे रहे। स्वामीका उठना, बैठना, चलना, फिरना, सोना, जागना एक भी उसके कहे बिना न होने पावे यही धूमावतीकी चाहना है। धूमावती जितना पानी पिलावे उतना ही स्वामी पीये यही वह चाहती है। और इसी को वह स्त्री पुरुषका चर्म्मोत्कर्ष सिद्धान्त समझती और इसी का अधिकार पानेकी सदा चेष्टा करती है।

मोतीलाल इस वक्त उसके बापके घर आये है। वह चाहती है कि उसको विदा करके गाजीपुर न लेजायँ बल्कि वही रहै। इसीकी वह सब तरहसे तदबीर करती है और मोतीलालकी ऐसी मति भ्रम होनेका मूल कारण यही है।

उस रातका जब सबेराहुआ। उठतेही मोतीलालने धूमावतीसे कहा—"तुम्हे बिदा करानेके लिये माने भेजा है कहो अब क्या कहती हो?"

धूमा०—"मै नही जाऊँगी।"

मोती०—"क्यो?"

धूमा०—"हमारा मन।"

करती है । मै किस ऐबसे तेरे मनके लायक नहींहूं आज साफ साफ कहदे फिर जैसा मेरे मनमें आवेगा वैसा मै करूंगा ।"

बेनी उसका जवाब तो क्या देगी अर्थ भी नही समझसकी । चुपचाप सिर नीचे करके सुनतीरही । इधर गुरुदयाल उसका जवाब पानेके लिये गर्जने लगे ।

जब कुछभी जवाब नहीं मिला तब उनका कोप बहुत बढ़गया और जोरसे बेनीको एक लातमार वह बाहर आये ।

इसबार गुरुदयाल अन्धेरी रातमें सदर दरवाजा खोलकर घरसे बिलकुल बाहर आये । और गांवके उस महल्लेकी ओर चले जिधर कुछ खराब पेशेवालियों का डेराथा ।

गुरुदयाल चलते २ कुछ ठहरगये और खड़े २ रास्ते में ही सोचने लगे, फिर दसक़दम चले और फिर थमे । इसीतरह सोचते विचारते चलते ठहरते ठिठकते सहमते गुरुदयाल एक मकानके पास पहुँचे । और कई मिनट तक वहा चुपचाप रहने पीछे किवाड़की सांकल खटखटाने लगे ।

इस सुनसान रजनीमें सांकल खटखटाने पर जब भीतरसे किसीने कुछ आवाज नदी तब गुरुदयालका भावबदला उलटा पाव घर लौटनेका विचार करनेलगे । इतने में भीतरसे किसीने आकर किवाड़ खोला । गुरुदयाल हाथ मे दीप लिये हुए उज्ज्वल रमणी मूर्त्ति दखनेपर घर न लौटसके ।

किवाड़ खोलनेवाली गुरुदयालको पहचानती थी । बड़े आदरसे उनको भीतर लेगयी जलकी जोरदार धारमें वहतेहुए तिनकेके समान गुरुदयाल उसके पीछे २ घरके भीतर गये ।

इसी दिन से गुरुदयालका चित्त इस खानगी महाल की ओर झुका और उसमें दिनो दिन उसकी रुचि बढ़ती गयी और बेनीका सुख सौभाग्य उसी दिनसे घटना शुरूअ हुआ ॥

इधर किस अपराधसे स्वामीने ऐसा दुःख दिया इसी विचारमें बेनीको उसरात नींद नही आयी सारी निशा छटपट करते बीती । और बिसूर बिसूरकर आँसुओंसे वस्त्र भिगाती हुईही बेनीकी रात कटी ।

ग्यारहवां ।

यहा हम मोतीलाल और धूमावतीकी कुछ बात कहेंगे । वह धूमावतीको विदा कराने आये थे; लेकिन दो तीन दिन रहनेपर उन्होंने कुछ नहीं किया ।

माताकी मान मनावनवाली बात, भाईका समझाना बुझाना दोही एक दिनमें मोतीलाल भूलगये।

तो क्या मोतीलालमे मातृभक्ति और भ्रातृस्नेह कुछभी नही है; यह बात हम लोग सहजही मंजूर नही करसकते। तो क्यों ऐसा हुआ यह बात जरूर विचारनेकी है।

संसारमें अक्सर ऐसी घटनाएँ होती है कि हम लोग विवेक और बुद्धि रहते भी उसको काममें नही लाकर किसी आकस्मिक घटना स्रोतमें भासमान हो जाते है। और उससमय हमलोग कर्त्तव्यज्ञान रहते भी उसके अनुयायी काम करनेमे सक्षम नही होते। ऐसी दशामे हम लोगोको बिलकुल "जड़भरत" होजाना पड़ता है॥

मोतीलालकी भी इसवक्त वही हालत है। वह समझते है कि उनका यह काम अच्छा नही है और क्या करना चाहिये यह भी वह खूब जानते है लेकिन जाननेसे होही क्या सकता है। इसमे उनके हाथ कुछ नही है। घटना स्रोतमे भासमान है॥

मोतीलाल बड़े कोमल स्वभावके आदमी है। मनमें कुछ भी दृढ़ता नही है, लेकिन उनकी स्त्री धूमावती उनसे बिलकुल उलटे स्वभावकी है। वह जो बात मनमे लाती है उसको जबतक पूरा न करले तबतक निश्चिन्त नही होती॥

धूमावती चाहती है कि उसका पति सदा उसके हाथ में रहे। स्वामीका उठना, बैठना, चलना, फिरना, सोना, जागना एक भी उसके कहे बिना न होने पावे यही धूमावतीकी चाहना है। धूमावती जितना पानी पिलावे उतना ही स्वामी पीये यही वह चाहती है। और इसी को वह स्त्री पुरुषका चर्म्मोत्कर्ष सिद्धान्त समझती और इसी का अधिकार पानेकी सदा चेष्टा करती है।

मोतीलाल इस वक्त उसके बापके घर आये है। वह चाहती है कि उसको विदा करके गाजीपुर न लेजायँ बल्कि वहीं रहें। इसीकी वह सब तरहसे तदवीर करती है और मोतीलालकी ऐसी मति भ्रम होनेका मूल कारण यही है।

उस रातका जब सवेराहुआ। उठतेही मोतीलालने धूमावतीसे कहा—"तुम्हे बिदा करानेके लिये माने भेजा है कहो अब क्या कहती हो?"

धूमा०—"मै नही जाऊँगी।"

मोती०—"क्यों?"

धूमा०—"हमारा मन।"

मोती०—"खाली तुम्हारे मनसे काम नहीं होगा हम अगर लेजाना चाहें तो तुमको जाना ही पड़ेगा ।"

धूमा०—"मैं अगर यहां रहनाचाहूं तो तुमको रखनाही पड़ेगा ।"

मोती०—"तू जानतीभी है कि मै तेरा खसमहूँ ।"

धूमा०—"और तुम जानतेहो कि मैं तुम्हारी कौन हूँ ।"

मोती०—"हां मै जानताहूँ इसीसे तो तुम्हें लेजानेका जोर रखताहूँ ।"

धूमा०—"जोरसे जानेपर मै वहां फाँसी लगाकर मर जाऊँगी ।"

यह बात मोतीको अच्छी नही लगी । वह धूमावतीकी खसलत अच्छीतरह जानते है । इसीलिये और कुछ करना उन्होने मुनासिब नही समझा । कुछ देर तक चुपचाप सोचते रहे फिर नरम होकर कहा—"तो गरज कि तुम किसी तरह मेरे साथ जाना नही चाहती ?"

धूमावतीने सुर चढाकर कहा—"नः"

मोतीलालने लम्बी सांस लेकर कहा—"तो तुम रहो मै जाताहूं ।"

धूमा०—"नही, नही ! तुमकोभी यही रहना होगा ।"

मोती०—"क्यों मै क्यो यहां रहूं ?"

धूमा०—"हमारी मरज़ी और हमारा हुक्म ।"

मोती०—"तुम्हारी मरजी और तुम्हारा हुकुम हमारे ऊपर नही चलेगा ।"

धूमा०—"नही चलेगा तो जाव लेकिन जब जावोगे तभी मैं फांसी लगाकर मरजाऊंगी ।"

मोतीलाल चुपचाप रहे । और उसी दिनसे धूमावतीकी बात टहराने का कलेजा नहीं हुआ चुपचाप सुसरालका भात खानेलगे ।"

बारहवां ।

इधर मोतीलालको घर आनेमें जितनी देर हुई उतनाहि माता का चित [illegible] लगा । चिन्ता बढ़ने लगी । आजकल करते दो अठवाड़े बीत गये ले- [illegible] घर नही लौटे । माताके मनमें तरह तरहकी दुर्भावनाएँ होने [illegible] दिन रात आसू बहाते हुए विताने लगी ॥

[illegible] बिहारीलालको सैदपुर जानेके लिये कहनेलगी । बिहारीलाल सैदपुर [illegible] चाहताथा । लेकिन माताकी हालत देखकर सैदपुर जानेपर [illegible] दूसरे दिन सैदपुरके लिये रवानाहुआ ॥

[illegible] पहुँचतेही बिहारीलालपर एक आफत आई । कैसे एकबड़े

आदमी के घरमें जाना चाहिये। किससे किसतरह मिलना चाहिये। न जाने कौन उनके साथ कैसा व्यौहार करेगा। कौन कैसी घृणा की दृष्टि से देखेगा। इन्ही बातोंकी चिन्तामें बिहारीलालके चित्त में उथल पुथल होनेलगा। थोड़ी देरतक ऐसीदशाथी, लेकिन जब बिहारीलालको यह बात यादआई कि भैया और भौजी वहां मौजूद है तो कुछ चिन्ता करनेकी बात नहीं ऐसा समझकर रघुबरदयालके घरमें जानेको साहसी हुआ॥

बिहारीलालके भाग्यसे घरके आगेही सबसे पहले उसे भैया मोतीलालही मिले। मोतीलालने बिहारी लालसे घरका सब हाल सुना माता की दशा जानकर अपनेको धिक्कारने लगे। बिहारीलाल भाई भौजाई और भतीजोका कुशल समाचार पाकर प्रसन्न हुआ। और भाईके साथ ही रघुबर दयालके घरमे प्रवेश किया।

मोतीलाल छोटे भाईको बैठकमे ठहराकर उसके खाने पीनेको प्रबन्ध करनेके लिये भीतर गये। लेकिन बिहारी लालको बैठकेमे जानेका साहस नहीं हुआ। ऐसे सजे सजाये कमरेमें वह जा न सका पासही एक खिड़कीदार छोटीसी कोठरी देखी उसके प्रवेश द्वारपर आग चिलम तम्बाकू और भीतर चौकीपर शीतल पाटी पड़ी हुई देखतेही प्रसन्न मन वहाँ पहुँचा और चिलम उठाकर आपही तम्बाकू भरने लगा। इतनेमें उस कोठरीका मालिक नौरङ्ग आपहुँचा। वह फटे फटे वेषमे एक बेजाने बेहँचाने आदमीको अपनी कोठरीमे देखकर झिझका और पूछा—

"तू कौन है?"

बिहारी—"मेरा नाम बिहारी।"

नौ०—"क्या खोजता है?"

बिहारी—"खोजता कुछ नहीं।"

नौ०—"तो यहाँ आया क्यो?"

बिहारी—"माने भेजा है।"

नौ०—"अरे आदमी है या बिलकुल घोंघा? तुम्हारी माने यहा भेजा है किसके पास भेजा है क्या काम है? कुछ कहेगा या योंही।"

बि०—क्यों हमको अपने भैयाके पास भेजा है इसमें कहना क्याहै?"

नौ०—"तुम्हारा भैया कौन है?"

बि०—"हमारे भैयाका नाम मोतीलाल पाण्डे है।"

नौ०—"तो क्या तुम पाहुन[1]के भाई हो?"

बि०—"हा।"

---

१ पश्चिमोत्तर प्रदेश मे पाहुन दामादको कहते है। यद्यपि पाहुन से हरएक मिहमान मुराद है लेकिन दामाद विशेष अर्थ लिय जाता है।

थोड़ीदेर बाद मोतीलालने बिहारीलालको पुकारकर कहा—"बिहारी ! वहा रहने से कैसे बनेगा ? जिस कामको आयेहो उसकी तो तदबीर करनाचाहिये।"

बिहारीलाल भाईकी बात सुनकर अवाक होरहा । वह भाई भौजाई को लिवाने आया है इतना तो जानताथा लेकिन इसके लिये क्याकरेगा इसीकी चिन्ताने उसके दिलमें घर किया ।

मोतीलाल भाई को अच्छीतरह जानते है इसीसे उन्होने समझाकर कहा—"सुनो अकचकाने की बात नहीं है । हमारे ससुरसे जाकर कहो कि भौजीको बिदा कराने के लिये माने हमको भेजा है वह टेकू और मिहीलालके वास्ते रात दिन रोती है सो कल सबेरे सबको बिदा करदीजिये ।"

थोड़ी देर चुप रहकर बिहारी लालने कहा—"भाई हमसे इतनी बातें तो कहते न बनेंगी ।"

निदान बिहारीलालको साथ लेकर सब बातें आपही कहनेके लिये मोतीलाल ससुरके पास पहुँचे ।

ससुर रघुबर दयालका एक अलग बैठका था । वह वहाँ इस समय शिव संहिता पाठ कर रहे थे । सामने दामादको देखकर बैठनेको कहा । मोतीलाल एक कोनेमें बैठगया । बिहारीलाल प्रणाम करके अलग खड़ा रहा ।

ससुरने दामादसे पूछा "यह कौन ? "

मोती०—"यह हमारा छोटा भाई है । मा टकू और मिहीलाल को देखे बिना व्याकुल है । इसीसे इसको भेजा है आपका हुक्म होतो मै बिदा करा ले जाऊँ।"

रघबर दयाल "हूँ" करके चुप चाप रहे । थोड़ी देर बाद उन्होने कहा—"देखो बाबा हमसे तुम्हारा यह सब पूछना ठीक नही है । मै अब संसारके सब कामकाजसे अलग हूँ इसलिये संसारी कामके लिये अब हमको मत सतावो । घरका सब काम काज हमने गुरु दयाल के हाथ सौंप दिया है वही तुमको इन बातोका जवाब देगा ।"

मोतीलालने अब उनसे बात कहना ठीक न समझा और भाईको साथ लेकर हरुदयाल के पास चले ।

तेरहवाँ ।

मोतीलाल भाई सहित गुरुदयालकी कोठरी में आये गुरुदयालने अपनी धुन छोड़कर बिहारीलालपर नजर डाली और कहा—"अरे । बिहारीलाल कब आये?"

बिहारी०—"आजही शामको आया था ।"

गुरुद०—"अच्छा किया आये । माताजीको भी लाये हो क्या ?"

बिहारी०—"नहीं, माता तो घरहीमे हैं ।"

गु०द०—"क्यों उन्हें क्या दुःख सहने के लिये छोड़ आये। उनको भी लिये आते तो अच्छा था ।"

सीधे सादे बिहारीलाल गुरुदयाल का सम्भाषण सुनकर मनमें प्रसन्न हुए लेकिन मोतीलालको उनकी बातें बुरी लगी । उन्होने कहा—"बिहारी तुम्हारे घर रहने नही आया है । तुम्हारी बहनको बिदा कराने आया है ।"

गुरुदयालने मोतीलाल को समझा लिया और नरम होकर कहा—"मै उस भावसे नही तुम्हारे भलेके लिये कहता था ।"

मो०—"अच्छा जाने दो, आप अपनी बहनके बिदा करनेमें क्या कहते हो सो बोलो ।"

गुरु दयालने गम्भीर होकर कहा—"तुम्हारी स्त्री है तुम उसे बिदा कराके ले जाया चाहते हो इसमे हमें बोलना क्या है ? लेकिन तुम्हारी इस वक्त कोई नौ-करी नही है इसवास्ते कहता था कि तुमको खर्च घटाना चाहिये, नही उसके मारे आफतमें पड़ोगे ॥"

मोती०—" लेकिन माको बड़ा दुःख है वह दोनो नातियोके लिये खाना पीना छोड़ चुकी है उसका दुःख हम लोग कैसे देखैगे । "

गुरु०—" वह स्त्री है स्त्रियोंकी सब बातें सुननेसे काम नही चलता । उनको समझादेनेसे वह समझ जायँगी ।"

मोतीलाल कुछ देर तक चुपरहे । कई मिनट उनके इसीतरह विचारनेमें कटे । फिर एक लम्बी सास छोड़कर बोले—" अच्छा ठीक है । आपकी सलाह अच्छी है । मै कल्ही कलकत्ता जाऊँगा । और जिसतरह होगा बिना कोई नौकरी किये मुँह नही दिखलाऊँगा । "

गुरुदयालने मुसकुराकर कहा—" तुमको कलकत्ता जानेकी जरूरत क्या है । अगर रोजगार करना चाहो तो हम यही बन्दोबस्त करसकते है । आज कल हमारा काम इतना बढ़ा हुआ है कि अकेले मै सब नही करसकता । तुम चाहो तो सबेरे कल्हीसें हमारे साथही जाव और ठेकेदारीका काम सीखो । इसमे कमाई भी अच्छी होगी और तुम जब सीख जावोगे तब मै उसमें तुम्हें एक हिस्सेदार बनादूँगा । "

बात बड़ीही मीठी और लोभ दिलानेवाली थी । धनलाभका लोभ किसको

नहीं वश करसकता। गुरुदयाल पर मोतीलालकी जो कुछ नाराजी हुई थी वह इन बातोंसे सब दूर होगई। उन्होंने समझा कि गुरुदयालसा हितकारी इस वक्त उनका दुनिया में नहीं है। अब बिगडे दिन सुधरनेका समय आया है। अब सब दु.ख मिटजायगा अब गुरुदयालके कहने अनुसारही सब तै होगया।

बिहारीलाल पहले सब नही समझसका। लेकिन भाईकी नौकरी होना मालूम करके पीछे जितना खुशहुआ भावज विदा नहीहोगी सुनकर उतनाही नाराज हुआ। लेकिन हर्ष विषादमय इन दोनों घटनाओंका परस्पर क्या सम्बन्ध है। यह बिहारीलालकी समझमे नही आया।

छोटे भाईको अलग लेजाकर मोतीलालने कहा-"देखो बिहारी! अब हम लोगों के अच्छे आनेका ढग हुआ है। तुमने अपने कानोंसेही सुन लिया कि हमको गुरुदयालके साथ काम करने के लिये जाना पडेगा। सो तुम जाकर यह सब माता को समझादेना और कहना कि इसीकारणसे हम लोगोंका अभीआना नहीहुआ।

बिहारीलालने साधारण स्वभावसे कहा--" तो भैया तुम्हारी नौकरी हुई है तुम रहो। लेकिन भौजीकी तो नौकरी हुई नही है। उसके घर चलनेमें क्या हरज है।"

मोती०-" सुनो बिहारी! इस बखत हम लोगोंका हाल बहुत खराब है खर्च की-तंगी है इसीसे कहताहूँ कि अभी इन सबको यही रहनेदेना अच्छा है।"

बिहारीलाल भाईके जवाबसे सन्तुष्ट होकर कहा "अच्छा कल सबेरे मासे मै जाकर यही सब कहदूंगा।"

दूसरेदिन सबेरेही बिहारीलाल गाजीपुर लौटआया और मोतीलाल गुरुदयाल के साथ ठेकेदारी के काममे लगे॥

चौदहवां।

संसारमें सुख दुःख का मूल समझना बड़ा कठिन है किससे सुख होगा और किससे दुःखका पाला पड़ेगा; बहुधा इसका समझना आदमीके लिये असाध्य होजाता है। हमलोग जिसे सुखका मूल समझकर मारे आनन्दके मत्त हो उठते है वह भी हमलोगोंके अपार दुःखका कारण हो उठता है। और जिसे असीम दुःखका घर समझकर हमलोग विषाद करते है घटना विशेष से वही हमको अनन्त सुखसागर में डुबा देताहै इसीसे कहते है जगत्में दुःख सुखका आकार निरूपण करना बड़ाही कठिन है॥

आज बिहारीलाल-भाईसे शुभ सम्बाद लेकर गाजीपुर में प्रवेश करता है।

उसके मनमें यह दृढ़ विश्वास है कि माता उस खबरको सुनकर खुशहोगी। भाईने कहाहै–" अब हम लोगोंके दिन फिरने का ढंगलगा है । " इसीबातका बिहारीलालको अधिक आनन्द है ॥

बिहारीलाल घर पहुँचा दरवाजेहीपर मा मिली और खुशी से पूछने लगी "बिहारी ! भौजी कितनी दूर है ?"

बिहारी–" उसको बिदा नही किया । "

माता–" काहे ! सब अच्छे तो हैं ? "

बिहारी–" हां सब अच्छे है । इसके वास्ते कुछ चिन्ता नही है । भैया की वहां एक नौकरी होगई है वह गुरुदयालके साथ काम करेंगे इसीसे उन लोगों ने भौजीको इसवक्त नही बिदा किया । "

मा०–" अरे दादा तबतो सब सरबनाश हुआ । तीनोंकुल डूबा । अबजान पड़ता है मोतीको उनसबने घर दमदा बनाके रक्खा है | "

बिहारी–" नही मा ! कैसी बात कहती हो उनकी नौकरी हुई है । इस वास्ते रहे हैं मै तो अपनी आँखसे देख आयाहूँ । वह घरदमदा काहेको रहैंगे ॥ "

मा०–" अच्छा तो मोतीकी नौकरी हुईहै वह न आये वह क्यों नही आयी?"

बिहारी–" भैयाने कहा कि आज कलघरमें खरच बरचकी तंगी है सो बिदा करा लेजानेसे खरच बहुत होगा । "

यह बात सुनतेही माता आग होगयी झझककर कहा ।

" तेरी जैसी अक्कल है तैसा करके आया है । जब तेरे भाईकी नौकरी होगई तब खरच बरचकी तंगी कैसी ? हमको क्या भुलाने आया है ? अच्छा जा । अब तुम सबका भरोसा मैं नही करती मै अब काशीवास करूंगी। अब किसके वास्ते मरना । "

अन्तकी बात कहते कहतेही माताका कोप घट चला । अब गर्जनके बाद जल बरसना शुरुअ हुआ । आँचलसे आंसू पोंछती हुई भीतर गयी । बिहारी-लाल माकी दशा देखकर अवाक होरहा जिस खबरसे माको खुश करनेका भरोसा करके आये थे । वह माताके लिये दुःख का पहाड़ हुआ ॥

माता घरमें जाकर रोनेलगी । बिहारीलालने इस रोनेका कारण कुछ नहीं समझा और इसीके लिये चिन्ता करता रहा ॥

पन्द्रहवाँ ।

उसी दिनसे सदा पाण्डेजीके घरसे रोनेकी आवाज आनेलगी । सबेरे साँझ रात बिरात कभी मालकिनको रोनेसे विश्राम नही था ।

माता बड़े बेटे और बहूके व्यौहारसे वस्तुत' बहुतही दुःखीहुई । माताही किसी तरह संसारका कामकाज चलाती थी, किन्तु जब उनको कामकाज से कुछभी ममता नही रही । वह पागलिनीकी तरह रोरोकर दिन बिताने लगी पहले दिन में एकवक्त चूल्हाभी चढ़ताथा लेकिन अब कई दिनोंवाद भी नसीब नही होता । मालकिन चाहती तो इसका प्रवन्धकर सकती थीं । लेकिन अब उनकी वह इच्छा नही रही । इससंसारमे आदमी सब दुःख सहलेगा लेकिन पेट का दुःख नही सहसकता । इस दुःखकी बराबरीमें रोग,शोक और दूसरीआफतें भी नही टिकसकती । गरीबी अनेक दुःखोंकी जड़ है । गरीब आदमी मानी हो तौ भी कोई उसके मानका गौरव नही समझता (ज्ञानी हो तो उसके ज्ञानका कोई आदर नही करता । मान, सम्भ्रम, ज्ञानबुद्धि सब लक्ष्मीके अनुगत भृत्यहैं । इसीसे गरीबी होनेपर इन सबका लोप होजाता है।इस जगत्में धनका प्राधान्य और गौरव अखण्डनीय है ।

गाजीपुरी पांड़ेजी के प्रतिष्ठित परिवारकी गरीबी दिनोदिन बढ़ने लगी । उनकी बचीबचाई इज्जत भी अब खाकमे मिलनेलगी। अबसंझवत देनेका भी ठिकाना नही रहा । आँगनमे झाड़ूतक नही फिरता । घर में चारोओर कूड़ा कर्कट पड़े रहते है । किसी मगल कार्य्य का अनुष्ठान नही होता । चारोओर से यह परिवार गरीबी और अमगलका ही धाम होउठा । मरघटकी दशा जैसी भयानक होजाती है । इस परिवारकी भी ठीक वही भयंकरदशा होउठी ॥

इधर माताका कोप जितना बढ़तागया पुत्र स्नेहभी उतनाही घटता गया । पहले माता बिहारीलाल को बकझक कर जिसतरह स्नेहसे देखतीथी वह अब उसको नसीब नही होता । बिहारीलाल एक तो गरीबी के दुःखसे दबा जाताथा ऊपरसे माताका स्नेह घटना और दुःखदायी हुआ । अब बिहारीलाल माता की कठोरता न सहकर रोपड़ा । बिहारीलालको माताके बकने झकनेसे इसके पहले रोते किसीने नही देखाथा । भोले बिहारी का रोना देखकर माताका पूर्व्व स्नेह फेर उथल उठा । अब वह सह न सकी । मूर्ख पुत्रपर अपने दुर्व्यौहार की बात विचारकर रोउठी। उसदिन दोनोंका रोना मिलकर बड़ीदेरतक चला । दोनों कुछ देर बाद स्थिर हुए । एकने दूसरे के आँसू पोंछे । आजके इस रोदन में दोनो ने

सुखानुभव किया । दोनोंको विस्मयहुआ । माता बहुत अकचकायी, क्योंकि रोनेके बाद उन्होंने ऐसा सुखभोग कभी नही पायाथा ।

बिहारीलालका नीरस हृदय भी आजके रोने पीछे सरस होआया । उसने प्र- फुल्ल मुखसे कहा–"मा ! "

अहा ! वह 'मा' शब्द क्या ही मधुर था मानो कोई किसी स्वर्गीय वीणा ध्वनिने उस समय जननीके कानमें प्रवेश किया । माताने बेटेकी ठुड्डी धरकर कहा–"काहे बेटा ? "

बिहारी–"अच्छा मा ! बतला क्या करनेसे तुमको सुख होगा ? "

माका मन आनन्दके मारे नाच उठा । उनको बिहारीके मुँहसे ऐसी बात सुनना नसीब होगी इसका जिन्दगीमे वह भरोसा नही करती थी । माता उस वक्त तो बेटेका कुछ जवाब न देसकी लेकिन मनमें कहा था कि–"बेटा हमारे सुखमें कमी ही किस बात की है ? "

बिहारीलालने फिर कहा–"मा ! तुम कैसे सुखी होगी बोलती काहे नही ?

अबकी माकी आँखोंमें जल दीखपड़ा दो तीन बूँद पोछकर कहने लगी– "बेटा हमारी छोटी पतोहू को लादो उसीके आने पर मुझे सुख होगा ।"

बिहारीलाल कुछ देर तक चुपचाप वहीं बैठा रहा फिर न जाने क्या सोच कर भीतर गया । और थोड़ी देरबाद कपड़े लेकर आया और माताको प्रणाम किया । माताने अकचकाकर पूछा–"क्यों बेटा कहाँ जावोगे ? "

बिहारीलालने खुशी मनसे कहा–"मै तुम्हारी छोटी बहू को लाने जाताहूँ ।"

माता अवाक होरही । मनमें कहने लगी " य ; क्या वही बिहारीलाल है या मै सपना देख रही हूं । "

इति प्रथम भाग समाप्त ।

दूसरा भाग ।

पहला अध्याय ।

जिस गांवमें बिहारीलालकी शादी हुई थी वह गाजीपुरसे तीन पहरका रास्ता था । गाजीपुरसे वहांकी एक पक्की सड़क चली गयी है । यह सड़क कई बड़े २ गांवोंसे होकर कलकत्तेकी बड़ी सड़क में जामिली है । जिस समयकी बात हम कहते है उस समय यहां रेल जारी नही हुई थी । जैसे आज कल दिलदार नगर से ताड़ीघाट ओरको रेल आकर सारादिन सीटी सुनाया करती है । आजमगढ़की ब्रेंच लाइन इसपार अफीमकी कोठीके पास जैसे घरघराकर चलती है वैसे उन दिनों नही चलती थी । यहासे सिकरमपर सवार होकर आजमगढ़ मऊ वगैरह बड़े शहरोंको जाना पड़ता है । मिस्सर बाजारके पासही ऊंटगाडियों और एक्कोंका अड्डा है । वहा यात्रीरूपमे पहुचतेही एक्केवान "आवो साहजी इसपर आवो"—"एक्का तैयार है आजाव"--"एक्का खाली जाता है जिसको चलनाहो चलो"--"एक्का खुलता है, एक आदमीकी जगह है जिसको चलनाहो आजाव ।" इत्यादि बाते एक्केवानोसे सुननेमे आती है । बिहारीलाल ज्योंही वहां पहुँचे कि इसी तरह चिल्लाने वाले एक्केवानोकी चोंथमें पड़गये । लेकिन जब उन्होने सुना कि बिहारीलालके पास एक पैसाभी नही है तब सब उनका पिण्ड छोड़ा और सड़क से होकर बिहारीलाल पाव पैदल चलने लगे ।

सावनका महीना है। सड़कके दोनो ओर खेतो में हरियाली भरी है । जिधर देखो उधरही मानो खेतोंमें सबज मखमलका बिछौना पड़ा है । और दूर २ के पेड़ मानो बिछौने की हद बताने को खड़े है । जगत्में रत्नप्रसूा भारत भूमिके सिवाय ऐसा आनन्दकर और प्रीतिप्रद सुन्दर दृश्य और कही है या नही ? इस दृश्यसे केवल हमारी आखेंहीं नही जुड़ाती वरन उसके साथही हृदयकी आशा और जीवनी शक्ति भी बढ़ती है ।

भारतमें अब और हैहीक्या? अब वह पूर्व्वसम्पद, गौरव, सन्मान, यशप्रभृति कुछभी नहीरहा । अब केवल यही "सुजला, सुफला, मलयज शीतला" भूमि भर बाकी है । और इसी "सुजला, सुफला, मलयज शीतला" भूमि होनेके कारणही भारतमाता बारम्बार निपीड़िता होकर आज भिखारिनी हुई है । क्यों मा ! तू मरुभूमि क्यों नही हुई ।

बिहारीलाल इसीतरह चलते चलते एक अड्डेपर पहुँचा और वहा दमलगाकर आगे बढ़ा। फिर दूसरे पर पहुंचा और आगे बढ़ा इसीतरह सन्ध्या होते२ससुराल का गाव दूरसे दीखने लगा। अब सड़क छोड़कर थोड़ीदूर पगडण्डी से जानापडा पगडण्डीसे चलते चलते बिहारीलाल बाजारमें पहुँचा। हाट आदमियोंसे खचा-खच भरीथी। खरीद बिक्रीवालों के हँव हांव और कोलाहलके मारे कान नही दिया जाताथा। इसभीडमें से होकर बिहारीलाल एक दूकानपर पहुँचे। दूकान की मालकिन एक चालीस पैतालीस बरसकी स्त्रीथी। भीडकेमारे दूकानसे थोडी दूरपर बिहारीलाल खड़े रहे॥

दूकानवाली अपने लेन देन मे थी उसने पहले बिहारीलालको नही देखा। लेकिन थोड़ीदेर बाद जब उसकी नजर बिहारीलालपर पड़ी तब उसने चट पहचानलिया और कहा—" अरे भैया कब आये अच्छेतो हो ? "

बिहा०—" हा अच्छाहू। अभी आया। "

दूकानवाली—" आवो, आवो बैठो। ससुराल गयेथे कि अभी बाहरही बाहर आते हो। "

बिहारी— "नही जहरी अभी वहा नहीं गया। "

जहरी यहा दूकान करतीहै लेकिन रहनेवाली वह गाजीपुरकी है। यहा दूकान करते उसको पाच छः बरस हुए होंगे। बारह वर्ष का एक भतीजा जहरीके साथ रहताथा। उसका नाम था नफरचन्द। नफरचन्दको तम्बाकू भरनेके लिये कहकर आप गाव घर टोला महल्ला का कुशल मंगल पूछने लगी। इसीतरह दोनोंमे बाते हो रहीथी इतनेमे बिहारीलालके ससुरका एक नौकर जहरीकी दूकानपर आया। उसने पहले बिहारीलालको नही पहचाना। पहचाननेका ढङ्ग भी नही था।

बिहारीलालके कपडे मैले थे। पाँव पर बिना जूतेके दिनभर पक्की सड़कपर चलनेसे सुरखी छाई थी। तरवामे कङ्कड़ गड़नेसे कई जगह क्षत विक्षत हो गया था। अब बिहारीलालको इस हालतमें देखकर अपने मालिक का दामाद कैसे समझे ? इसीसे जहरीने उसे पुकारकर कहा—"अरे कहो हो। इनको पहचानते हो?"

ससुरका नौकर बिहारीलालकी ओर देखने लगा। सिरसे पाँवतक निहार कर कहा—"हमारे पाहुनसे जान पड़ते है।"

जह०—"शाबास पहचान तो लिया।"

नौकर—"पाहुन कब आये ? यहाँ कैसे बैठे हो ? "

जहरी—"अरे अभी तो चले आते है। तुम्हारे घरतक तो अभी गये नहीं है।"

नौकरने बिहारीलालसे कहा—"आवो पाहुन आवो। मालकिन आपके वास्ते बहुत रोया करती हैं। आज आपको देखकर वह बहुत खुश होंगी। अब देर न कीजिये आइये।"

इतनेमें नफरचन्द चिलम भरकर लाया। भरी भरायी चिलम खींचे बिना अगर बिहारीलाल चले जायँगे तो अपमानका ठिकाना न रहेगा। उससे सहा न गया। नफरचन्दने कहा—"काहे हो? तुम्हारे ही पाहुने है हमारे कोई नही हैं कि, यहाँ बैठनेसे जात जायगी। जो चलो चलो कर रहे हो।

अरे अभी आये हैं तम्बाकू पीयेंगे। जलपान करेंगे। ठंढे होंगे तब जी चाहेगा जायँगे चाहे नही जायँगे इसके वास्ते तुम इतना पीछे क्यों लग पड़े?"

"अरे यह लौंडा तो बड़ा पाजी है। मैं मालिक और मालकिनको अभी जाकर खबर देताहूँ।" इतना कहकर वह वहाँसे दौड़ा। इतनेमें बिहारीलालने हाथ पाँव मुँह धोलिये ठण्ढे होकर बैठे। जहरीने बिहारीलालके दमकी फिकर करदी। कई चिलम तम्बाकू भस्म हो चुकनेपर बिहारीलालके ससुर खुद बिश्वेश्वर पाँडे जहरीकी दूकानपर आपहुँचे। साथमें वह पहले का नौकर और आठदश और आदमी थे दूकानमें जो थे सब सन्मानके लिये खड़े हो गये। बिहारीलालने ससुरको प्रणाम किया। ससुरने आदरसे आलिङ्गन करके आशीर्वाद किया। और कुशलमङ्गल पूछते हुए दामादको घर लेगये। जाते समय भी बहुतसे आदमी साथ हो गये थे। सबके मुँहपर आनन्द छायाथा। जैसे किसी आत्मीय से बहुत दिनों पीछे मिलनेपर आनन्द होताहै वैसाही सबको होरहाथा। इतने लोगों में आनन्द नहीथा तो केवल बिहारीलालको नहीथा। उसीका मुँह इस आनन्दमण्डली में विषन्न था। असामी जैसे पुलीसवालों से घिरकर जेल जाता है बिहारीलाल ने भी उसीतरह अपने ससुरके घरमें प्रवेश किया।

दूसरा अध्याय।

बिहारीलाल के आनेसे गांवमें आज बड़ी खलबली मच गयी। खासकर जवान मर्द और युवास्त्रियों में बड़ी ताकझांक बडी झोंकझमक थी। झुण्डकी झुण्ड युवतियां खिड़की से होकर अन्तःपुर में पहुँची। वर देखनेकी लालसा से जवान मर्दोंका दरवानेपर ठट्ट लगगया। क्यों इतने आदमी देखने आये इसका कारण न समझकर बिहारीलाल अवाक होगया। वह किसीको बातचीत करके खुश न करसका। किसी बड़े आदमी से बातचीत करनेका उसको अभ्यास

नहीं था । जहा कहीं ऐसा मौका आता वहीं उसके प्राणपर बीतती थी । मर्द लोग तो इस बातसे नाराज होकर विहारीलालको लजकोंकर, अहंकारी औ बज्रमूर्ख आदि कहतेहुए अपने २ घर गये । विहारीलालने उनसे तो छुट्टी पाय लेकिन रमणीगण से पिण्ड छुड़ाना मोहालहुआ । पुकारपर पुकार आनेलगी विहारीलाल निबाह न देखकर पायखाने के बहाने एकही साससे भागा औ बाजारमें जहरीकी दूकानपर पहुँचा । और उससे अपना सबहाल कहा, सुसरा आनेका कारण भी बतलाया ।

नफरचन्द खड़ा खड़ा सब सुनताथा विहारीलालकी बात पूरी होनेपर कहा "अय भैया ! तुम हमको साथ लेचलो फिर सबका जवाब देलेंगे । तुमको ए बातभी नहीं बोलना होगा ।"

विहारीलाल ने मानों हाथमे चाँदपाया । जहरीने भी मंजूरी देदी । नफरच ने अपना मैला कपड़ा उतारकर धोयाहुआ पहना और आनन्दित होकर विह रीलालके साथ रवानाहुआ ।

इसबार ससुर के घर पहुँचतेही विहारीलाल को भीतर जाना पड़ा । पीछे नफरचन्द भी गया । अन्दर जातेही विहारीलाल ने रमणीगण का विब हास्य सुना ।

सुनतेही विहारीका बदन सूखगया । जिस घरमें सुर बाधकर चलेथे उस से रमणीगणका हँसना सुनकर उलटे पाव दूसरे घरकी ओर चले । लेकि उनको रोकागया । एक दासीने आकर उसी घरमे चलनेको कहा ।

निदान विहारीलाल बलिदानके बकरेकी तरह कापते २ उसी घरमें गये उनके गृहप्रवेश करतेही रमणीगणके बंकिमकटाक्ष की विजली चमकी उस र दामिनीतरंग से सबने एक दूसरेका मनोगतभाव समझ लिया । कोई उ विजलीका वेग न सहकर पासकी पुरखिनियों पर गिरकर दाँत बाने लगी को सँभलकर घुघट सँभालने लगी । कोई कुछ कोई कुछ बकनेलगी । इसीतरह फु फुसाहट का बाजार गर्महुआ ।

विहारीलाल ने भीतर जाकर देखा घरमें खचाखच लुगाइया भरी है । बी में तरह तरह की मिठाई भरी थाली और जलपानकी सामग्री है ।

विहारी बीचमें जाकर जलपान के लिये जो आसन पड़ाथा वही बैठ गये उनकाभाव देखकर स्त्रियों में शान्ति छागयी । उनका प्रसन्न वचन मलीनहुआ सबकी सब चुप होरहीं ।

लेकिन् जहां इतनी सुन्दरियो का समागम है वहां कबतक सन्नाटा रहसकत

है । एक सुन्दरी ने सन्नाटा दूर करनेके लिये कहा—"काहे पाहुन इतने दिनपर कहीं रास्ता चलते २ भूल पड़े क्या ?"

बिहारी तो चुपचाप रहे लेकिन् द्वारपर नफरचन्द खड़ाथा । रमणी के मुँह से बात गिरतेही वह भी बीचमें आपहुँचा और हाथ जोड़कर बोला—"नहीं माजी ! रास्ता भूल जाते तब कहां आसकते थे । रास्ता देखा था तभी तो पहुँच पाये ।"

अब सबकी आंखें नफरचन्दपर पड़ी । सवाल करने वालीने कहा—"अरे यह कौन है रे ?"

"मै तुम्हारे पाहुनका नौकरहूँ माजी ! " ऐसा कहकर नफरचन्द दरवाजेके पास बैठगया । इतने में एक दासीने थोड़ीसी मिठाई और पानी नफरचन्दके भी आगे लाकर रख दिया बिहारीका इतनी स्त्रियो के आगे जलपानको हाथ नहीं उठता था बडे लज्जित थे ऊपर से उनकी हँसी मसखरी चलती थी । नफरचन्द ने अपनी मिठाई खतम करके पानी का पात्रभी खाली किया और सिर उठाकर बोला—" जब पाहुनकी बचीहुई मिठाई हम सब खाजायँ तब हँसी करना । अभी मसखरी क्या करती हो ?"

नफरचन्द छोटी अवस्थाका था इसीकारण स्त्रियां उसकी बातसे नाराज नहीं हुई उसको लेकर हँसी उड़ाने लगी । एकने बिहारीलालके जलपान पीछे बची हुई सब मिठाईकी थाली नफरके आगे करदी और सबकी सब हँसने लगी नफरचन्दने थोड़ेही देरमें उसे भी खाली कर दिया । स्त्रियोंका हँसना और बढ़ और बिहारीलालके साथ नफरचन्दने भी वहा जगह पाई ॥

इतने में एक सुन्दरीने कहा—"काहे पाहुन हम लोगोंकी याद है ?"

बिहारीतो चुपचाप रहे लेकिन् नफरचन्दने कहा । " काहे याद नहीं होती तो आते कैसे ? अब यहा आने पर भी याद होनेका सबूत नहीं पहुँचा ?"

पहलीने कहा—" अरे छौडा चुपरहरे । तोसे हमलोग कुछनहीं पूँछती "

नफर—" काहे मा ! तो क्या मै खाली परसादही खाने आयाहूँ जो चुपचाप बैठा रहूँ ? "

स्त्री०—" काहे तेरे मालिक क्या बच्चे है जो तू उनकी ओर से जवाब देताहै?"

नफर—" नहीं नहीं बच्चे नहीं हमारे मालिक है. हम उनके नौकर है उन्हीं का काम करनेके वास्ते । जब हमसे जवाब नहीं देते बनेगा तभी वह बोलेंगे ।"

स्त्री०—" अरे वाहरे रसिया ! काहे पाहुन ऐसा रसिया नौकर कहा मिला ?

नफर—(हाथजोड़कर)—मानी ! यह बात भी क्या पूछनेकी है । राजालो हाथी घोड़ा कहां पाते हैं मालिकलोग अच्छा नौकर कहां पाते हैं ॥

नफरचन्दको धड़ाधड़ बोलते देखकर बिहारीलालका भी बोलनेको मन चाहा लेकिन बोलें किससे ? उसी नफरसे ही कहा " अरे नफरा ! एक चिलम तमाखू तो भरला । "

नफरचन्द चट उठा और तम्बाकू भरनेगया । इतने में मुँहपर शोककी छाप लगाये एक विषादमयीमूर्ति द्वारपर आखड़ी हुई । भीतरका रंग देखकर दो तीन सेकण्ड भी वह बाहर न खड़ी हुई कि वहींसे चलदी । इसतरह एक स्त्रीका आना और बिना कुछ कहे चलाजाना देख बिहारीलाल अकचकाये । और सब स्त्रियोंकी ओर देखने लगे ।

पाठक हमारे इस उपन्यासके साथ इस स्त्रीका सम्बन्ध है इसकारण इसका कुछ यही पता देना चाहिये । यह स्त्री सैदपुरवाले रघुवरदयालके बड़े लड़के शिवदयालकी विधवा है नातेमें विश्वेश्वर महाराजके भाईकी लड़की होती है । नाम इसका पाठकोंको तारा याद होगा ॥

उसके चले जाने पर एक सुन्दरीने लम्बी साँस लेकर कहा—"क्या करें बेवा होजानेसे वह किसी हँसी खुशीके काममें नहीं आती । हम लोग तुम्हारे साथ हँसी ठट्टा कररही हैं इसीसे वह यहा नहीं आयी ।

कुछ देर तक वहां फिर सन्नाटा रहा । थोड़े समय बाद वही पहली प्रश्नकारिणीने कहा—" काहे बबुआ ! तुमको बुलानेके वास्ते तो कई आदमी गये लेकिन् अब तक नहीं आये थे । इसबार आपने आपही ऐसी दयाकी कि, हम लोगोंको आमिले ? "

बिहारी०—" अबकी हमको माने भेजा है ।"

स्त्री०—" तो आप अपने मनसे नहीं आये माके कहनेसे आये है ? "

नफरचन्द तम्बाकू भरने बाद पासही आबैठा था उसने मालिकको हारनेका ढंग देखकर कहा—" नहीं, नही ! वह बात नही है । मालकिनको बिदा करानके वास्ते माताजीने भेजा है तब आये हैं । जबतक उनका हुकुम न हो तब तक बिदा करानेको कैसे आ सकते हैं ?"

स्त्री—" अरे यह छोकड़वा तो बडा चालाक है रे ! त खाली गरू चराता है कि और कुछ करता है ? "

नफर—" हां गरूभी चराताहूं और कदमके नीचे खड़ा होकर बंशीभी बजाता हूं । "

इसबार स्त्रीसमाजमें हँसीका ठहाका पड़ा एकने हँसते २ कहा—" अच्छा कुछ गा तो देखें कैसा वंशी बजाता है ? "

नफर—(खाँस खँखारकर " अच्छा क्या गाऊँ बोलो । "

सुन्दरी—" वंशीका गाना गा । "

नफरचन्द गाने लगाः—

कदमकी छहियां छहियां ।
ए बुलावे वंशीवाला कदमकी छहियां छहिया ।
बँशिया बजावे नयन मटकावे कदमकी छहिया छहियां ।
धीर नहि आवे हिया हहरावे मन ललचावे छहियां ।
कदमकी छहियां छहिया ।
चल सखी देखूं, गोपालगण लेखूं
वंशी बजावे कदमकी छहियां । "

गाना सुनकर सुन्दरियाँ सन्तुष्ट हुई । नफरचन्द थोड़ी अवस्थाका था तौ भी उसका गाना सबको मीठा लगा । इस कारण सुन्दरीमहलमें उसकी बड़ी बड़ाई हुई । सब नफरचन्दको सराहने लगी ।

तीसरा अध्याय ।

रातको जब दश बजगये । बिहारीलाल भोजनकरके शयनागारमें गये । लेकिन् उनकी स्त्री का अभी वहाँ आना नही हुआ है । जब बिहारीलाल स्त्रीसमाजमें बैठे थे तब नफरचन्दकी मददसे उनका बहुत संकट दूर होगया था । इस समय बिहारीलालके मनमें यह डर हुआ कि, वैसी पढ़ी लिखी पत्नीके साथ उसकी रात कैसे कटेगी । पासमे मददको नफरचन्द भी नही है । अगर वह कुछ पूछेगी तो क्या जवाब देंगे । और ठीक जवाब न देनेपर लुगाईके साथ कैसी होगी— इन्ही बातोंकी चिन्ता होने लगी ।

इतनेमे बिहारीलालकी स्त्री उस घरमें आई स्त्रीके आतेही स्वामीका जी काँप उठा । और चुपचाप नींदके मिसने एक ओर पड़ा रहा । स्त्रीभी एक ओर आकर पड़गयी । थोड़ी देरतक दोनों चुपचाप रहे ।

लेकिन् यह चुपचाप बिहारीलालकी स्त्री सुशीलासे न सहा गया । कुछ देर बाद पूछा—"घरमें सब लोग अच्छे है ? "

बिहारीलाल उसका कुछ जवाब न देसके । एक बार मनमें विचारा कि"हाँ" कहदेनेसे ही इसका जवाब हो जायगा, लेकिन फिर उसके बाद और सवाल

हुआ और उसका जवाब ठीक हमसे देते नहीं बना तो सब सण्ड भण्ड हो जायगा। इससे चुप रहना ही ठीक है।

बिहारीलाल चुप रहा। सुशीलाने और कुछ नहीं पूछा और धीरेसे उठकर पाँव दाबने लगी। लेकिन पाँव पर हाथ पहुँचतेहीं बिहारीलालने दुःखी होकर कहा—"ओः बड़ा दरद है?"

सुशीला सहमगयी और हाथ हटाकर धीरेसे पूछा—"तकलीफ़ कैसी हुई?"

बिहारीलालके मुँहसे उतनी बात निकल पड़ीथी इसका भी जवाब अब देना ही चाहिये। उसने कहा—"रास्ता चलते २ इतने कङ्कड़गड़े हैं कि, पाँव सीधा नहीं पड़ता। तरवामें बड़ी पीडा है।"

सुशीला बिना कुछ और पूछे हुए उस घरसे बाहर हुई और एक कटोरी में तेल लेकर आयी। उसे चिराग पर गरम करके धीरे तरवामें मसलने लगी।

बिहारीलालकी पीड़ा इस गरम तेलके मलनेसे बहुत घटी। सुशीलाने तेल मलते मलते फिर पूछा—"घरके सब लोग अच्छे तो हैं?"

बिहारी—"हाँ।"

सुशीला—"क्या जेठानीजी नाराज़ होकर नैहर चली गयी हैं?"

बिहारी- "हाँ।"

सुशीला—"तुमको क्या बुलानेके लिये जाना हुआ था?"

बिहारी—"हाँ।"

सुशीला—"फिर उनको बिदा काहे नहीं किया?"

तीनबार तो खाली 'हाँ' कहके बिहारीलाल पेश पागयेथे। अबकी केवल हाँ और ना से काम नहीं चलेगा। कुछ थोड़ीसी चिन्ता करके बिहारीलालने कहा—"भैयाकी वहाँ नौकरी लग गयी है इसीसे"

सुशीला—"तो क्या माजीने सचमुच हमको बुलाया है?"

बिहारी—"हाँ"

सुशी०—"इतने बाद उन्होंने हमको याद किया है यह हमको बड़ा दुःख है मेरे मनमें उनकी सेवा करनेकी बहुत दिनोंसे श्रद्धा थी लेकिन मैं समझती थी कि, हमसे कुछ ऐसा कसूर हुआ है जिससे वह हमको याद नहीं करतीं लेकिन किसी तरह हमें वह कसूर मालूम नहीं होता था। न जाने इतने दिनतक उन्होंने हमको क्यों नहीं बुलाया?"

बिहा०—"नहीं तुम्हारा गहना जो बन्धन रक्खा था उसको छुड़ा नहीं सके इसी लाजसे वह नहीं बुलाती थीं।"

सुशी०—" माजी! क्या हमको इतनी नीच समझती हैं? हमारे बाबाने सब गहना फिर गढ़वादिया है उस गहना की क्या चिन्ता है?"

विहा०—" अबकी जाते समय क्या यह सबलेती चलोगी?"

सुशी०—" काहे नही लेजाऊँगी। वह गहना क्या किसी दूसरे का है? यह भी तो तुम्हाराही है जबचाहो फिर तुमलोग उसे लेलो।"

विहारीलाल स्त्री की बातसे कुछ विस्मित हुए। न जाने क्या कुछ देरतक सोचते रहे। फिर चिन्ता से दूरकरनेवाले तम्बाकू की चाह पूरी करनेके लिये उठने लगे। लेकिन् स्त्री उनकी पद सेवा करती थी। उठने का कारण पूँछकर उन्हें उठने नही दिया। और आपझट तम्बाकू भर लाई। बिहारी यह देखकर अवाक् हुआ। कभी वह स्त्री से ऐसे यत्नका भागी नहीहुआ था॥

चौथा अध्याय।

पूर्वकी तरफ आस्मान साफ होचुका है पौफटनेकी बेरा है लेकिन् सूर्यके ऊगनेमें अभी बहुत देर है। दो एक चिड़ियोंका चहचहा कानों तक पहुँचता है। लेकिन् अभीतक वह घोंसला छोड़कर बाहर नही आये हैं। धीरे धीरे प्रभात-समीर चल रहा है। यह समीर बड़ा धीर, बड़ा मधुर और वहाही ।गध है। स्पर्शमात्रसे सारा शरीर मानों अमियरससे नहा जाता है। प्रकृतिके. कृति इस समय बड़ी मधुर बड़ी कोमल है। वह मधुराई वह कोमलता हृदयसेही अनुभव कीजासकती है शब्दोंसे उसका बयान नही होसकता।

उसी समय घरके मालिक विश्वेश्वर पांडे। प्रातःस्मरणीय देवे देवियोंके नाम लेते हुए उठे। सेजसे उठतेही उनका पहला काम देवताओंके लिये फूल तोड़ना था। घरमे अनेक दास दासियोके रहतेभी वह यह काम अपने हाथसे करते थे। घरके पासही एक फुलवाड़ी थी उसमें देवताओंकी पूजा योग्य नाना-प्रकारके फूलोके पौधे थे। बहुतसे सभ्य बाबुओंकी तरह इसमें विदेशी गन्ध-विहीन फूल पत्तोंकी सजावटके लिये फ्रोटन नही भरेथे।

विश्वेश्वर महाराज उसी फुलवाड़ी में कुछ मन्त्र पढ़तेहुए फूल तोड़ने लगे। प्रभात कालका वह समीर उनकी सेवा करनेलगा। सत्संग का बड़ागुण होता है। फुलवाड़ी की यह हवा केवल ठण्ढीही नही है, किन्तु नानाप्रकार सुगन्धित फूलोंके संसर्ग से वह इससमय अति मनोरम गन्धविशिष्टभी होगयी है। अत-एव इससमय का वह फूल तोड़ना कैसा आनन्ददायी और स्वास्थ्यकर है यह विश्वेश्वर महाराज अच्छीतरह जानते थे। और उधर देवसेवा भी उनकी भक्ति

भी खूबथीं । फिर भला वह ऐसा काम किसी नौकर चाकर को कब देने वाले थे ।

बाँसकी डोलची में जब औरतरह के फूल तोड़चुके तब ऊपरसे गुलाब, जुही, बेला आदि फूलोंको तोड़कर डोलची भरली । फुलवाड़ी से लौटकर यथा स्थानपर उन्होने डोलची रक्खी । और सांसारिक कामोका बन्दोवस्त करके बाहर आबैठे, धीरे धीरे औरभी बहुतसे लोग वहां आपहुँचे ।

विश्वेश्वर महाराज के दरवाजेपर यह जमाव कुछ गप्प करनेवालों और दम बाजोका नही है । इसतरह उनके दरवाजेपर लोगोंका सदा जमावहुआ करता था । वह लोग सदा हलके पतरे दीवानी फौजदारी मामिलों को आपसही में निबटाया करते थे । इसके सिवाय समाजशासन का भारभी उनपर था, गाँवके लोग उनका बड़ा दाब और डर मानते थे इसका कारण केवल उनका असीमज्ञान अमानुषिक देव भक्ति और अतुलनीय न्यायपरायणता थी । केवल ऐश्वर्य्य से ऐसी मानमर्य्यादा किसी को नसीब नही होती. उन्होने जो थोड़े से आदमियों की पञ्चायत बनारक्खी थी उस पञ्चायत सभाका कोई अमान्य नही करताथा । क्योंकि सबकी उनपर श्रद्धा और भक्तिथी । इसीकारण लोग व्यर्थ कचहरीमें जाकर अपना धन स्वाहा नही करते थे । और वादी प्रतिवादी सब इस पञ्चायतके विचारसे सन्तुष्ट रहते थे । और जिन अपराधों के लिये देशमें सरकारने विचारालय नहीं बनाया था उन सब सामाजिक अपराधों का विचार भी उसी सभामे होताथा । कोई किसीतरह सामाजिक नियम के बाहर काम करता था तो विश्वेश्वर महाराजकी पञ्चायत उसका नाई, धोबी आदि बन्ध करके शासन करती थी । और फौजदारी मुकद्दमों मे जुर्म्माना भी करती थी । इसतरह जो रुपया जमा होताथा वह गांवके अन्धे लँगड़े और अनाथ भूखों के पालनमें लगाया जाताथा । उनको सबलोग विश्वेश्वर महाराज और सभाके विश्वेश्वरमहाराजकी पञ्चायत या महाराजकी कचहरी कहा करते थे । सबलोगों की उनपर इतनी भक्तिथी कि, वह अकेले जो कुछ विचार करते वहभी सबके मंजूर होता लेकिन एकसे पाच पञ्चका मिलकर किया हुआ काम अच्छा होत है यही समझकर उन्होंने पञ्चायत बना रक्खीथी और बिना पाच जनकी राय लिये किसी बारेमें वह राय नही देते थे ।

दश बजेतक वह पञ्चायत सभामें बैठकर सब कामोंका निबटेरा किया फिर स्नान करके पूजापर बैठे । पूजा समाप्त करते २ एक बज गया । फिर एम

बजे बाहर बैठकमें आये। देखा दरवाजेपर तीन चार मिहमान आये है बड़े आदर से उनकी सेवा की फिर भीतर जाकर आपने आहार किया। उनका आहार होते २ तीन बजगये। उनका हररोज इसीतरह आहार होता था। क्योंकि अतिथि आगमनका समय बीते बिना वह भोजन नही करते थे।

आहारके बाद एक घंटा विश्राम करके चार बजे फिर बाहर आये। अबकी बाहर आतेही श्रीमद्भागवतका पाठ करने लगे। बहुतसे श्रोतागणभी पहुँचे। उससमय सदा उनके भागवतपाठकाभी नियम था। हरएक श्लोकको पढ़कर उसकी व्याख्या करके वह सबको समझाते थे। कोई विदेशी पण्डित आता तो उसके साथ धर्म और न्याय संगत तर्क वितर्क भी चलता था कभी २ उचित भेट देकर श्लोकोंकी व्याख्या सुननेके लिये काशी आदि स्थानोंसे भी पण्डित बुलाया करते थे।

आज किसी पण्डित के न रहने से उन्हें स्वयम् श्लोकोंकी व्याख्या करके सब को सुनाना पड़ा और यही करते सन्ध्या होआयी। फिर सन्ध्या आह्निक के लिये देवगृह मे इष्टनाम जपनेके लिये गये। यह सब काम पूरा करके अन्तमें नारायणका प्रसाद लेकर अन्तःपुरमे गये। मालकिन जलपानादिका बन्दोबस्त करके स्वामीकी इन्तिजारीमें बैठीथी। विश्वेश्वर महाराज जलपान को बैठे और महाराजिन धीरे २ पंखा झलते २ कहने लगीः—“ सुशीलाको बिदा करानेके वास्ते बबुआ आये है। ”

वि० म०—“ अच्छी बात है मैं कलही पंडित बुलाकर दिन धरा दूंगा। ”

बात सुनकर मालकिनकी आंखें डबडबा आयी दो तीन बूंद पोंछकर कहा—“ बेटी सासरे जाये और अपना घर सँभाले यह तो अच्छी बात है लेकिन दामाद वैसे नहीं हैं और घरमें भी उनके रुपये पैसेकी बड़ी तंगी है। मैं बेटी बिदा करके कैसे रहूंगी ? ”

वि० म०—“ बेटी बिदा करके नही रहाजाय तो तुम जाकर दामादके यहांही रहो मंजूर है लेकिन तुम्हारी इस मायाके वास्ते मै अपनी लड़कीको परलोक नही बिगाड़ सकता। पतिसेवाके सिवाय स्त्रीका और कोई धर्म्म नही है।”

मालकिनने और दो चार बूँद आँसू गिराये कई बार लम्बी साँसें ली लेकिन उस आँसू और लम्बी साँसका कुछ मूल नही हुआ। बिसेसर महाराज चटपट जलपान कर एक पञ्चाङ्ग निकाल मुहूर्त्त बिचारने बैठे।

अब मालकिनसे नही सहा गया । ऊँचे स्वरसे रोउठीं । महाराज उन्हें दोचार बातोंसे समझाकर पत्र लिये हुए बाहर आये ।

बाहर आतेही उन्होने तारा और अपनी कन्या को देखा । सुशीलाको सम्बोधन करके कहने लगे "देखो बेटी ! तुम्हें बिदा करानेके वास्ते आये हैं बुधवारको मैंने बिदा करनेका दिन ठीक किया है उसी दिन तुमको ससुराल जाना होगा सुनो बेटी ! पति मूर्ख हो, कुरूप हो, दरिद्रीहो, अन्धा हो, कोढ़ी हो, कुछ भी हो पतिसेवाके सिवाय स्त्रीकी और कोई गति नहीहै स्त्रीके लिये पतिही साक्षात् देवता है । बाबा तुलसीदासने कहा है:–

चौपाई–"वृद्ध रोगवश जड़ धन हीना । अंध बधिर क्रोधी अति दीना ॥
ऐसे पतिकर किय अपमाना । नारि पाव यमपुर दुखनाना "॥

सो हम पिता होकर तुम्हें पतिसेवासे अलग कभी नही कर सकते । मेरा यही कहना है कि, तुम जाकर सबतरहसे अपने पति और गुरुजनोकी सेवा करो । और मै आशीर्वाद करता हूँ कि, तुम उसीसे सुखी रहो ।"

उसी समय चिरागकी झिलमिलाती रोशनीसे ताराकी आँखोंका आँसू दीख पड़ा । उन्होने समझ लिया कि, विधवाके सामने पतिसेवाका कीर्त्तन अच्छा नहीं हुआ है । इस कारण उन्होंने ताराको सम्बोधन करके कहा–"बेटी तारा ! तू इतनी उदास क्यो है ? देखो बगीचेमें बहु तेरे फूल खिलते हैं लेकिन वह क्या सब देवतापर चढ़ने पाते है ? सुन्दर और सुगन्धवाले बहुतेरे फूल भोगविलासियोके विलासमें आते है लेकिन जिस फूलका बड़ा भाग्य है वही देवसेवामें लगता है । और तभी उसका जन्म सार्थक होता है । तुम दुःख मत करो । तुम भी भाग्यवतीहो । क्योंकि तुम भोग विलासकी वस्तु नही तुम्हारा जन्म देवसेवाके लिये है । इन सामान्य संसारी सुखोंके लिये तुमको कभी उदास नही होना चाहिये ।"

सुशीला और तारा दोनों सिर नीचे किये सुनती रहीं । ब्राह्मणने जल्दीसे बाहर आकर आँखोंका जल पोंछ डाला ।

पाँचवाँ अध्याय ।

आज मंगलवार है । कल सुशीलाके ससुराल जानेका दिन ठीक हुआ है । आज बिसेसर महाराज बडे चिंतित है । चावल, दाल, घी, नमक, तरकारी, फल फलहरी, मिठाई, मिरची मसाला की फिकर में बड़े व्याकुल हैं । ओढ़ने पहननेके कपड़े, सेज पलंग आदिकी खरीदमे सबेरेहीसे लगे हैं । फूल

पीतलके बर्तन, सील, लोढ़ा, कटोरे, कटोरी सभी संसारकी जरूरी चीजें खरीदी जारही हैं।

दामादकी आर्थिक दशा अच्छी न जानकरही बिसेसर महाराजने कन्याकी बिदाईमे इतना व्यय बाहुल्य किया है। और छः महीने तक कोई चीज खरीदनी न पड़े इस हिसाबसे तो उन चीजोंको दिया जो इतने दिन बाद बिगड़जाने वाली थी। जो लोग बिदाई का सामान देखते है वही अकचकाते है।

कन्या बिदा करते समय उसके साथ द्रव्यादि भेजनेकी रीति है लेकिन जिसने देखा उसीने कहा कि, इस तरह माल असबाबके साथ किसीने अपनी कन्याकी बिदाई नही की। मालकिन कई दिनोसे बेटीकी जुदाई बिचारकर दुःखी हुई थी, किन्तु आज बिदाईका सामान देखकर कुछ स्थिर हुई।

आज झुण्डकी झुण्ड स्त्रियाँ सुशीलाको देखने आयी वह भी बिदाईका सामान देखकर बहुत अकचकायी। सुशीलाने बड़े आदरसे सबको पिताके दिये हुए सब सामान दिखलाये और बड़ी अवस्थावालियोंमे आशीर्वाद पाया।

सुशीला सबकी प्यारी थी, उसकी जुदाई बिचारकर सब दुःखी हुई। लेकिन सुशीलाने "फिर आऊँगी, फिर तुम लोगोंसे मिलूँगी" कहकर सबका प्रबोध किया।

आज सुशीलाके हृदयमें हर्ष और विषाद दोनों विराजमान है। स्वामीके साथ पतिसेवा और गुरुजनोंकी शुश्रूषाके लिये ससुराल जाती है उसके लिये इससे बढकर और सुख क्या होगा। लेकिन जब उसको बिदा देनेके लिये पिता माता और पड़ोसी पड़ोसिनियोंकी व्यथा विचारती है तो मारे दुःखके उबल जाती है।

आज सुशीला बहुत चिन्तित है। अपने हाथसे ही सब चीजोंकी फिहरिस्त तैयार कर रही है। कौन चीज़ कैसे रखनेसे ठीक होगा इसका भी वह बन्दोबस्त करती है। और दास दासियोंसे उसको सजा रही है। नफरचन्दके भी आनन्दकी सीमा नही है। उसे कभी जिन्दगीमें इतनी नाना प्रकारकी चीजें एकत्र नहीं देखी थी। खासकर खाने पीनेका इतना सामान देखकर उसकी जीभ पनिया गयी और बिहारीलालके साथ गाज़ीपुर जानेके लिये उसने सब तैयारी करली।

सन्ध्या होनेके बादही सब सामान गाड़ियों पर लदने लगा। चार बैल गाड़ियोंपर सब मुश्किल से अटा। नफरचन्द इन गाड़ियों की बोझाई में बड़ी मेहनत कर रहा था मानों सब सामान उसीके घर जारहा है।

पहररात जाते २ गाड़ियां गाजीपुरको रवाना करदी गयीं । नफरचन्द गाड़ी पर ही चढ़कर जाने को तैयार हुआ लेकिन् विश्वेश्वर महाराज ने अपना नौकर गाड़ियोंके साथ करदिया इसलिये नफरचन्द के जानेकी जरूरत नहीं रही ।

सबेरा होते २ एक घोड़ेकी चौपहियाँ दरवाजेपर आलगी । माता पिता और सब छोटे बड़े से मिलने भेटने और प्रणाम तथा आशीर्वाद लेने पीछे शुशीला गाड़ी में बैठी । उधर नफरचन्द जो सबेरा होनेकी इन्तिजारी में रात भर जागता था पहर रात ही से सेज छोड़कर उठ बैठा था । गाड़ीपर सवारी आतेही आपँहुचा विश्वेश्वर महाराजने उसको कोचवान के साथ गाड़ीके ऊपर बैठने का हुक्म दिया इससे उसकी खुशीका ठिकाना नही रहा । वह छलाङ्ग मारकर कोचवानकी जगह जा बैठा । और हाथ में लगाम दूसरे में चाबुक लेकर गाड़ी हांकने की ताकमें था । जब विहारीलाल भी प्रणाम आशीर्वाद करके सबसे मिल भेंटकर गाड़ीमें बैठे तब कोचवान गाड़ीपर जा बैठा । और नफरचन्दसे लगाम और चाबुक लेकर गाड़ी हाँकने लगा ।

गाड़ी धीरे २ चलने लगी । जितनी देरतक वह आँखोंके सामने रही उतनी देरतक सब लोग उसी ओर इकटक निहारते रहे देखतेही देखते गाड़ी नजरोंसे गायब हुई । और सब लोग सुशीलाकी विदाईका शोक करते हुए अपने २ घर होरहे ।

गाड़ी बीचके अड्डोंपर कही नही ठहरी एक जगह तालाब पर हाथ मुँह धोने के लिये विश्राम किया गया था । यथावसर गाड़ी गाजीपुरके पास पहुँचगयी नफरचन्दने बहुतेरा चाहा था कि, गाड़ी हांकनेको उसे मिले लेकिन चतुर गाडी-वानने रास उसके हाथ में नही दी । नगरके पास थोड़ी दूरतक उसकी श्रद्धा पूरी करदी थी लेकिन सीखे सिखाये घोड़ेके कारण कुछ हानि नहीं हुई । अब शहरमें घुसते समय चाबुक नफरचन्दके हाथ रही रास गाड़ीवानके हाथमें । कभी कभी नफरचन्द अपनी चाबुक घोड़ोंपर चलादेता था । शहरमे गाड़ी थोड़ी दूर गयी होगी कि, वह पहलेकी रवाना कीहुई चारों बैलगाड़ियां मिलीं ।

चार बैलगाड़ियोंके आगे २ एक घोड़ागाड़ी चलने लगी । छोटेसे शहरके लोग इसतरह सामानलदी चार बैलगाड़ियोंके आगे एक बग्घी जाते देखकर अकचकाने लगे । किसीने समझा कोई यहां दूकान करने आया होगा । किसीने जाना कोई महाजन कहीं यात्राको परिवार सहित जाता है ॥

इसीतरह जितने लोगोंने देखा उतने तरहकी बातें कहने लगे । चलते २

गाड़ी मोतीलालके दरवाजे पर पहुँची। माताके आनन्दकी सीमा नही रही। पागलिनीकी तरह दौड़कर गाड़ीसे पतोहूको उतार लेगयी। सामने जो लदी हुई बैलगाड़ियां खड़ी थी उनपर उनकी आंख नही पड़ी। पीछेसे विहारीलाल भी अलंकार वस्त्रादिका बक्स लेकर गाड़ीसे उतरे और भीतर गये। इधर नफरचन्दने अकेला पाकर गाड़ीवालोंपर गरजना शुरूअ किया। बड़े दाबसे सब सामान उतारनेको कहा। जो लोग वहां खड़े २ इन लदी गाड़ियोंको विस्मित होकर देख रहेथे उन्होंने नफरचन्दसे पूँछा उसने गम्भीर होकर कहा—"क्यों? यह सब हम लोगोंका है।"

एक पड़ोसीने कहा—"अरे तेरा क्या है रे? तेरा है तो अपने घर काहे नही लेजाता यहा क्यों उतारता है?"

नफर०"अपने घरमें तो उतारते ही हैं अब यह घरभी तो हमाराही है।"

पडोसी०—यह घर तेरा कैसे?"

नफर०—"काहे हमारा कैसे नही है हम तो इसी घरके नौकर है?"

पड़ोसी—"अरे! तो यहां दुकान होगी क्या?"

नफरचन्द अबकी झझककर बोला—"यही तो तुम्हारी अक्कल है यहाँ दूकान होगी और मै दूकानमें नौकरी करूँगा यही तुम्हारी बुद्धि है न? इतना नही समझमें आया कि, हमारे मालिक सुसराल गये थे और ससुरजीने सब सामान सहित अपनी लड़की बिदा की है। शहर में रहके क्या भार झोंकतेहो जो इतनी अक्कल नही है।"

पड़ो०—"ऐ! इतना सामान?"

पडोसी इतनाही कहकर अवाक् होरहा मुँहसे कोई बात नही निकली। अपने साथियों सहित कपारपर हाथ देकर चुपचाप खड़ा रहा। नफरचन्द सब सामान गाड़ीवानोंसे भीतर भिजवाना शुरूअ किया। और आप इसीलिये वहा डटा रहा कि, कोई कुछ उठा न लेजाय।

जब सब सामान भीतर जाचुका तब नफरचन्द भी गाड़ीसे उतरकर भीतर गया। मालकिनभी इतना सामान देखकर अवाक् होरही।

पतोहू के साथ इतना सामान देखकर आज माता के आनन्द की सीमा नही है। उनकी दोनों आँखों से आनन्द के आँसू बहरहे है। व महल्ले की अनेक स्त्रियों को बुला बुला कर दिखाने और कहने लगी—"देखो बहन हमारी छोटी बहू नही आयीहै। स्वयम् लक्ष्मीने हमारे घरमें प्रवेश कियाहै।"

अन्दर के दो मकान और आँगन सामान से भर उठे । आये हुए लोगों के खड़े होने की भी जगह बाकी नहीं रही । लेकिन नफरचन्द ने देखा कि, बहुतसी चीजें आँगन में रहनेसे खराव हो रहीहै । उसने सब चीजें उठा उठा कर घर में सजना शुरूअ किया । जिन चीजों को अकेले नहीं उठा सकता था उन्हें गाड़ीवान् और सुशीला के साथ आये हुए दूसरे नौकर से सहायताली । थोडी देर में सब चीजें मुनासिबतौरसे रख दी गयी ।

अब मालिकिन को बहू के घर आने की खुशी मे महल्लेवालों को मिठाई आदि बांटने की चिन्ता हुई । उन्होंने यह सब काम अपने ही हाथ मे लिया नफरचन्द से मदद मांगी लेकिन वह भला ऐसी सुन्दर मिठाई आदि स्वादिष्ठ वस्तुएँ क्यों बिलवावेगा । उसने किसीतरह यह मंजूर नहीं किया । लेकिन आज मालकिन के घर मे आदमियो की कमी नही थी । इस कामकेलिये पडोशी की मदद ही काफी हुई ।

देखते २ आज दर्शक दर्शिकाओं से मालकिन का घर भर गया । पलभर में भी उस घर का ऐसा रंग बदला कि, कह नही सकते । आज तीन वर्ष से जिन ब्राह्मणो ने कभी उसघर के दरवाजेपर दर्शन नहीं दिया मिठाई के लोभ से आज वह भी अपना पदरज देकर इस घरको पवित्र कर गये । स्त्री पुरुष और बालक बालिका के शोर से घर गूँजने लगा । छोटी बहू और उसके माबाप की कीर्ति शहर भर में फैलने लगी ।

किन्तु पड़ोसियों मे मुँहसे जैसा आनन्द प्रगट किया था उनके मन में वैसा भाव नही था । भीतर से बहुतों का जी ईर्षा से जल रहा था । हम जानतेहै बहुत सी मुलिया की मा, दुर्गा, रेखा पँड़ाइन और गदाधर की मा ऐसी स्त्रियों को दाह के मारे उस रातको नींद नही आयी ।

छठा अध्याय ।

उस रातको डाहसे जैसे बहुतोंको नींद नसीब नहीं हुई वैसेही बिहारीलाल की माको मारे आनन्दके नींद नही आयी । सवेरा होते २ जो आँख झपी थी सोभी उनका सुख स्वप्न मात्र था ।

वह सेज से सवेरे उठकर घर के काम काज में लगी । ज्योंही कार्य्यारम्भ करतीहै कि छोटी बहू (अब हम सुशीला न कहकर छोटी बहूही कहना ठीक समझनेलगे है) ने आकर बाधा दी । मालकिन ने कहा—" नहीं बहू ! मै

तुमको कुछ काम न करने दूँगी । " छो० ब०—" तो माजी हम को क्यों बिदा करालायी ? " सास—" तो क्या तुम को घरका काम काज करने वास्ते थोड़े लायी हूँ । तुम हमारे घरकी लक्ष्मी हो इसवास्ते लायी हूँ । हमारे घर ऐसा काम ही क्याहै जो है वह तो हमारे अकेले करनेपर भी नही है । "

छो०ब०—" नही माजी ! मैं तुम्हारी सेवा करने की श्रद्धा करके आयी हूँ ऐसा अभी नही होगा कि, मै बैठी रहूँ और आप काम करें । "

मालकिन का वह रोने का रोग अभी तक नही गया है । इस बात के सुनतेही वह रोउठी । लेकिन पहले दुःखका रोनाहुआ करता था, यह हुआ सुखका रोना ।

आंसू पोंछकर उन्होंने कहा—" नही बहू सो तो सही है लेकिन कोई इस तरह सीधी बात कहे तो मैं यह क्या इसका सतगुना काम अकेले करडालूँ ।"

छो०ब०—" मेरे रहते यह सब काम तुम्हारा करना अच्छा नही है । तुम बैठे २ हुक्म दो मैं सब करलेती हूँ । तुम्हें मिहनत करने का कछ भी काम नही है । "

छोटी बहूने बहुतेरा कहा, लेकिन सास माननेवाली नही थी । अन्त में मालकिन के सब कामों में सहायता देना ही बहूका काम हुआ ।

घरका काम काज पूरा होजानेपर बहूने एक ओर काम शुरूअ किया वह काम और कुछ नही केवल घर द्वार साफ करना था । नफरचन्द और अपने साथलाये हुए नौकरको लेकर अपने हाथसे घरकी सफाई करने लगी । और देखतेही देखते बहुत दिनोंका जाल घास जञ्जाल सब साफ कर डाला । इनसबके करते दोपहर होगया । सास बहू को इसतरह मिहनत करते देख बहुत दुःखी हुई । किन्तु इतने ही समयमें घरकी इतनी सफाई देखकर उनके आनन्दकी सीमा नही रही । किसी पर्व्व या विवाहादि काम का अवसर आनेपर देहातों में जैसे सफाई होती है वैसेही सफाई आज इस घरकी होगयी । घरका घर साफ होगया सफाई के मारे चारोंओर घर चकचका उठा ।

आहार करनेपर छोटी बहूने पलभर भी आराम नहीं किया अब शयनागार सजाने में लगी । कौन चीज कहां रखने से अच्छी होगी । कौन किसतरह रखने लायक है इसका विचारकर वह सब चीजों को सजाने लगी । पलंग बिछानेको भी नया सजाव हुआ । इसीतरह एक २ करके तीन घर सजाये गये । हम पहले ही कह आये हैं । उन घरोंकी हालत बहुत खराब थी । बहूने उसीदिनसे

सबके मरम्मत का बन्दोबस्त किया । पिताका दियाहुआ जो कुछ रुपया उसके पास था उसीसे इन स बातांका बन्दोबस्त करने लगी । साथही बाहरकी बैठक आदमियोंके बैठने लायक होजाय इसका भी प्रबन्ध किया हमने एक पड़ोसीके मुँह से सुनाथा कि वह बहू क आनेसे एक अठवाड़े बाद उधर घूमने गया था उसने नही पहँचाना कि, यह घर वही है या कोई और ?

इधर विहारीलाल ने देखा कि, उसकी स्त्री के आने बादसे घरद्वार सब साफ होगया । खान पानकी भी कुछ किल्लत नही रही । दोचार आना पैसेकी जरूरत होतेही वह स्त्रीसे पाजाते है । इसके सिवाय स्त्री उनकी दासीके समान सेवा करती है अब पहले जो उनके मनमें स्त्रीके पास में डरलगता था वह एकदम दूर होगया । अब विहारीलाल जरूरत पड़नेपर स्त्री से कुछ पूँछते भी नही सकते ।

उनके मनसे स्त्रीका भय जितनाही घटने लगा उतनाही प्रेम और चाह बढ़ने लगी । सेवा यत्न करने और चित्तसे चाहनेसे वश न हो ऐसा जीव संसारमें हैही नही । जड़भरत होने परभी विहारीलालके हृदयमें परोपकारादि दो एक गुण स्वाभाविक थे । अतएव ऐसे हृदयका भक्त और स्नेहसे वशमें करना कोई कठिन बात नही थी । हम समझते हैं सृष्टिके इस प्रधान जीव मनुष्यका चाहे जितनाही पाषाण हो धीरे २ आघात करनेपर निश्चयही उसका प्रतिघात होता है ॥

विहारीलाल सदा नशा खाने और गाँजा चरसहीमें रहता था, लेकिन इस के लिये उसकी स्त्रीने एक दिनभी कुछ नही कहा । परञ्च अपने हाथसे उसके नशाका सामान जुटा देती थी । वह सदा स्वामीकी जी जानसे सेवा करती थी । इसीसे विहारीलालका सब डर जातारहा ।

अब विहारीलाल अपनी स्त्रीके प्रेमवश हो पड़े हैं । धीरे २ संसारके काम काजमें उनका मन लगा है । अब वह पहलेकी तरह इस महल्ले उस महल्ले वेकाम नही भरमते । स्त्रीने अब धीरे २ एक २ करके घरके कामका भार स्वामीपर देना आरम्भ किया है । विहारीलालनेभी धीरे २ सांसारिक कामोंका भूगोल सीखना शुरूअ किया है ।

विहारीलाल पहले शरीरके बड़े दुबले थे । सदा मलीन वस्त्र बदनपर डाले रहते थे इन दिनों स्त्रीके यत्नसे उनकी स्वास्थ्यमें जिस तरह उन्नति हुई है उनके मलीन वस्त्रोंमें भी वैसाही परिवर्त्तन हुआ है वह अब स्वस्थ शरीरसे परिष्कृत वेषमें संसारयात्रा निर्वाह कर रहे हैं । लड़के की

यह दशा देखकर माताके आनन्दकी भी सीमा नही है । वह सबसे यही कहने लगी—

“ हमारी छोटी बहू पारस पत्थर है हमारा जो कुछ छू देती है वही सोना होजाता है । ”

वस्तुतः मालकिन के घरका ऐसा परिवर्तन देखकर सब लोग छोटी बहूकी मुहँमुँह बड़ाई करने लगे । जहाँ दो चार आदमी इकट्ठे होते हैं वही छोटी बहू की बात छिड जाती है । इसीतरह तीन चार महीने तक छोटी बहूने घरका काम काज सब चलाया । बीच २ में जेठानी और उनके लडकोंको विदा करानेके वास्ते साससे कहा जब मालकिनने नही सुना तब उनके मनसे विरुद्ध जानकर चुप हो रहीं । लेकिन बीच २ मे आदमी भेजकर उनका समाचार लेती रही । उधर मोतीलाल गुरुदयालके साथ ठेकेदारीका काम करते है लेकिन खर्चके लिये एक पैसा भी उन्होंने नही भेजा ।

सातवाँ अध्याय ।

छोटी बहू संसारके सब कामका भार लेकर आज चार महीनेसे चला रही है । पिताने बहुतसा असवाब साथ ही दिया था इसी कारण थोड़े खर्चसे भी अबतक काम चलता गया । लेकिन छोटी बहू कुछ कल्पतरु तो थी नहीं कि, सदा इसी तरह चलती रहे । अबतक सब लोगोंको आशा थी कि, मोतीलाल खर्च भेजेंगे । लेकिन जब उन्होंने कुछ भी खबर न ली तब किसीको कुछ भरोसा नही रहा ।

[illegible] इस वक्त खर्चकी बडी [illegible] हुई । अन्तमें [illegible]

इति

देवरानी जेठानी दूसराभाग।

समाप्त.

तीसरा भाग।

पहला अध्याय।

" तुम क्या चाहते हो ? जो चाहो सो मैं दूंगी।"

" मैं केवल प्रेम चाहताहूं। मै प्रेम भिखारी हूँ। प्रेमके सिवाय और कुछ नहीं चाहता।"

एक युवती ने मधुर २ हँसी हँसतीहुई तिरछी निगाह से देखकर एक जवानसे ऐसा पूँछा और जवान ने खुशी में फूलकर वही ऊपर का जवाब दिया था।

युवक युवती जिस घरमें बैठेथे वह घर बड़ी सुन्दरता से सजाथा दीवारों पर नाना प्रकारके बेलबूँटे और लतापताएँ निकाली गयी थी। तरह तरहकी मनहरनी तसबीरें लटकती थीं। हंडियाँ ग्लास और झाड़ फन्नूस से घरका घर झकझका रहा था। बीच में बड़े छोटे रंग बरंगे चंदवे लटकते थे। एक ओर एक पलंग पर हाथों ऊँची शय्या पड़ी थी। उसपर दोनों ओर झालरदार तकिया रक्खे थे। घरमें एक बड़ी आलमारी है। दो पार्श्व में आइनेदार दो अलमारियाँ थीं। एक ओर एक बड़ेसे आफिस क्लाकका पेण्डुलम हिलता था। एक चौकीपर बैठकदार दो तीन हुक्के रक्खेथे अनेक काच और चीनी मिट्टी की पुतलियाँ और बनावटी फूलोंके पौधे भी उस घरकी शोभा बढ़ा रहे थे। चारों ओर एक बार नजर डालनेसेही वह वेश्या का घर जान पड़ताथा दीवारकी काचमढ़ी तसबीरें दूर से अतिमुन्दर दीखपड़ती थीं लेकिन बिलकुल जघन्य रुचि परिचायक और अश्लीलथी। और चीजें भी ऐसे ही ढङ्ग से रक्खीथी कि, उनके देखने से र्जीमें एक प्रकार का दुर्भाव उपजता था।

पाठक! आप लोगोंमें से कितने हीने पहँचाना होगा। यह युवक युवती कौनहैं॥

युवक दूसरे कोई नहीं आपके मोर्त के साले सैदपुर वासी गुरुदयाल हैं। और—युवती हा! इस युवतीका परिचय कैसेदें? लेकिन जब उपन्यास लिखने बैठकर तो भला आवे चाहे बुरा सबको बतलाना पड़ताहै। यह युवती सैदपुरकी एक मशहूर रण्डी है नाम है " गुलाब " प्रकृति के प्रभाव से पृथ्वी

के हरे पौधे में जो गुलाब खिलता है वह एक दोबार सूँघनेसे एकही दो दिन में मुरझाकर सूख जाता है। लेकिन यह गुलाबकी कली रात दिन सूँघी जानेपर भी अछूती और पाक बनी रहती है। इसका गुलाबी रंग सदा गरबीला बना रहता है।

उस रातको गुरुदयाल अपनी स्त्री बेनीको लात मारकर इसी गुलाब के घर आये थे। उसके पहले भी एकबार वह अपने किसी मित्रके कहनेसे यहां गाना सुनने आये थे और उसी दिनसे गुलाबसे गुरुदयाल की मित्रता बँधीथी॥

गुरुदयालका परिचय पानेपर गुलाबने उसदिन उन का बड़ा आदर किया था। और वहभी गुलाबके मानमें मग्ध होकर गुलाबी प्रेमज्योतिके पतंग बन गये थे। इधर लज्जाशीला बालिका बेनी स्वामीको प्रसन्न करनेमें अक्षम हुई। अब गुरुदयाल का मन सहजही गुलाबगन्धकी ओर झुका।

पहले किसी बुरे काम में लगनेसे मनको प्रबोध देनेके लिये किसी न किसी तरह का एक कारण दरकार होता है। क्योंकि बिना सफाई दिये विवेककी पीड़ा सहना बड़ा कठिन होता है। बेनीने स्वामीकी अवज्ञा करके महा अपराध किया है इसीकारण गुरुदयाल का उसपर बड़ा कोप हुआ है। अब बेनीके इस गुनाहका बदला लेनेहीके लिये मानों गुरुदयालने इस पापसमुद्रमें गोता लगाया है। इससे मनमें वह बेनीको ही सब दोषोंका मूल समझकर अपनेको बेगुनाह समझते हैं।

इसलिये इस काममें अगर कुछ पाप होगा तो वह बेनीकेही कपारपर पडेगा। पापी पाप करनेके आरम्भ इसीतरह एक न एक सिद्धान्त करके मनको प्रबोध देता है।

गुरुदयाल विद्वान् और बुद्धिमान् होनेपरभी लड़कपनसेही विलायती मिजाज के बाबू थे। पिताकी दशा अच्छी होनेके कारण किसीतरहका मानसिक या शारीरिक कष्ट सहनेका उनको अभ्यास नहीं था॥

जवानीमे जब उनकी प्रणयतृष्णा प्रबल होउठी तब बालिका बेनीसी लज्जावती अज्ञात यौवनासे उनकी पियासा नहीं मिटी। और पत्नीप्रणयसे निराश होकर पापसमुद्र में कूदपड़े। उनकी विद्या, बुद्धि और ज्ञान न जाने कहाँ चला गया अबतक गुलाब के साथ गुरुदयाल का कुछ पक्का बन्दोबस्त नहीं हुआ था। आज उसी का एक कूल किनारा होनेकादिन है इसी से आज मधुर मुसक्यान और तिरछी निगाहोंकी इतनी सरासरी है। गुलाब में जो कुछ मोहिनी शक्तिथी आज सब तरह से गुरुदयाल पर उसका प्रयोग हो रहा है।* आ

गुरुदयाल मरेंगे तो गुलाब उनके हाथ में स्वर्गतक देने को तैयार है उसीसे उसने पूँछा था "क्या चाहते हो जो मागो वही मैं दूगी।"

लेकिन गुरुदयाल और कुछ नही चाहते वह स्त्री के प्रेम से निराश होकर उस वक्त प्रेम के लियेही पागल है । इसी से उन्हों ने जवाबमें कहाथा "मैं प्रेम चाहता हूं। प्रेम भिखारी हूँ। प्रेमके सिवाय और कुछ नही चाहता।"

जैसे कुतिया मतवाली वैसे कातिक के मतवाले कुत्ते जैसे दानी वैसे मँगते जैसी देनेवाली वैसाही मांगनेवाला जो बातकी बात में हाथपर स्वर्गला दे सकती है। उसे तुच्छ प्रेमदान करते कितनी देर ? गुलाबने एक गरम सांस छोड़कर कहा "ओ! क्या तुमने अबतक मुझसे प्रेम नहीं पाया । मैं जो तुमको प्राण से भी अधिक प्यार करती हूँ यदि अबतक नहीं समझसके हो तुम्हें पलभर देखे बिना जो मेरे पेट में बड़वानल जल उठता है. आहार नीद सब छोड़कर रात दिन तुम्हारे लिये रोना आता है यह क्या तुम अबतक नहीं समझते ?"

मायाविनी मायाजाल क्योंकर अपनी चतुराई से सबको मोहसकतीहै। गुलाब केवल मुँहसेही प्यारकी बातें कहकर चुप नही रही । प्यारके साथ साथ माया जालभी फैलाया। बात करते २ उसकी आंखों में आंसू देखपड़ा। कण्ठ भारी होआया। मायाविनीके मायाजालमें गुरुदयाल जकड़ गये । गुलाबकी वह छल छलाती आंखे अपने नयनोंसे देखकर उसके रुकते कण्ठसे कोकिला का मर्म्मभेदी स्वर अपने कानों से सुनकर गुरुदयाल उसके प्रेममें सन्देह कर सकते है।

गुरुदयाल ने आदरसे गुलाब का आंसू पोछकर कहा—"गुलाब! तुम जो मुझे प्राणसे भी ज्यादा चाहती हो यह जानना मुझे बाकी नही है । मै ऐसा न जानता तो तुम्हें इतना कैसे चाहता ? अब हमारा तुम्हारा यह प्रेम सदा बना रहे इसी में सुख है। और इसीका उपाय करना चाहिये।"

गुलाब—"हमें भी खाली इसीकी फिकिर है। तुम इसकी कोई तदबीर करडालो कि मुझे अब पाँच आदमीका मुँह न देखनापडे,मै अब तुम्हारे सिवाय और किसी की नही हूँ। अब ऐसी तदबीर करो कि, हमारे घर तुम्हारे सिवाय दूसरा न आवे। इसका उपाय जल्दी नहीं करोगे तो मैं जहर खाकर मर जाऊँगी।"

गुरु०—"प्यारी गुलाब! हमारी भी यही इच्छा है तुम जरा अपनी माको बुलावो मै सब ठीक कर लेताहूँ। तुमको महीने में क्या देने से चलेगा यह मुझे जानना चाहिये।"

गुला०—" नहीं नहीं ! इसके वास्ते-माको मत बुलावो । वह हमारी तुम्हारी मुहब्बत थोड़े पहँचानती है. वह आतेही चार पांचसौ माँगने लगेगी । तुम आना बन्द करदोगे । और इधर हमारी जान निकलने लगेगी । तुम्हारे साथ इस बातका क्याठीक करना. जिसको मनदिया प्राण दिया देहसौंपा जीवन सौंपा सब जिसके निछावर कर दिया उससे तुच्छ रुपये का क्याठीक करना तुम जो दोगे सोदेना । हमारा-खर्च चलने से काम है । "

गुरु०—" महीने में कितना रुपया होने से तुम्हारा खर्च चल जायगा ? " गुलाब ने सिर हिलाते २ कहा—" ऐसे तो जितनाही खर्च बढावे उतनाही बढताहै लेकिन जब मेरा सब खरचा एकही आदमीपर पडजायगा तो मै वैसा बहुत खरच न करूँगी । तुम हम को महीने २ एक सौ रुपया देते जाना फिर मै किसी तरह सुख दुःख चलालूंगी ।"

गुलाबने इस ढंगसे कहा कि, गुरुदयालको यह सौ रुपया महीना महातुच्छ जान पडा । और गुलाब उन्हें बहुत प्यार करती है इसीसे सौ रुपये महीनेमें उसने गुजारा करना मंजूर किया है यह सोचकर मारे खुशीके फूल उठे और सौ रुपये महीनेमें देनेको राजी होगये ।

गुलाबने अपने कामकी सिद्धि देखकर मारे अहङ्कारके फिर अपनी मोहनी मूर्त्ति धरकर वेश्या सुलभ हावभाव कटाक्ष करना शुरूअ किया । और मनमें कहने लगी—"इतना जल्दी सौ रुपये महीनेपर राजी करना क्या उस बुढियासे होसकताथा । वह बदशगाल माँगती बहुत, जोर करती तो साढ़ बारह गण्डा हाँ कहती । इससे तो वह कभी ज्यादा बोल नही सकती थी । लेकिन यहाँ तो मालूम होता है कि मै और माँगती तो यह मंजूरकर लेता । लेकिन खैर जैसे हो इससे दोसौ रुपया महीना तो खींचही लूँगी ।"

गुलाब जब मनमें ऐसा सोचरही थी तब गुरुदयाल उसकी ओर इकटक निहारतेथे । और देख देख मनमें कहतेथे कि—"क्या बात है इसका मुँह जितनी बार देखता हूँ उतनाही सुन्दर होता जाता है । इतनी सुन्दरता छनेछन इसको कहाँसे मिलती जाती है ? "

दूसरा अध्याय ।

धीरे २ गुरुदयाल गुलाबमें मत्त हो उठे । काम काजमें उनका कुछ भी मन नहीं रहा । बहुतसे कामों का भार बहनोई मोतीलालके सिरपर सौंपा गया ।

मोतीलाल दिलोजानसे काम करतेथे लेकिन इस काममें वह पक्के क्या आधे आनिवकार भी नही थे इसीसे बहुतोंने उन्हें धोका देनेका अवसर पाया ।

ठेकेदारीका काम बड़ी चालाकीसे करना होता है । क्योंकि बहुतसे छोटे आदमियोंको साथ लेकर यह काम करना पड़ता है । ऐसी दशा यह सब काम मोतीलालसे सीधे सादे आदमीके सिर देना ठीक नही हुआ । पीछे क्या जाने मोतीलाल कुछ चोरी करे इसी डरसे वेतन कुछ न नियत करके लाभमें दो आनेका उसको भागी बना दिया गया ।

लेकिन गुरुदयालकी लापरवाहीसे रोजगारमें अब वैसा लाभ नही रहा । ऊपरसे खर्चा चौगुना बढ़गया । अब रुपये पैसेकी बड़ी खीचा खीची हुई । इसी कारण रोजगार करके भी मोतीलाल घर खर्चेके लिये माताको एक पैसा नही भेजसके । वह आगेकी आशापर ही काम करते रहे ।

पाप बहुत दिनोंतक छिपा नही रहता । धीरे २ गुरुदयालकी सब बातें पिता रघुबर दयालके कानोंतक पहुँचने लगी । रघुवर दयाल बेटे को रण्डी में आसक्त जानकर बहुत दुःखी नही हुए । लेकिन काम काजसे उसका टालमटोल करना उनके लिये बहुत ही दुःखकर हुआ ।

ब्राह्मणने बेटेके शासन ताड़न से हाथ खीचकर सब काम आप करना विचारा लेकिन अपनी आजकल की मान मर्य्यादा और बुजुर्गी छोड़कर कैसे सब के सामने फिर संसारीकी तरह काम काज करेगे इसी की चिन्ता में व्याकुल हुए इतने दिनोंतक उन्होंने बहुत से चेले चाली और चेलीनियाँ मूडरक्खी थी । अब उनसे क्या कहकर मान बचावें गे इसकी बड़ी चिन्ता हुई । अन्त मे स्थिर किया कि, चाहेनाहो अब दशा ऐसी आपड़ी है कि विना विषय कार्य में मनादिये नही चलता । अब आज या कल यह भाव अपने लडके से कहेगे इसीका अवसर ढूँढने लगे । इतने में एक दिन हैजाने उनपर दयाकी और बातकी बातमें कालकवलित हुए । अब गुरुदयाल को और आज़ादी मिली ।

उचित समय पर उनकी काम क्रिया हो गयी । और उसी श्राद्ध पर गुरुदयाल का श्राद्ध हुआ । श्राद्ध में किसी तरह की सिकायत नही हुई क्योंकि रघुबर की जैसी मान मर्यादा लोगों में थी वैसे ही श्राद्ध की भी गुरुदयाल ने तैयारी की थी । तारा को भी मायके से बुलाया गयाथा ।

किन्तु तारा ससुरके श्राद्ध पीछे बहुत दिनोंतक सैदपुरमें नही रहने पायी। क्योंकि उसको वैधव्य व्रत पालनेके नियमोंमें यहाँ बहुतेरे विघ्न होने लगे । ऊपरसे

दो दो ननदोंका दुःख पहाड़ होगया । विधवाके मानसिक दुःखपर ननदोंकी यंत्रणा उससे कैसे सही जाय ? काम क्रिया होनेके एकही हप्तेबाद वह मायके चली गयी ।

श्राद्धमें गाजीपुर भी नेवता गयाथा । और विहारीलालने सैदपुर पधारकर नेवता पूरा भी किया था । लेकिन विहारी अब वह विहारीलाल तो हैं नहीं। उन्होंने आकर तीनही चार दिनबाद भाईको घर चलनेके लिये कहा । भौजाई और दोनों भतीजोंको घर लेजानेके लिये बहुत जिद्द किया लेकिन केवल भौजाईकी इच्छासे किसीकी विदाई नही हुई । दोनों बच्चों आजीके पास जानेको बहुत मचले लेकिन माने किसी तरह उन्हे जाने नही दिया । अन्तमे विषण्ण मन होकर विहारीलाल घर लौट आये ।

इस श्राद्धमें बहुतसे कुटुम्बी भी आये थे । उनमेंसे भी दो दिनसे अधिक कोई नही ठहरा । चम्पा और धूमावतीने सबको जल्दी २ विदा कर दिया था।

रघुवर दयालके हठात् मरनेसे चम्पाको सबसे अधिक दुःख हुआ । हम पहले ही कह आये है कि चम्पा रघुवर दयालके बड़े आदर की कन्या थी । चम्पाका जो कुछ गर्व्व, जो अहङ्कार और जो हाँकदावथा वह केवल बापके अन्याय आदर और प्रथमसे ही था। तब उनके मरनेसे वह सबसे अधिक दुःखी होगी इसमें आश्चर्य्य ही क्या है ?

चम्पाने बापके मरनेपर वेनीको बदनाम करनेकी एक नयी बात निकाली। उसने लोगोंमें यह कहना शुरूअ किया कि ऐसी अभागिनीके साथ गुरुदयालका व्याह होनेही से रघुवरदयालकी अकाल मृत्यु हुई है । और इसीके बहाने बापके मरनेपर उसने वेनीपर जुल्म करना दूना करदिया ।

श्राद्धके दोही हप्ता बादसे गुरुदयालने अपना रूप दिखाया । अब रातको उसे घर कोई नही देखता । दिनका भी बहुतसा हिस्सा उसका गुलाबही के घर बीतने लगा। गुलाब शराब पीनेमें प्रवीण थी । गुरुदयाल भी महाशराबी हो उठा। दोही तीन महीनेमे उसे लोग मतवाला और पियक्कड़ कहने लगे ।

इतने दिनोंतक यह सब बातें गाँवमें जाहिर नही थी लेकिन अब वह एक २ करके फूटने लगी । उनके अनेक साथियोंने इस खराब कामसे उन्हें रोका । लेकिन गुरुदयाल सबको यह समझानेकी तदबीर की कि इसमें उनका कुछ कसूर नहीं है सब दोष उसी भयविह्वला अन्तर्निहित–पण्य ज्ञापनामे असमर्था बालिका का है। आजकलके एक नवशिक्षित जवानकी विद्या बुद्धिका परिचय इससे और क्या मिल सकता है ?

भाई के इस चरित्र दोषसे चम्पा और धूमावती दोनों वेनीको सताती थीं। चम्पा भाई के इस तरह मिज़ाज बदलनेसे बहुत खुशथी, लेकिन धूमावती इससे दुःखी थी। चम्पाके आनन्दका कारण यह था कि, इससे वेनीके सुखसोहागकी आशाका चिराग बुझता जाता था। भाईका रण्डीके घर जाना चम्पा सहसकती है, लेकिन भाई अपनी स्त्रीके साथ प्रसन्न रहकर उसे सुखी करे यह वह नहीं देख सकती।

वेनीने चम्पाका कुछ बिगाड़ा नहीं था। नातेमें वह चम्पाके भाईकी लड़की भतीजी होतीथी। इसीको चाहिये उसका अपराध कहिये या जो समझिये

गुरुदयाल का जैसा दिनोंदिन सत्यानाश होने लगा। वेनीकी दशाभी वैसेही क्रमशः खराब होती गयी। बहुतसे नौकर नौकरानियोके रहते भी वेनीको रात दिन जाँगर तोड़ मिहनत करना पड़ती थी। इसपर भी उसके खाने पीनेकी किसी को कुछ खोज खबर न थी।

बालिका वेनी दोनों ननदोंकी लाञ्छना ताड़नासे ही रोरोकर पेट भरती थी। और कुछ खानेकी जरूरत नहीं होती थी। वह रोना कोई सुनता जानता नहीं था। न जाने सुननेकी कोई तदबीर थी।

क्योंकि उसका रोना शब्दहीन और अश्रुहीन था। पाठक! शब्दहीन रोना भी आपने बहुत देखा होगा। लेकिन यह अश्रुहीन रोदन वेनीके अभ्यास का फल था।

इन सब दुःखों के सिवाय वेनीपर स्वामी का निरादर आपदाका पहाड़ ढाये देता था। क्योंकि वेनी अब बालिका वेनीनहीं है। उसने अब जवानी में कदम रक्खा है और अपना हाल ठीक समझने में समर्थ हुई है।

यौवनारम्भ से उसके शरीर की शोभा जैसी बढ़ती जाती है हिताहित ज्ञान भी उसके जी में वैसाही उपजता जाता है। किस अपराध से उसके स्वामी ने उस रातको लात मारकर कहां के लिये प्रस्थान कियाथा यह वह अबतक नहीं समझ सकी है।

स्वामी से उस बात को पूँछने और उसके लिये मुवाफी माँगने के लिये इस समय वेनी व्याकुल है। लेकिन भाग्यकी बात है अब वेनीको उसका अवसर नहीं मिलता।

उसी रातके बाद फिर वह वेनी को सामने नहीं आने देते न उसका मुँह देखना चाहते। अगर भूलसे कभी सामने आजायतो चट वहाँ से उठकर चले जाते हैं बालिका वेनी क्या करें अबभी वह अबलाही है। वह और कुछ नहीं

करती न चाहती अब सदा यही देवी देव मनाती है दिन रात यही कहती है:-

मा ! भगवती ! कमाक्षा देवी ! अब मुझे ले चलो । अब बहुत दिन जी चुकी । अब जगत् में मत रक्खो । मेरी सब सरधा पूरी हो गयीं । अब मेरी रच्छा करो। इसीमें मरना है ।"

बेनीको अब दुःख सहना बड़ा कठिन हुआ । वह अब अपनेको आप मार डालने पर तैयार हुई । किन्तु वह कोमल स्वभावकी बालिका आत्महत्याके लिये कोई उपाय नही ठहरा सकी ।

इसीसे सदा वह देवी देवताओंसे ही अपने मरनेको मनाने लगी ।

तीसरा अध्याय ।

मरते समय रघुवरदयाल बहुतसा रुपया छोड़ गयेथे । वह सब धन गुरु दयालके हाथ लगा, इसीसे हमने कहा था कि, रघुवरदयालके साथही सा गुरुदयालका भी श्राद्ध हुआ । इस समय अगर इतना धन गुरुदयालके हाथ न लगता तो वह इस तरह बुरी हालतमें न पडता । अर्थ ही सब अनर्थोंकी जड़ है, गुरुदयाल का जीवननाटक इसका एक उज्ज्वल दृष्टान्त है ।

अब गुरुदयाल खुल्लमखुल्ला सब करने लगा। लोक हँसाईका अब उसको कुछ भी डर नही रहा। इधर उसके यार और मुसाहिब भी अनेक मिले और उन्हों ने उसके सर्व नाशका बहुत कुछ सुभीता किया ।

आज गुरुदयालकी ओरसे गार्डन पार्टी है । यार और मुसाहिबों से आज उनकी खचाखच्च भरी है ।

कलसेही तैयारी हो रही है। कोई रण्डियों के बन्दोबस्त में मस्त है । कोई तरह तरहकी शराब मुहैमा करने को मुकर्रर है । कोई भोजन की सामग्री जुटानेमें लगा है । नव बनते २ सब घुरहू, बिनहू, चपर घट्टू गर्नखट्टू, सलारू सोमारू आपहुँचे । आज सबका यही इरादा है कि इसी फुलवाड़ी में स्नान भी करेंगे ।

सबलोग रमते झूमते गौहर, गफ़ूरन, मुन्ना, बनमाली और कसीवन नसीवन इन्तिजारी करने लगे। घंटेकी सुई ज्योंहीं इसपर पहुँची कि फूलवाड़ीके टहलने वालोंतकको छमाछम सुनाई दिया । सबके कान उसी आवाज की ओर होरहे। घुरहूने सब से आगे बढ़कर आनेवालों का सत्कार किया और उनको भीतर

लाये । लोगोंने देखा तो वह कोई और नही केवल ऊपर लिखीं वेश्यायें थी । उनके साथमें सारंगी लटकाये तबला लादे टुनटुनिया लपेटे सम्प्रदायी थे ।

जब सब रमती झमती चारोंओर छमाछम सुनाती फूलवाड़ी के विलास बंगले में पहुँची तब सबमें हलचल मचगयी । मारेखुशी के सबका जी उमंग आया । कई मिनटबाद जब शान्त हुआ । गुरुदयालने नौकरों को नहाने की तैयारी के लिये कहा ।

अब क्याथा देखते देखते, तेल तौलिया (Towel) का ठट्ट लगगया । इतने में घिनहूने एकमजे की बात छेड़ी उसने गले में कपड़ा डालकर एक पांव से खड़ा हो हाथ जोड कहा—“ अरे बनमालीजान आजका बेड़ा पार करना तुम्हारे ही हाथ है तुम्ही माझ बनकर पतवार पकड़ो । बिना तुम्हारे भवसागर पार होना कठिन है ।”

बीबी बनमाली जानने गरकटी हँसी हँसकर कहा—“ इतने लोगों के रहते हमी माँझी क्यों बनें साहब ?”

घिनहूने बात गिरतेही जवाब दिया—“ नही जान तुम समझती नहीं हो । तुमहो हमलोगों की बहुत दिनोंकी परिचयी पुरानी सिद्धेश्वरी ”॥

इससे तुमको माँझी न बनाने और दूसरे के हाथ मे पतवार देने से काम नही चलेगा । बीच में कहीं न कहीं सब डूब जायगा ।”

इतने में गुरुदयालने कहा—“ बनमाली जान ! तुम्ही आज हमलोगोके (Buttler) हो तुम्ही सबको (distribute) करो ।”

बनमाली से अब बात दुहराते नहीं बना । सिर नवाकर थोड़ी सी ओठोंपर मुसकुराहट दिखलायी और हाथ में ग्लास उठाकर ढाल ढाल देना शुरूअ किया ।

कुछ देरतक सन्नाटा रहा बीच बीचमे ग्लास का ठनका सुन पड़ताथा ।

जब दस पन्द्रह ग्लासोंमे शराब ढालकर रख दिया गया । तब “गुडहेल्थ” “गुडहेल्थ” “good health, good health” के साथ कई ग्लास खाली किये गये ।

मान लोगोंमें से कइयोंने शराब पीनेसे नाही की लेकिन यहाँ वह नाहीं कैसे चल सकती है ? जब गुरुदयालने अपने हाथ ग्लास भरभरकर उनके आगे पास दिया तब उनको नही करते नही बना ।

अब गाना शुरू हुआ । घिनहू हारमोनियम लेकर बैठ गये । घुरहूने बायें तबलेका सङ्ग दिया घिराऊ टुनटुनिया वाले बने । बीबी ने आलापा था ।

“भरदे भरदे ! मेरा पियाला भरदे !”

उधर ग्लास भरा ही जाता था मौकेकी भीत सुनकर "सुभान अल्लाह"। "जीती रहो!"

"शाबास बीबी शाब्बाश" की आवाजसे आस्मान फटने लगा।

देखते देखते एक बजा। अहार की बात कौन कहे अभी नहानेका भी चरचा नहीं। नौकरोंमें भी बड़ी नाराजी फैली। रसोइया बाबा खुद पीरूमियाँ (!) ने आकर कहा कि खाना सब ठण्ढा हुआ जाता है।"

घिराऊ सुनते ही लाल पीले हो गये और घूरकर कहने लगे "चला जा यहाँसे गवाँर कहीं का नालायक! हम लोग क्या तेरा कलिया पोलाव खाने आये हैं? नहीं देखता यहाँ राजा इन्दर का अखाढ़ा लगा है परियोंका ठट्ठ छोडकर हम लोगोंको खाना अच्छा लगता है? जब इस सभासे छूटेंगे तो कालिया पोलाव भी देखेंगे। तू हम लोगोंका नौकर है कि हम लोग तेरे नौकरहै?"

सब "हाँ, हाँ! हाँ, हाँ! कर के उठ खड़े हुए। और घिराऊको रोका। गुरुदयालने कहा—

"अरे पीरू! तुमने जो जो तैयार किया है सो सब यहां लावो।"

"जो हुकुम खुदावन्द" कहकर दाढ़ी हिलाते हुए पीरूमियाँ वहाँसे चले। और थोड़ी ही देरमें खाना वहाँ लाकर सजाया जाने लगा। इधर यारोंमें से कितने जमीन पर बेहोश पड़े थे। उनको उठने की ताकत न होनेके कारण ऐसे श्रद्धाके खानेकी लज्जत न पासके। लेकिन सुन्दरियोंमें नशाका बाजार वैसा गर्म नहीं था। क्योंकि ऐसे मौकोंपर वह बहुत नशा नहीं करती। बाबू लोगोंको मतवाला बना देनाही उनका मतलब रहता है। वह नशेमें मतवाली नहीं थीं लेकिन पीरूके हाथका बना हुआ होनेसे वह अनेकोंको नसीब नहीं हुआ। केवल गुरुदयाल और दो एक उनके पहुँचे यारोको वह प्रसादी नसीब हुई। अन्तमें वह सब कुत्तोंके पेठमें गया। इसी तरह बागका पूर्वार्द्ध जलसा खतम हुआ।

शामको उत्तरार्द्धका नम्बर आया। गुरुदयाल नींदसे उठ पड़े हैं अब औरोंको भी सोनेका हुक्म नहीं है सब खोद खुदाकर उठाये गये। सन्ध्या होनेसे रोशनी कीगयी। फूलके गजरे रक्खे गये।

देखते ही देखते किसीके हाथमें किसीके गलेमें किसीके शिरपर किसीके हैटपर मालाएँ सुशोभितहुई। समाजियोंने सुर मिलाना शुरूअ किया। टुनटुन् धिनक धिन्ना और हूँ हाँ करके सुर मिलाया गया। इधर ग्लास और बोतलें भी पहुँच गयीं।

उस्तादने तबले पर हाथ रगड़ा, टुनटुनियाँ उसके साथ चलने लगा। सारं-

भी उनुनाने लगी। जान लोगोंने थिरकना शुरूअ किया। आनन्दका फव्वारी छूटा। हँसी दिल्लगीकी चिलमपर आग रक्खी गयी दमके साथही भक्कहो लहर उठी।

इसी तरह डेढ़ घंटेतक नाच होती रही। अब गाना शुरूअ हुआ। सब मानो सुखके समुद्र में बहने लगे। सब लोगों ने समझा कि, वह गुरुदयाल के बाग मे आज स्वर्ग के नन्दनवनका सुख भोगरहे है। दोपहरको किसीने आहार नही किया था। पेटकी अँतड़ियाँ सूखचली थी लेकिन शराब के बलसे अबभी फुर्ती बरकरार है।

लेकिन वह फुर्ती कबतक रहसकती है। खाली पेट में नशाने चौगुना जोर किया अब ग्लासो का टूटना शुरूअ हुआ। बहुतों के उठाते धरते हाथ से खून चलने लगा। अब गाना बजाना अच्छा नही लगता फुर्ती के फव्वारेका मुँहभी बन्द हुआ। अब रण्डियों के लिये विवाद का सूत्रपात और और वह बातों से बढ़कर धीरे २ हाथोंतक पहुँचा।

उसवक्त सभी पागल थे कोई किसी की कुछ नही सुनता। न किसी को कुछ मानता है मतवालेही का ठट्ठहै. यहाँतक कि, नौकर भी सब मतवाले हो उठेहै। अब यह झगड़ा और मारामारी मिटाने वाला भी कोई नही था। धीरे धीरे घर के झाड, हंडियाँ, ग्लास और आइनों के टूटने का नम्बर आया। किसी की खोपड़ी फूटी। किसीके हाथ कटे लेकिन तौभी होश नहीं हुआ। सब बेखबर पडे रहे। इधर उस्तादोंने बाबुओंकी घडी, चेन, अँगूठियाँ जिसके पास जो कुछ किस्म पाकिट तक टटोल निकाला और जान लोगों को साथ लेकर रफू चक्कर हुए। इधर बाबूलोग जमीन में लोटन कबूतर होनेलगे।

चौथाअध्याय।

सबेरेही गुरुदयालको नींद तोडने की नौबत आयी। एक नौकरने आकर कहा—" मालकिन् ने न जाने क्या खालिया है। वह बेहोश पडी है आँखें उलट गयी है। किसीको पहँचान नही सकती "।

सुनतेही गुरुदयालके होश ठिकाने हुए। पाठक! मालकिन से और कुछ नही समझना वही बालिका अभागिनी बेनीसे मतलब है। गुरुदयाल का शरीर भी ठीक नहीं था लेकिन इस खबरसे उन्हें काठ मारगया। थोडी देरतक ऐसा रहने के बाद आप सब यारोंको छोडकर उठे। घर आकर उन्हों ने जो दशादेखी तो अवाक् होरहे। मुँहसे बात नही निकली।

देखा तो बेनीका कण्ठ बन्द है आँखें तर ऊपर होरही हैं । अब मरे कि, तब मरे केवल कालका आगम देखती है । मुखकी आकृति बिगडगयी है । कुछ होश नही है । कोई उसके मुँह में पानी देनेवाला भी नहीं है । कोई दवा दारू की फिकर नही करता । गुरुदयालने अपने कानों सुना उससमय भी उनकी बडी बहन चम्पा गरजकर कहरही थी'—" अरे मुँहभरी । मरना है तो मरभी नही जाती सबको नाहक डाँवाडौल कर रही है । मरजाय तौ भी छुटकारा मिले हम अपने भाईका और व्याह करलेंगी " ।

ऐसी दशापर चम्पाका इतना जुलम अपनी आँखोसे देखकर गुरुदयालको बेनीपर दया आयी । ऐसीदशामें भी जिसको दया न आवे वह तो आदमी नहीं पत्थर है ॥

दयाके साथहीसाथ गुरुदयालका चम्पापर खूब कोप बढ़ा । उसने जर्जरहोकर कहा—" अरे बहन । तू तो बडी चाण्डालिन है ! तुझे क्या परमेश्वरका कुछ भी डर नही है ! अरे डाकिनी । तेरा हियातो पत्थर से भी कठोर है साफ देखती वह मरीजाती है तबभी जलेपर नमक लगारही है । पिशाचिनी कही की तेरीही करनीसे तो इसने अफीम खाली है और तूही तो इसके मरनेका कारण है, धिक्कार तेरी अक़ल को " ।

चम्पाने जिन्दगीमें गुरुदयालसे ऐसी बातें कभी नहीं सुनी थीं । फिर आजकी ऐसी बातें कैसी उसे लगी होगी सो और लोगभी आप समझ सकते है ।

गुरुदयालकी बातें सुनते ही मारे क्रोध के वह बेसुध होकर चिल्ला उठी । और गुरुदयालपर बकने लगी "अरे तू मुझे ऐसी बात कहताहै तू मुझे चाण्डालिनी पिशाचिनी बनाता है । अरे अभागा । तू अब बापके मरनेसे इतना ढीठ होगया ।

तेरा कलेजा ऐसा बढ़ा । तू मेहरके वशमें होके इतना दिमाग करताहै । तूने लाज शरम सब धोकर फेक दिया है । क्या बाबाने इतना रुपया लगाकर इसी वास्ते पढ़ाया लिखाया था " ।

लेकिन गुरुदयालने उसकी किसी बातका जबाब न देकर अपने हाथसे बेनी के मुँहमें जल देना शुरूअ किया । इतनेमे मोतीलाल डॉक्टर लेकर पहुँचे । उन्होंने नाड़ी देखकर वह दवा दी जो घरसे बनालाये थे । दवा बडीही कठिनतासे मुँहके भीतर उतारी गयी । जाते समय वह कह गये " हमको बहुत देर करके बुलाया गया है । अब रोगीके बचनेका हम भरोसा नहीं कर सकते । हाँ अगर

पाव घंटेमें इसको कय होजाय तो अलबत्ते रक्षा होसकती है । तब रोगीको उठाकर बिठानॉ । सोने न देना । फिर हमको हाल भेजना ।"

डॉक्टरकी बात सुनकर सब दुःखी हुए । लेकिन चम्पाके आनन्दकी सीमा नही रही । बेनीके मरजानेके लिये गङ्गाजीको पूजने और देवीको बकरा चढाने की मन्त्र की थी । वह घरसे भी न जाने कहाँ चली गयी । धूमावतीने बेनीको उठाकर बिठाया । उसकी आँखोंमें आँसू भी देखा गया मोतीलालने उसको इस बारेमें बहुत उपदेश दिया था गुरुदयालका दिल भी आज बेनीके लिये दुःखी हुआ । अब सब उसकी सेवामें लगे हैं ।

भाग्य की बात है, बेनीको थोड़ी ही देरमें एक कय हुई । कय साधारण ही थी लेकिन् बेनीकी हालत उसीसे बहुत कुछ सुधरी । सबको उसके बचने की आशा होगयी ।

मोतीलाल को बेनीके लिये सब से अधिक दुःख है क्योंकि उसको जो कुछ पीड़ा पहुँचायी जातीथी वह अच्छी तरहसे जानते थे । लेकिन् उनका कुछ भी कहनेका इख्तियार नही था । अपनी स्त्री धूमावती का इसके लिये वह बहुधा तिरस्कार किया करते थे इसीकारण अब वह जाहिर बेनीको बहुत दुःख नही देती ।

आज मोतीलाल बेनीके लिये रोते है । जाँच करने पर सब से पहले उन्होंने इस सर्व्वनाश का कारण जानाथा । और इसी कारण एक आदमीको गुरुदयालके यहां बुलानेको भेजकर आप डॉक्टरके यहां दौड़े गये थे । अगर वह तदबीर न करते तो इस बार बेनीकी रक्षा नही होती ।

थोड़ी देर पीछे बेनीको फिर जोरसे एक कय हुई । डॉक्टरको खबर दीगयी । वह भी पहुँचे । नाड़ी देखकर उन्होंने कहा । "अब कोई डरकी बात नहीं है अगर खबरदारीसे हरघंटे दवा पिलायी जाय "।

वस्तुतःरोगीके बचनेका पूरा भरोसा होगया बेनीने थोड़ीदेरतक आँख खोलकर चारोंओर देखा । अब मानो वह बेनी नही थी । अब उसको वैसी लज्जा नही थी । इतनेमें मोतीलाल दवा पिलाने दौडे । बेनीने पीना ना मंजूर किया । मोतीलालने कहा—" पीलो, पीलो दवा पीलो । बिना पिये आराम कैसे होगी ?"

बेनी आंख फाड फाड मोतीलाल की ओर देखने लगी । ओठोंपर उसके हँसीकी रेखा दीखपडी । सबलोग इसबातसे विस्मित हुए । उन्ही ओठोंके हिलनेसे यह बात निकली—" मै आराम न हूँगी न आराम होना चाहती "

मोती०—"छिः ऐसीबात कोई कहता है ?"

बेनी—"बातक्या मेरा मरनाही अच्छा है मै तो ...."

बेनी कुछ और कहना चाहती थी लेकिन कह न सकी । आँखोंसे आँसू बह चला । मोतीलालने आसू पोंछादिये । बालिकाने रुकते कण्ठ और गद्गद स्वर-से कहा—"भायेलोग हमारे मरने में कोई रोक टोक मत करो । हमारे मनमें जो सरधा है उससे हमको निराश मत करो " !

मोतीलालने फिर प्रबोध धरके कहा—" बेनी ! तू अभी मरनेको क्यों तैयार हो रही है । तेरा ऐसा स्वामी, ऐसा सुखी संसार सबको छोडने पर क्यों उतारू होरही है ? "

बालिका का शोकसिन्धु मानो उथल उठा । दुःख के मारे अस्थिर होने लगी । मुँहसे बात नहीं निकलती । गालों पर आँसूकी नदी बह रही है । बातों का जवाब वह जीभसे कहाँ देसकती है । धीरे धीरे उसने अपना हाथ कपारपर रक्खा । बस इसी से सबका जवाब होगया ।

उस जबाब से सबको व्यथा हुई । मोतीलाल भी रो उठे । और भारी कंठसे गुरुदयाल को बोले— " भाई । अगर सच पूछो तो तुम्ही इस सर्वनाशकी जडहो । बेनी सदा तुम्हारी चढ बाँक बहनों का जुलम सहती आती थी कभी उसने उनकी बात नहीं दुहराई लेकिन न तुम्हाराही निरादर उसको सहा नहीं गया अब जब तक तुम आदर न करोगे तब तक वह किसीके कहने से दवा नहीं खायगी । अगर तुम अभी ठीक तौर से बात नहीं करते हो खडे खडे स्त्री हत्या का पाप तुमपर चढता है हम कहे देते हैं । "

इतना कहकर मोतीलाल कुछ दूर खडा हुआ । गुरुदयाल का दिल कुछ पत्थर से तो बना नहीं था । वह अब स्थिर न रहसके । विषण्ण मन हो स्त्रीसे पूँछने लगे । " क्यों क्या हमारेही अनादरसे तुमको इतना दुःख होरहा है ? "

बेनी अब लज्जावती बालिका नहीं है । इतने आदमियोंके आगे अपने हाथसे आँसू पोंछकर बोली—"वह दुःख आप नहीं जानते थे इसीसे आजतक मेरा म-रना नहीं हुआ था । जहर खानेके पहले ही हमारे मनमें इसी दुःखकी बातें आयी थीं । स्त्रीके लिये जगत्में इससे बढ़कर कोई दुःख ही नहीं है । आज आपको यदि मै अपने मनका दुःख समझा सकूँ तो मै और कुछ नहीं चाहती । बस मरजानाही हमारे लिये सबसे जादे सुखकी चीज है ।"

इस बालिकाने इतनी बातें कहाँसे सीखीं । सब सुनकर विस्मित और अवा-क् हुए । गुरुदयालने सपने में भी यह बातें नहीं सोची थीं । लेकिन स्त्रीके मुँहसे आज इतनी बातें सुनकर उनको वैसा आनन्द नहीं हुआ । अबतक वह समझते

हैं कि, बेनीहीके कसूरसे उन्होंने अपने उज्ज्वल आचरणमें काली लगायी है। उन्होने कहा—"अच्छा अब जो हुआ सो हुआ तुम दवा खाव।"

इतना कहकर गुरुदयाल दवा का ग्लास स्त्रीके मुँहके पास लेगये। बेनीने काँपते २ कहा—

"तुम्हे देखनेपरभला मुझे मरनेकी इच्छा हो सकती है। तुम हमारे साक्षात देवता हो। तुम्हारी बात मै टाल नही सकती।"

इतना कहकर बेनीने दवा पीली गुरुदयाल जमीनकी ओर देखकर बोले—"आत्महत्या महापाप है जो अपनेसे आपको मार डालता है वह जरूर नरक जाता है।"

बेनीका मुँह आज खुला है। किसीने इसके पहले उसे इतनी बातें कहते नही देखीथी। बेनीने फिर कहा—"लेकिन जो पापिनी स्वामीके सुखसे वञ्चित है। आत्महत्याका पाप क्या उसके लायक नही होगा?"

आज कोई बेनीका जबाब नही दे सकता। भीतर ही भीतर बालिकाका जी मारे दुःखके जल गया था। उस जले दिलमें आज एक बूँद पानी पड़ा है। जो स्वेता इतने दिनोंमें बन्द था आज उसका अकस्मात् बाँध टूटा है। जिस फव्वारोंका इतने दिनोंसे मुँह बन्द था आज उसे अकस्मात् किसने खोल दिया है। बेनीके जीवननाटक का आज एक नया अङ्क शुरूअ हुआ है। इसी तरह उसने स्वामीके आगे मनकी बहुतसी सञ्चित बाते खोल डाली। तब गुरुदयालने समझा कि, बेनीका इसमें कुछ कुसूर नही है! सब दोषोकी जड सब गुनाहोंका घर वही उनकी गर्वगुणालङ्कृता बहन चम्पा है।

बेनी अबकी कालके गालसे बची लेकिन चम्पाके चाण्डालपनसे न बच सकी। चम्पाने बेनीको भीतर ही भीतर सतानेकी कई नयी तदबीरे निकाली। लेकिन असहायोंके जो सहाय हैं, दुर्बलोंके जो आधार हैं, अनाथोंके जो नाथ हैं वही सर्व्वविपद्भयभञ्जन भगवान् जब बेनीपर ऐसे दयालु हुए हैं तब वह सब बातें छिपी नही रहती। क्योंकि अब धूमावती भी बेनीका सहाय करती है।

हररोजकी एक एक बाते अब गुरुदयालके कानोंतक पहुँचने लगी। लेकिन गुरुदयाल बातोसे बहनको इस विषयमें कुछ नही कहते। चम्पा स्वभाववश भाईको उनके परोक्षमें बहुत कुछ बका करतीथी। एक दिन नाराज होकर

गुरुदयालने स्त्रीको उसके पहुँचानेका इरादा किया और उसी दिन बेनीको भी बतलाया ।

गुरुदयाल का चरित्रदोष अबतक गया नही था । यह रोग ऐसा है कि, इसका जल्द छूटना असम्भव होता है । सारीरात गुरुदयाल घर नही रहते तौ भी अब बेनीके साथ एकान्त मुलाकात होनेका मौका आया करता है । और उस समय उसके साथ अच्छा व्यौहार भी करते हैं । बेनी इसीसे आनन्दमग्न थी । ऐसे ही एकान्त में स्वामीके मुँहसे वह बात सुनकर बेनीने कहा—

" तुम हमारे वास्ते अपने बहन से क्यों झगडोगे । उनकी बातो से अब हमको दुःख नहीं होता तुमको दिनमें मैं एकबार भी सदा देखने पाऊं तो उनके ऐसे सौ ननँदका दुःख भी मै फूलसा सह सकती हूं । मै नैहर नही जाना चाहती.

गुरुदयाल ने बेनीकी बात सुनकर कहा " हाँ प्यारी ! तुम्हारी यह गंभीर प्रणयकी बातें उस वक्त कहाँ थी जब मैं तुमसे एक भी मीठी बातें सुननेको तरसता था । इस समय अपने दुर्बल और कलङ्कित हृदयमें तुम्हारे उस सच्चे स्नेहकी धारणा क्या कर सकता हूँ ? मै कितनाही तुम्हें चाहता हूँ तुझमे प्रेमकी चेष्टा करता हूँ लेकिन मेरा एक नही चलता इसीसे तुम्हें पहले गाजीपुर भेजकर पीछे मेरा वहाँ आनेका इरादा है इसीसे तुम्हें भेजता हूँ ।"

बेनीके गालोसे आनन्दाश्रु टरकने लगे । बालिकाके नसीबमें क्या ऐसा सुख है ? बेनीके मनमें एक बात आयी । उसने करुणास्वरसे काँपते काँपते कहा—"तो तुम हमको साथही ले चलो जहाँ तुम हमारे साथ रहोगे हमारे वास्ते वही बैकुण्ठ है ।"

गुरुदयाल चिल्लाकर बोलउठे—" मैं जहाँ वहां बैकुण्ठा ऐसा नही ! यह बात सरासर झूठी है । जहा मै वहाँ ही नरक है ? मै नरक का कीडाहूं । मेरेसमान नारकी कौन होगा ! "

बेनी—" नही नाथ ! हमको विश्वास है तुम्हारे बिना हमें कभी स्वर्ग होही नही सकता । वह स्वर्ग कैसा है यह हमारे मन में नहीं आता । अगर तुम्हे छोड़कर कोई बैकुण्ठ है तो मै चिल्लाकर कहती हूँ वह बैकुण्ठ मुझे नहीं चाहिये । मै तुम्हारा नरकही चाहती हूँ ।"

गुरुदयाल अवाक्—है । उसे काट मार गया है, मुँहसे बात नही कह सकता. कुछ देरतक चुपरहकर बोले—प्यारी । तुम जानती नही हो ! मै और जगह फँसाहूँ । रण्डीके यहाँ जाना मेरा रोजका काम है । मै खुद अपने काम से घिनाता हूँ । तुम क्या ऐसे स्वामी से नहीं घिनाती "

बेनी—" प्रभो ! तुमको जिस दिन मै घिन करूं उसके पहले ही मेरी मौत हो जाय यही मेरी प्रार्थना है। तुम्हारी हजारों दासी हों उन में से एक मुझेभी समझो बस इसीमें मुझे बहुत सुख है । मैं तुम्हारा यह सब दोष देखना नही चाहती। न कोई मुझे वह सब दोष दिखाने आता। जिस दिन दोष देखने की इच्छा हो उसी दिन परमेश्वर मुझे अन्धा करदे।

तुम्हारे मुँहसे जो मैने सुना है मै इससे और नहीं आशा करती। किन्तु तुमको जो मैने साथ ले चलनेके लिये निवेदन किया उसका कारण और है। हमारे माबाप तुमको देखनेके वास्ते व्याकुल है । वह बहुत गरीब है। तुमको बुलाने की उनको सामर्थ्य नही है। तुम हमारे साथ चलोगे तो वह आनन्दमें मग्न हो जायँगे।"

गुरु०—"स्त्रियोंका प्रणय इतना नि:स्वार्थ हो सकता है यह हमको विश्वास नही था। लेकिन प्यारी! तुम इसकी कुछ चिन्ता न करो। तुम्हारे जाने के एक ही हफ्ता में पीछे आपहुँचूँगा । यहाँ बहुतसे कामोंका झंझट है । मै वहाँ कुछ रहनेका इरादा करताहूँ । यहाँ इन सब कामोंका ठीक किये बिना मेरा जाना कैसे हो सकता है ? "

खबरदार बेनी। खबरदार । तुम अपने खोये हुए धनको आँखोसे ओट नही करना लेकिन बेनी हमारी बात कहाँ सुनती है? उसने कहा—"तुम्हारे मनमें जो अच्छा लगे वह करो। मै तुम्हारी तरह सब बातें तो समझ नही सकती।"

सरल हृदया बालिकाने सरल मनसे सब बातें कही। वह स्वामीकी अनुमति पाकर प्रसन्न चित्तसे मायके चली गयी। लेकिन कौन जानता था कि, इस घटनासे जहर निकलेगा।

पाँचवाँ अध्याय।

बेनीके मायके चले जानेपर चम्पाके कोप की सीमा नही रही क्योंकि इसके लिये एकबार भी उसको नही पूछा गया। चम्पाने ऐसी बेइज्जती जिन्दगीमें कभी नही सहीथी। उसकी इतने दिनोंकी बची बचाई महिमामे आज घटी लगी। उसके वह असाधारण गर्व्वका इतने दिनबाद खर्च हुआ।

चम्पा अपने हाथसे अपने पेटमें तलवार मार सकती है लेकिन इतना नही सह सकती। बेनीके जहर खानेके दिनसे चम्पाके पेटमें चूहे चौकड़ी भर रहेथे मनमें बड़ी भयङ्कर बाते भर रहीथीं, लेकिन उन भयंकर भावोंको वह जाहिर नहीं करतीथी।

चम्पा एकदम चुप थी । तूफान आनेके पहले जैसे जगत्में शान्ति छा जाती है चम्पाने भी कई दिनोंतक बाहरका यही भाव रक्खा ।

जिस दिन वेनी अपने मायके चली गयी । उसी दिन इस शान्त भावका पहला अवतार था । पहले चम्पाका पितृशोक उथल उठा ।

बापका नाम लेलेकर बहुत देरतक रोती रही लेकिन पहलेकी तरह किसी ने उसे चुप नही कराया । केवल धूमावतीने एकबार चुपरहनेको कहा था । अब वह और कितनी देरतक रोती रहेगी । बिना चुपकराये ही यह आप चुपहोरही । फिर चम्पाने अपनारूप धारण किया । किसीको कुछ न कहकर बरतन भाँड़े और लोटा कटोरा फेंकना शुरूअ किया । चावल, दाल, तेल, नमक चारोंओर छीटने लगी ।

गुरुदयाल को यह सब बातें सही न गयी । उन्होंने मनमे सोचा चाहे जिस तरह हो इसका सब अहंकार चूर करना चाहिये । बिना इसकी तदबीर किये मङ्गल नही है । उन्होंने चम्पाको बुलाकर कहा—"देख तेरा यह सब काम अब हमसे सहा नही जाता ।"

चम्पा कोपकरके बोली—"अब तू हमको कैसे देख सकेगा ! अब तोतू स्त्री के वशमें हुआहै । उसने तुझे चितवदला खिलादियाहै । अबतो वही तेरे श्वशुर और वही तेरी बीबी है सब संसार अब तुझको बुरा लगता है उन मुँहजेरे मुहँजारियोंको पातीतो सात झाडू मारती ।"

गुरु०—"सुन रे देख तू मुझे चाहे जितनी गाली बक मेरी स्त्रीको चाहेजितनी बकाकर लेकिन गरीब सास श्वशुरको गाली देगी तो तेरा भला न होगा ।"

चम्पा—"अरे मुँहकरिखहा भडुआ ! लज्जा शरम सब धोके बैठा है क्या ? श्वशुर सास की ओर होकर हमसे लड़ते तुझे शरम नही आती तूक्या एकदम उन सबों का गुलाम होगया है । अरे ! तुझे उसने भेड़ा बनालिया है ! तो गलेमें फांसी लगाकर काहे नही मरजाता रे ।"

गुरु०—"मुझे तो फासी लगाकर मरजाना चाहिये । लेकिन उसके पहले तुझे मरना होगा । तूने मेरा सर्व्वनाश किया है । तेरीही करनीसे हमारा धर्म गया है । धन गयाहै । संसार मरघट हुआहै । सुख गया है । सब हमारी तेरी ही करनी से स्वाहा हुआ है । इससे पहले तेराही मरना अच्छा है ।"

चम्पा—"अच्छारे मुँहकरिखहा अच्छा ! तेरे घरमें मै आगलगा देतीहूँ जलजाय तेराघर मैं अभी जातीहूँ और देखतीहूँ कि मेरे जानेपर तू कैसा इन्द्रासन का सुख भोगता है ।"

उसीसमय चम्पाने उग्रचण्डीका रूप लिया और क्रोधकेमारे काँपती २ अपना सञ्चित अर्थ और कपड़े लत्ते लेकर सामने जो कुछ पाती नाशकरतीहुई घरसे बाहर चली गयी ।

उसवक्त सब अवाक् रहे । किसीने उसको नहीं रोका । किसी को उस प्रलयकारिणीके आगे आनेका साहस नही हुआ । उसदिन चम्पाका कुछ पता नही लगा । दूसरे दिन सुनागया कि, वह अपनी मौसीके यहाँ जाकर ठहरी है । उससे गुरुदयाल बहुत दुःखी हुए । अब वह अपना दुःख दूर करने की दवा करने को गुलाब के घर पहुँचे ।

वहां शराब का प्याला ढालने लगा यारोंका जमाव हुआ । फिर बेनीके कपारपर वज्र गिरा । एक हप्तेबाद गुरुदयालको सुसराल जानेकी बात थी । लेकिन् चार अठवाडे होगये आजभी गुरुदयाल बात पुरी नही करसके । बीच २ मे जब बेनीकी बात याद आती थी तब उसके लिये व्याकुल होते थे लेकिन थोड़ेही सेकण्डतक वह भाव रहता था । धीरे २ वह सब भूल गया । इसी तरह छः महीने बीत गये । गुरुदयाल का सुसराल जाना नही हुआ ।

धीरे २ बापकी कमाई खतम होने लगी । अपने रोजगारमें अब वह बात रही नही । रुपयेका तोड़ा पड़ा । अब धर्म अधर्मका ज्ञान नही रहा । रुपयेकी तङ्गी पडनेपर चञ्चलोंको क्या धर्मभय रहता है ?

जिस तरह हो, रुपये जो कुछ गुरुदयाल पैदा करते थे वह सब अपनी कुप्रवृत्तिमें फूँकते जाते थे । उनका मन जो कुछ थोडासा बदला था उस समय वह बेनीके साथ गाजीपुर चले जाते तो उनका सङ्ग छूट जाता और वह सीधी राहपर आसकतेथे लेकिन दैवसंयोगसे वह बात नसीब नही हुई ।

इसी तरह एक बरस बीत गया । धीरे २ गुरुदयाल अधोगतिकी सीमाको पहुँच चलेथे इतनेमें एक दिन सबेरे पुलीस वालोंने आकर गुरुदयाल का घर घेर लिया । देखते देखते एक इन्स्पेक्टरने तीन चार और मातहतोंको लेकर घरमें प्रवेश किया । गुरुदयाल और मोतीलाल उसवक्त बैठकेमें थे । मोतीलालने सहसा पुलीसके आनेका कारण न समझकर पूछनेके लिये बाहर आये । गुरुदयाल भागनेका मौका ढूँढने लगे ।

लेकिन पुलीसवालोंने दरवाजा आकर घेर लिया था वह भाग न सके ।

पुलीसवालोंने कर्कश स्वरसे पूँछा—

"गुरुदयाल मिसर और मोतीलाल पांडे किसका नाम है ?"

मोतीलालके पेटमें तो कुछ पाप नहीं था। उन्होंने निडर होकर कहा—"मेरा नाम मोतीलाल और इनका नाम गुरुदयाल है।

इन्स्पेक्टरने दो कागज निकाल कर दिखाया और कहा "तुम दोनों आदमियोंके नाम गिरफ्तारी वारण्ट है।"

मोतीलालने अकचकाकर पूछा—"किस कसूरमें ? कौन मुद्दई है ?"

इन्स्पेक्टरने कहा—"मुद्दई सरकार है। कसूर जाल करनेका है। तुम लोगोंने बङ्गाल बेङ्कके एक हजार रुपयेका चिक जालसे दस हजार बनाकर रुपया ले लिया है।"

इतनी देरतक गुरुदयाल चुपचाप थे। अब बोल उठे—"नहीं नहीं झूठ बात है वह चिक दसही हजार का था।"

इन्स्पे०—"सच झूठ सब फैसलेंसे जाहिर होगा इसवक्त तुम दोनों हमारे असामी हो हमने दोनोंको गिरफतार किया।"

मोतीलाल चुप रहा। गुरुदयालकी ओर देखकर उसको बड़ा सन्देह हुआ। आज एक हफ्ता हुआ। दस हजार रुपयेका एक चेक गुरुदयाल के नामका रसीद देकर वही ले आये थे। वह चेक जाल है या सच्चा इसका उनको उस वक्त कुछ सन्देह नहीं हुआ था। इस आकस्मिक विपदमें वह क्या करेंगे इसका कुछ कूल किनारा नहीं करसके। गुरुदयालके मित्रोंको खबर की गयी। लेकिन उस दिन कोई नहीं आया। सबने एक न एक उजर कहला भेजा।

असामियों को जिन्हे पकडा वह इलाहाबाद पुलीसके कर्म्मचारीथे इसलिये उन्हें पकडकर इलाहाबाद लेगये। दोनों असामी घरका कुछ प्रबन्ध न करसके न मुकद्दमा चलाने के लिये कुछ किसीके साथ ठीककरने पाये।

जब वह खबर भीतर पहुँची धूमावती का रोना आस्मान फाडने लगा। टेकू और मिठ्ठीलाल कुछ सुबोध होगये थे। अपनी आँखोंके सामनेही बाप और मा की विपद देखकर बहुत घबराये और उनके साथ जानेको तैयार हुए थे। उन्हें पकडकर उनका एक नौकर भीतर लेगया। जाते समय उसीको पुकारकर गुरुदयालने कहाथा कि, हमारे लिये कुछ फिकर न करना। लेकिन हमारा जो कुछ है सब बेचकर हमारे बहनोई को छुडाना।"

उसीदिन सैदपुरमें इसबातकी धूमपडगयी। गुरुदयालके घर उसदिन चूल्हे को ईंधन नसीब नहीं हुआ।

चौथा भाग।

पहला अध्याय।

पाठकों ने बहुत दिनोसे बिहारीलाल और उनकी स्त्रीका समाचार नही पाया इस अध्याय में हम उसीको कहते है—

जब आदमीके दिन अच्छे आते है तब उसका चारों ओरसे अच्छाही अच्छा होता है। और जब बुरेदिन आते है तब हजार तदबीर करो बुराही बुरा होता जाता है। सुशीलाने जो धानखरीदा था उसका भाव दूसर बरस पानी न बरस ने से दूना चढ़गया। सब लगभग दो हजाररुपये का लाभ हुआ।

अब पांडेजीके घर खर्च की किल्लत नही रही। नफामेंसे भी खर्च करके हरसाल कुछ बचने लगा। पूँजीमें भी हरसाल बढ़ती होती गयी॥

बिहारीलाल अब एक चतुर गृहस्थ होगये है। तौभी परोपकारका मौका पाकर नही चूकते अब उनका नशापानी सब छूट गया है। गांजा भाग, अफीम तम्बाकू सबसे अलगहै। अब यह बडे आदमियों के समाज में जाने आने से नही डरते। टोल महाल और दूरके महल्लोंमे भी वह एक माननीय हो गये है। छोटी बहू सुशीलाने भीतरही भीतर कई काम शुरूअ किये है। सब कामोंमें खर्च और आमदनीका हिसाब अपने हाथ रखती है। लेकिन स्वामीके अपमानका डर करके किसीको यह बात जताती नही थी।

बिहारीलाल को कुछ अहंकार नही था इस कारण स्त्रीके पास सब काम वह सीखते थे। और बिना उसकी सलाहके कोई काम नही करते थे।

सासको किसतरह सन्तुष्ट रखना चाहिये यह सुशीला जानती थी। इसीसे एक दिन भी उसके साथ हूँ टूँ नही हुआ था। खाली सासहीकी बात नही गाँवके छोटे बड़े किसीके साथ उसका विवाद नही होता किसके साथ कैसा व्यौहार करना चाहिये यह वह जानती है। इसी कारण वह सबको खुश रखती थी।

एक दिन दो पहरके बाद बिहारीलालने स्त्रीको पुकारकर कहा॰ "सुनो इस बार जो तुम्हारा गहना बेंचा गया है सो बनवालो खर्चा दो हम बनवा दें।

स्त्रीने हँसकर कहा—"काहे! गहना पहरे बिना क्या मै अच्छी नहीजान पड़ती है जान पडता है हमारा परमेश्वर का दिया हुआ हम तमको अच्छा नही लगता।

बिहा०—"नहीं, नहीं! इसवास्ते नहीं कहता तुम्हारा जो रूप है वही अच्छा है उससे हमको और नहीं चाहिये । लेकिन तुमने अपना गहना हमलोगोंके वास्ते बेंचा है इसीसे कहताहूँ ।"

स्त्री०—"हमारा जो रूपहै उससे तुम और नहीं चाहते तब हमको गहनेका काम नहीं है । गहना न रहनेसे क्या हमको नहीं पहँचानोगे ।

बिहा०—"वाह तुमको नहीं पहँचानेंगे तो किसको पहँचानेंगे । तुम हमारे सब सुखोंकी जड़ हो । तुम हमारी स्त्री ही नहीं तुम हमारी गृहलक्ष्मी हो तुम हमारी अन्नदायिनी, हमें शिक्षा देनेवाली, हमें मन्त्र देनेवाली, हमारी दक्षिण भुजा हो तुम्हें न चाहेंगे तो किसको चाहेंगे । "

बहूने तुरंत हँसकर कहा—" ओह यह सब बातें क्या कहने की है? मैं तो तुम्हारी कुछ भी नहीं केवल दासीहूँ । हां वैसी कहानियोसे नहीं हूँ कि जबचाहा तब झाडूमारकर बाहरकर दिया । जब हमतुम दोनों सुख दुःख विपत् समयके एकही धागेमे बँधे है तब हम तुमको एकहुए बिना कामही कैसे चलसकता है? तुम नीचेहो तो हाथधरकर अपने बराबर उठालेना हमारा कामहै मैंनीचे गिरूँतो हाथ देकर मुझे उबारना तुम्हारा काम है । हम तुम एकही है तो भी तुम बड़े और मै क्षुद्र हूँ । तुम ज्ञानी हो मै मूर्खा हूँ । तुम प्रभु हो मै दासी हूँ ।"

बिहा०—"तुम चाहे जो कहो लेकिन तुमने जो मेरा उपकार किया है वह मैं जिन्दगी भर नहीं भूल सकता ।"

स्त्रीके ओठोंपर हँसीकी रेखा वैसे ही दीखकर चली गयी जैसे बादलमें बिजली दौड़कर छिप जाती है । लेकिन् वह हँसी बिना अर्थके नहीं थी । उसने विषण्ण होकर कहा—"तो क्या मैंने उपकार किया है इसीसे मुझे प्यार करते हो स्त्री समझ के नहीं ? "

बिहारी—"नहीं नहीं प्यारी यह बात नहीं है । पहले मै तुम्हें प्यार नहीं करता था । किन्तु तुमसे डरता था । तुम्हारा नाम सुनते ही मेरी छाती धड़कने लगती थी । लेकिन जब तुम यहाँ आयी तब वह सब डर जाता रहा । और तुम्हारे साथ बात करनेको जी चाहा । लेकिन अब तो न जाने तुममें मेरा दिल कैसा बस गया है कि, एक छन भी तुम्हारे बिना नहीं रह सकता ।"

स्त्री०—"परमेश्वरकरे जिन्दगी भर मेरे बिना रहनेका मौका नहो ।"

इतनेमें बाहरसे "बिहारीलाल, बिहारीलाल" कहकर किसीने पुकारा । बिहारीलाल बाहर आये । लेकिन बिहारीलालके बाहर जाते ही जाते मालकिन

और बेनीने उस घरमें प्रवेश किया। बेनीका गाज़ीपुरमें मायका है यह हम पाठकोंको पहले बतला चुके है ।

मालकिनने आते ही जल्दीसे कहा—

"देखो बहू ! उस महल्लेकी रुक्मनियाँ को कैसा चानसा सुन्नर बच्चा हुआहै। हमारे मनमें बड़ी साध है कि तुम्हारी गोदमें भी वैसाही नाती देखकर मरूँ। तुम्हारी सब बातोसे मै सुखी हूँ।अब इसीके लिये गङ्गाजीसे मनाती हूँ।

बहू—"काहे माजी। क्या हमको लड़का नही है ?"

सा०—"अरे कहाँ तुमको कहाँ लड़का है ?

बहू०—"काहे ? टेकचन्द और मिहीलाल क्या हमारे पराये हैं ?"

सा०—"वह सदा जीते रहें वह तुम्हारे लड़के तो है सही लेकिन तुमको वह मा कहके तो नही पुकारेंगे ?"

बहू —"अगर माकहके पुकारनेकोही लडके की जरूरत है तो नफरचन्द मौजूद है ।

छोटी पतोहूकी बात सुनकर सास बहुत खुश हुई। और "अच्छा नफरसे यह बात कहूं"। कहती हुई वहाँसे चली गयी । मालकिन नफरको बहुत चाहती थी। मालकिन अब वह मालकिन नही है। आंखो से आसू को झरन बहुत दिनोसे बन्द है। जीभका मशीन भी अब दिनरात नही चलता। आज कल उनके मुँहकी शोभा भी फिर गयी है । अबकी मुखश्री आनन्दमयी है।

मालकिन के चले जानेपर छोटी बहूने बेनीसे कहा—" काहे बहन। आज इतनी उदास क्यों हो! बेनी जबसे मायके आयी है तबसे सदा छोटी बहूके घर आती और मनकी सब बातें उससे कहती थी। बेनीने लम्बी साँस लेकर कहा—"नजाने क्यों बहन आज सबेरेसे हमारा मन बड़ा व्याकुल है। कुछ भी अच्छा नही लगता। इसीसे तुम्हारे पास आयी हूँ। काहे बहन। मनमें ऐसा क्यों होता है ?"

बेनीकी आँखोंमें आँसू आये और बूँद बूँद होकर गिरने लगे । बेनी ने मुँह फेर लिया। छोटी बहूको इससे बड़ा दुःख हुआ। लेकिन वह भाव छिपाकर मुसकुराती हुई बोली—" गुरुदयाल नही आये है इसीसे तुम्हारे मन में ऐसा होरहा है क्या ? लेकिन बहन! तुमतो उनको देवताकी तरह ध्यान करके पूजती हो नही आये तो क्या हुआ तुम वैसेही ध्यान करो । देवताको क्या हमलोग पापदृष्टिसे देख सकते है ?"

बेनी—" काहे भौजी। स्वामी देवता नही है ?"

छोटीप०—" स्वामी देवता है लेकिन इस देवताकी मनहीमन में पूजा करने से सन्तोष नही होता । उसके साथ साक्षात् सम्भन्धकी जरूरत है । लेकिन तुम्हारा विचार ऐसा नही है। इन देवताओं के चरित्रकी ओर निगाह नही रखनेसे बहुधा देवदर्शन नही होता । इसीकारण मनमें न जाने कैसा होता है ।'

बेनी—" लेकिन भौजी ! चरित्र देखनेका काम क्याहै ?"

छो०प०—" दर्शन करनेका जब काम है तब उसे भी देखना दरकार है। और जब दर्शन दरकार नही तो कुछ जरूरतही नही है । तुम्हीकहो बहन गुरदयालको देखेविना तुम्हारा मन कैसा दुखता है कि नही ?"

बेनीकी दोनोंआंखे फिर भीगगयी । दो एक बूंद आंसू निकल आये । उन्हीं मोतीसे झलकदार आंसुओंने छोटी बहूका जवाब देदिया । मुँहसे कुछ न कह सकी । भौजीने अपने आँचरसे बेनीके आंसू पोछे । बेनी धीरजधरकर बोली—"काहे भौजी ! प्राणदेनेपर भी एकबार इसवक्त दर्शन मिल सकता है कहते कहते बेनी ऊँचेस्वरसे रोउठी । भौजीने उसे समझाकर कहा—"रोवोमत बहन ! तुम्हारी जैसी सती कभी दुःख नही पासक्ती । अपने स्वामीको वेश्यासे प्रेम करते देख भी जब तुम दुःखी नही होती । घोर पाप करनेपर भी स्वामीको तुम देवता समझकर पूजती हो तब जगतमे तुम्हारी पतिभक्तिकी बराबरी नही है । ऐसी पतिभक्ति जिसमें है उसको विधाता पतिसुखसे दूर नही रख सकते । तुम हमारी बात गाठ रक्खो दो दिनबाद हो चाहे दोमहीने बाद हो तुम्हारे स्वामी तुम्हारे ही होंगे । लेकिन नसीबने जो कर्म कष्ट लिखाहै उसे सहनाही पडेगा ।"

भौजीके इन बातोंसे बेनीको बहुत कुछ सन्तोष हुआ । इतनेमें बिहारीलाल हाथमें एक चिट्ठी लिये आपहुँचे । चेहरेपर उदासी छायीथी । आंखें धँसआगयी थी । रूप देखतेही ताडकर स्त्री ने पूछा—" काहे ! इतना उदास क्यों हो ? सब अच्छा तो है !"

बिहारीलालने इसका कुछ जवाब नही दिया चिट्ठी स्त्रीके हाथमें देकर एक लम्बी सांसली और वहीं बैठगये । स्त्रीने कापते २ मनहीमन चिट्ठी पढ़ना शुरुअ की. उसमें लिखाथा श्रीचाचाजीके चरणोंमें निवेदन है कि, यहाका समाचार भला चाहिये । यहाका क्या लिखूँ । आज पुलीसवाले हमारे बाप और मामा को पकडकर लेगये हैं । सुनते हैं किसी जाल के मुकद्दमे में उनको आसामी बनाया है और उनको लाटसाहीमें पकड़कर प्रयागजी ले गये है । यहाँ हमलोगोंके पास न रुपया है न कोई मदद देनेवाला

आदमी है। हम लोग अभी लड़के हैं। हमारे जो कुछ हैं सो आप हैं इसीसे खबर देता हूँ जो मुनासिब जानना सो करना और पूरा हाल यह चिट्ठी ले जानेवाला कहेगा। ज्यादे शुभ—

आपका लड़का टेकचन्द।

मामीको भी यह खबर देना और उनके बापको यहाँ भिजवा देना।

चिट्ठी पढ़कर छोटी बहू बहुत घबरा गयी लेकिन वह सब भाव मनहीमें छिपाकर बोली—"यह किसी लुच्चेकी बदमाशी है। धर्म्मका जय सदा होता है। कचहरीमें सब फरिया जायगा। इसके वास्ते घबराना नहीं चाहिये। जो आदमी चिट्ठी लाया उसको बुलाना चाहिये तो और हाल जाना जाय।"

बिहारीलाल बाहरसे उसको बुला लाये। अबतक बेनी चुपचाप यह सब सुनती थी। उसके मनमें जो दुःख था उसीसे उसकी बोली बन्द हो रही थी। वह अबतक नहीं जानती कि, उसके सर्वस्व धन पुलीसके हाथसे गिरफ्तार हुए हैं। उसने अबतक इतनाही समझा है किसीएक आदमीपर निपत पड़ी है। लेकिन चिट्ठी लानेवालेको पहँचानकर वह रो उठी। वह भी बेनीको देखकर रोने लगा। और रोत २ सब हाल कहगया।

बेनीने पहले सब बातें चुपचाप सुनी। फिर एक लम्बी साँसली। और उसके साथही मूर्च्छित हो पड़ी।

दूसरा अध्याय।

बड़ी बड़ी तदबीरोंसे बेनीको होश आया। छोटी बहूने उसे बहुत कहा और समझाया—

"अगर उन्होंने कुसूर नही किया है तो कुछ डरकी बात नहीं है। जब इलाहाबादमें मुकद्दमापेश होगा तब मैं उनको बचानेकी तदबीर करूँगी और भरोसा है हमारी तदबीर कारगर होगी।"

सब लोग अवाक् होकर छोटी बहूकी ओर देखने लगे बिहारीलालने लम्बी साँस लेकर कहा—

"तुम स्त्री जाति हो तुम क्या इसमें तदबीर करोगी?"

स्त्री०—"काहे? स्त्री होनेसे क्या कुछ तदबीर नही कर सकती? यह बात सही है कि, हम लोग पुरुषोंसे कई कारणोंसे बलहीन है लेकिन बलहीन होनेसे क्या विपदके समय उससे उद्धार होनेकी तदबीर करनेलायक नही हूँ?"

बिहारीलाल स्त्रीके निकट मस्तुत होकर बोले—

"मैं तुम्हारी बुद्धि और शक्ति सब जानता हूँ, लेकिन इस विपतमें क्या करोगी सो मैं नहीं समझ सकता ।"

विपत पड़ती है तो तुम सब बातें भूलजाते हो ? हमारे मामा इलाहाबादमें बड़े वकील हैं क्या यह तुमको याद नहीं है ! मैं उनके जरिएसे इसमें इन लोगों के बँचाने की तरकीब करूंगी । मेरे गये विना काम नहीं बनेगा । मैं खुद कल प्रयाग जी जाऊंगी ।"

इतनेमें सास वहां आपहुँची । वह पुत्रकी यह दशा सुनकर बहुत व्याकुल हुई । और चिल्ला चिल्ला कर रोनेलगी । बहुत दिनोंसे मालकिनको किसीने रोते नही देखाथा ।

छोटी बहूने सास को बहुतसी बातें कहकर समझाया । जब उन्होंने सुना कि, मुकद्दमेमें तदबीर करनेके लिये वह इलाहाबाद जाती है तब उनके मनमें विश्वास होगया कि, इसका फल अच्छा होगा । बिहारीलालको विश्वास नहीं आ । बेनीको लोगोंने बहुत समझा बुझा धीरज देकर घर पहुंचाया ।

दूसरे दिन बिहारीलाल स्त्री सहित प्रयाग पहुँचे । मामा के डेरेका पत्ता छोटी बहू को मालम था । स्टेशनसे बाहर आते ही एक्केपर सवार होकर वहांको रवाना हुए । थोडी ही देरपर वकीलके डेरेपर एक्का आपहुँचा । अतवारका दिन था । वकील साहब घरहीमें थे सामनेही भाँजी को स्वामी सहित देखकर बहुत प्रसन्न हुए । दण्ड प्रणाम के बाद आगमनका कारण पूछनेपर सुशीलाने कहा—" मामा ! हमपर बड़ी विपत्ति पड़ी है । हमारे जेठ और उनके सालेको पुलीसवाले किसी मालके मुकद्दमेमें पकड लाये है । इसीसे तुम्हारी सहायता लेने आयीहूँ । अब हमारे इस दुःखका दूर करनेवाला कोई दूसरा नहीं है । तुम्ही इस दुःखसे उद्धार करो । "

मामाका नाम हरबंशपाण्डे था । उन्होनेहाल सुनकर सन्तोषदिया और कहा " तुम इसतरहसे क्यों कहतीहे । तुमपर विपत है तो हमपर भी है इसके लिये हमसे जहांतक होगा उनको बँचाने की फिकर करेंगे ।"

उसीदिन पुलीसमें जाकर उन्होंने सबहाल जाना । दोनों असामियोंको जमानत छुडानेकी तदबीर करने लगे लेकिन यह सब तदबीरें व्यर्थ हुई । खुद यह जमानत देनेपर तैयार हुए तौभी मैजिस्ट्रेटने उन्हें नहीं छोडा । लेकिन मुकद्दमेमें वह अच्छी तरह पैरवी वगैरहका बन्दोबस्त करसके इसका कार्यावक दिया ।

मुकद्दमा शुरूअ हुआ । पहले बंकके दो तीन अहलकारोंके इजहार हुए जिन्हें

ने चेक दिया था । उनके इजहारसे इतना साबित होगया कि, मेजिस्ट्रेटने मुकद्दमा सेशनमें भेजनेकी राय जाहिर की हरवंशपंडिने मुकद्दमेका हाल समझ बूझकर सेशनजाना अच्छा समझा । सेशन खुलनेको दोहीदिन बाकीथे इसलिये असामियोंको हाजतमें बहुत झलना नही पडा ।

सेशनमें मुकद्दमा चला फिर उन्हीं के इजहार हुए जिनके पहले होचुके थे । पुलीसवालोंके इजहार हुए अबकी हरवंशपाण्डेने अपने एक दोस्त बेरिस्टरको बहसके लिये खडाकिया था ॥

बेरिस्टरके जिरहसे सभी गवाह टल्लमल्ल हुए । सबको फेरफार कर बेरिस्टर ने गोलमाल किया । असामीकी ओरवाले सब खुशहुये ॥

जुरियोंके मनमें उन दोनो को बेगुनाह कहनेकी धारणा होही रहीथी कि, गुरुदयालने जज्जको सम्बोधन करते अङ्गरेजीमे यह जो कहा उसका अर्थ हम नाचे लिखते है ॥

धर्मावतार जज्ज और जूरीगण आपलोगोंसे हमारा एक निवेदन है आप लोगोंके आगे बेगुनाह होने पर भी मै बेकसूर नही हूँ । हमारे विज्ञ कौंसली ने आपकी आँखोंमें धूलडाल दिया है लेकिन ईश्वरकी आँखमें वह धूल नही दे सकते । मै खुद मंजूर करताहूँ मैने यह अपराध किया है, लेकिन यह मोती-लाल बिलकुल बेगुनाह है ।

इसको बेकसूर दु ख दिया गया है । मैने जो चेक भँजानेके लिये इसे दिया था उसको भँजाकर सब रुपये हमको लादिये थे । यह उसमें और कुछभी नही जानता था । इस कारण इसमें जो कुछ सजाहो सो हमको होना चाहिये गुरुदयालसे इतना सुनकर सब स्तम्भित हुए । बेरिस्टरके सिरपर मानो बिजली गिरी । उन्होंने गुरुदयाल को दोतीन बार चुप रहनेका इशारा किया लेकिन वहाँ तो पापगर्दनपर सवारथा । अन्तमें दूसरी बार बेरिस्टरने उठकर जो स्पीचदी उसका मतलब यों है ।

" असामीका मगज खराब होगयाहै । उसने अभी जितनी बातें पागलपनकी कही है वह ध्यान देने लायक नही समझना चाहिये । क्योकि पुलीसका अनादर और अत्याचार जब इस तरह एक इज्जतदारपर होता है तब उसकी अकल ठिकाने नही रहती । हमको भरोसा है हमारे न्यायी और विचारवानजज्ज फैसला करते वक्त इन पागलपनकी बातोंका कुछभी खयाल नकरेंगे ।"

लेकिन बेरिस्टरके बैठतेही गुरुदयाल फिर सीटने लगा—"हमारे बेरिस्टर भूलतेहैं

हमारे मगजमें कुछ भी विकार नहीं हुआहै। उन्होंने मेरे छुड़ानेके लिये जो बुद्धि मानी चालाकी की है उसके लिये मै उनका जिन्दगी भर गुण मानूँगा लेकिन मैं उनकी इस मिहनतका फल नहीं भोगना चाहता। मैं महापापी हूँ मैने केवल यही कुकर्म नहीं किया है। मैने बहुतसे पाप करके अपना चरित्र नष्ट किया है। मेरा जबतक विशेष प्रायश्चित्त न हो तबतक मेरा स्वभाव नहीं सुधरेगा। इसी कारण न्यायी विचारक की आँखमे धूल डालकर मैं यह पापमय जीवन नहीं रखना चाहता।

भाई बिहारीलाल! तुम अपने भाई मोतीलाल को लेकर घर जाना। पापी के साथमें रहनेसे उनको भी इतना सहना पड़ा है। मै तुम्हारा और तुम्हारे मामाका बहुत एहसान मानता हूँ।"

कचहरीमे इसके बाद कुछ देरतक सन्नाटा रहा। किसीके मुँहसे बात नहीं निकली। सब अवाक् थे। अन्तमें जूरियोंकी मति बदल गयी। गुरुदयाल कुसूरवार ठहराये गये।

लेकिन उनपर जूरी और जज्जने दया प्रकाश किया। अन्तमें जज्जने मोतीलालको बेकसूर छोड़ा और गुरुदयालको परिश्रम सहित एक बरस कैदका हुक्म दिया।

तीसरा अध्याय।

मोतीलालने बेकसूर रिहाई पायी और रोते २ दौड़कर बिहारीलालसे लिपटगये। मुँहसे कुछ भी नहीं कह सके। भाई भाईका यह मिलाप बड़ा ही आनन्ददायी हुआ। बिहारीलालकी भी आँसूसे छाती भीगरही थी। थोड़ी देरबाद दोनोंने एक दूसरेके आँसू पोंछे। और सब मिलकर हरवंशपाण्डे के डेरेपर पहुँचे।

बिहारीलालको भाईकी विपत्ति दूर होनेसे जो आनन्द हुआ। उससे अधिक दुःख गुरुदयाल के न छूटनेका हुआ।

उन लोगोंको घर पहुँचते ही छोटी पतोहूने दौड़कर कुशल सम्वाद पूछा। बिहारीलालने कहा—आधा मङ्गल है। भैया छूट आये हैं लेकिन गुरुदयाल को एक बरसका कैद हुआ है।"

छोटी पतोहू—"तो क्या गुरुदयालके वास्ते मामाने तदबीर नहीं की ?"

बिहारीलालने आदिसे अन्ततक सब बातें समझादीं। और कहा कि, उन्होंने

दोनों आदमीके वास्ते बराबर ही मिहनतकी थी लेकिन गुरुदयाल अपने मनसे जेल गये है।

बिहारीलाल की बात सुनकर स्त्रीने चिन्तित होकर कहा—"भला अब बेनी को कैसे समझाऊँगी ? वह कभी इस बातको नही समझेगी।

इस मुकदमें का फल बेनीके लियेही अच्छा होगा।"

बिहारीलालने विस्मितहोकर पूँछा—"इसका फल बेनीको क्या अच्छाहुआ"

स्त्री—"परमेश्वर जोकुछ करता है वह सब भलेहीके वास्ते करता है। बेनी का जैसा स्वभाव है उससे गुरुदयालका सुधरना असम्भव है। स्वामी कुचरित्र होतो स्त्रीको उसे सुधारनेकी चेष्टा करना चाहिये बेनी इस बातको नही मानती। मैने उसीके मुँहसे सुनाथा कि इसबार बेनीको बिदा करते समय गुरु-दयाल की जैसी मतिगति फिरीथी उससे यदि बेनीका कुछ दिनसाथ रहता तो वह सुधरजाते लेकिन वह बात नही हुई। बेनी गाजीपुर चलीआयी और उधर गुरुदयालका फिर सत्यानाश होनेलगा। जिसका फल यह हुआ। बेनीके समान सती लक्ष्मी स्वामीके सुखसे वञ्चित नही की जासकती। इसीकारण गुरुदयाल को जेल हुआहै। अब बेनीके साथ न होनेपर भी वह सुधर जायँ गे। आगमे विना तपाये सोना पक्का नही होता।"

बिहारीलालने कहा—"सचमुच सब परमेश्वर ही की मरजीहै-वह कौनकाम किस मतलबसे करते है यह आदमी नही जान सकता। अब यहा देरकरना नही चाहिये। मा वहा बहुत चिन्तित होगी।"

दूसरे दिन छोटी बहू माया और मामीसे मिल भेटकर बिहारीलाल और अपने जेठ के साथ गाजीपुर के लिये रवाना हुई। जमनिया तक रेलपर आकर फिर गङ्गाजीमें नावद्वारा सबलोग गाजीपुर पहुँचे।

मोतीलाल को पाकर माताके आनन्दकी सीमा नहीं रही। उसने माताका चरण पकड़ कर क्षमा प्रार्थना की। माताने बेटेको आंसू पोछकर चूम लिया। बेनीउनका आना सुनकर दौडती हुई सुशीलाके पास पहुँची। बेनीको देखकर सुशीला पहले व्याकुल हुई। बेनीने आतेही विषण्ण मनसे पूंछा—"काहे भौजी! क्या हाल है ?"

जब कातर होकर बेनीने पूँछा और छलछलायी आँखोसे उसकी ओर देखने लगी तब भौजी को सच्चा २ कह सुनानेका साहस नही हुआ। पहले से रेल में सवार होतेही सबलोगों में यह सलाह होगयी थी कि गुरुदयालका ठीक २ हाल बेनीसे नहीं बतलाना॥

भौजीने बेनीके जवाबमें कहा—" सब हाल अच्छा है । लेकिन गुरुदयाल किसी तरह हमलोगो के साथ आनेको राजी नही हुए । उनको अपने कर्मपर बड़ी लज्जा और ग्लानि हुई है । वह एक बरसतक अज्ञातवास करके अपने पापका प्रायश्चित्त करेंगे । फिर यहा आवेंगे अब एक बरसबाद तुम्हारे स्वामी तुमको मिलें गे । "

बेनीका सूखाहुआ मुँह कुछ प्रफुल्लहो आया उसने कहा—" वह इस विपत्ति से बचगये है यही बहुत हुआ है । उनको जहां सुखहो वहीं रहें । लेकिन भौजी ! उन्होंने कुछ पाप किया है, यहबात हमारे मनमें नही आता मैं खूब जानतीहूँ वह बेगुनाह है । उनमें कभी कलंक नही लग सकता । इसपर भी जो कुछ उन्हें दुःख होता है वह केवल इसी अभागिनी की बदनसीबीसे होता है ।"

छोटी पतोहूने अबतक कुछभी अधीरताका लक्षण नही दिखायाथा । लेकिन जब बेनीके सीधे स्वभाव और गम्भीर प्रणयकी बात याद आयी तब उसकी आखो में आंसू भरआया तुरंत आसू पोंछकर कहा—" बेनी ! तुम्हारे ऐसा मन एक स्त्री को संसारमें दुर्लभ है । मुझे इसबातकी डाह होती है कि परमेश्वरने तुम्हारे जैसामन हमको नही दिया । तुम अपने इसीस्वभाव और शुद्ध मानसके प्रभावसे सुखी होगी । "

बेनी भौजीको बहुत मानती थी । वह उसकी बातोंको धर्मशास्त्रके उपदेश समान सिरपर रखती थी । उसके कहने से बेनीको बहुत सन्तोष हुआ ।

अबबेनी वर्षका दिन गिननेलगी । सदा भौजीके पास बैठकर दिन बिताती थी । भौजी अवसर पातेही रामायण महाभारत और श्रीसत्यहरिश्चंद्रकी कथा सुनाती थी ।

कुछ दिनोबाद छोटी पतोहूको जेठानी और दोनों लड़कोंको लानेके लिये जो मोतीलालसे अनुरोध किया । मोतीलालको घर आये कई अठवारे होगयेथे । यहाँ आनेके बाद उनके आनन्दकी सीमा नहीं थी घर द्वार फुलवाडी आदिकी दशा देखकर विस्मित हुए । सब लोगोंसे बिहारीलाल की ग्री की बड़ाई और अपनी आँखोंसे उसकी सब तरहके बन्दोबस्तकी चतुराई देखकर मोहित होगये हैं । विशेष उसके आगमन से बिहारीलालके स्वभावमें जमीन आसमानका अन्तर देखकर वह छोटी को देवी समान देखते और मानते हैं । अब उनकी समझमें उनका घर स्वर्ग होगया है । छोटीका बड़ीके बुलानेको अनुरोध न सुनकर मोतीलालने मनमें सोचा—"इसस्वर्ग में रहनेके लायक तुम्हारी जेठानीनहीं है । फिर उसको लाकर इस स्वर्ग को नरक बनाना हम कभी नहीं चाहते । "

मोतीलालने बिहारीलालकी स्त्रीको जबाब में कहला भेजा कि " टेक-चन्दकी माको इस वक्त यहा लानेका कुछ काम नही है । हाँ उनदोनों लडकोंको बुला देताहूँ । कल उनके लिये आदमी भेजूंगा । "

छोटी इससे राजी नही हुई । माता और बिहारीलालने भी आकर जिद्द किया । अन्तमें मोतीलालको राजी होना पड़ा । अच्छा दिन विचारकर गदाधर की मा और नफरचन्द सैदपुर भेजे गये ।

जानेके पहले नफरचन्दने छोटी बहूको प्रणाम करके कहा—"मा ! तुम्हारे हुक्मसे मैं टेकू बाबू और मिहीलाल को लाने जाताहूँ । और वहाँ जो बड़ी माहै वह तुम्हारी तरह न होगी तो मै उनको मा कह के नही पुकारूँगा ।"

मुसकुराकर छोटीने कहा—"अरे पागल ! वह हमसे बड़ी है जब हमको मा समझता है तो उनको मा से भी वढ़कर मानना पड़ेगा ।"

नफर—"अच्छा जब दोनों मा एक जगह होंगी तभी मालूम हो जायगा । मै तो जानती हूँ कि मा ऐसी मा दुनियामें दो नही हैं ।"

नफरचन्द बाहर चला गया । और गदाधरकी माको साथ लेकर सैद पुरको रवाना हुआ ।

बड़ी पतोहूने अब गाज़ीपुर आनेमें कुछ उजर नहीं किया । मुकद्दमें का हाल पहलेसे उनको मिलही गया था । इलाहाबादसे लौटनेपर मोतीलाल का सैदपुर न जाना उनके लिये बहुतही दुखदायी हुआ था । लेकिन ऐसी अवस्थामें इस दुःखके साथ अभिमानने योग नही दिया । नफरचन्द और गदाधरकी माके साथ गाज़ीपुर पहुँची ।

मालकिन टेकचन्द और मिहीलालको पाकर आनन्दके मारे अधीर हो उठीं । गाड़ीसे उतरते ही दोनों आजी की गोदके लिये व्याकुल हुए । वह किसको ले किसको नही इसके लिये चिन्तित हुई । इतनेमे छोटी काकीने मिहीलाल को गोदमे उठा लिया । और टेकचन्द आजीकी गोदमें पहुँचा । टेकचन्दने समझा कि हमको आजीने गोद लिया है इस लिये उसीकी जय हुई है । अब मारे आनन्दके टेकचन्दकी हँसी नही रुकती ।

देवरानीने जेठानीको प्रणाम किया । मालकिनने भी आदर अभ्यर्थनाकी । बड़ी पतोहूका सब अपराध आज मालकिन भूल गयी है । वह पड़ी हँसी खुशीसे टेकचन्द और मिहीलाल को लेकर जलपानका प्रबन्ध कर रही है ।

देवरानीके आनेपर जैसे देखने मिलने वालोंकी भीड़ इस घरमे लगी थी उ

सके सौमें से एक हिस्सा भी आज जेठानी को देखने वाले नहीं आये। सब जगह सून सान और सन्नाटा था।

जेठानीको घरमें पधराकर देवरानीने कहा—काहे बहिनी ! मै लड़की हूँ सब घरका काम काज हमारे सिरपर देकर इतने दिनतक तुमने कुछ भी खबर न ली।"

जेठानी—"क्या करूँ। सास हमको देख नही सकती। सदा देख देख जलती रहती हैं। फिर ऐसी सासके आगे तो न आना ही अच्छा है न ?"

देव०—"सासकी बात जाने दो। वह पुरनिया हुई उनकी बातपर खिसियाना नहीं चाहिये।"

जेठानी—"बेकसूर कोई तुम्हें दस बात कहें तो तुम कैसे सहोगी ? तुमको तो वह चाहती है मान जान करती हैं इससे चाहे भलेही कहो लेकिन जैसा हमारे साथ करती है, वैसा अगर तुम्हारे साथ करती तो तुम एक दिन भी नही टिक सकती थी।"

देव०—"बहिनी ! हम तुम दोनो मिलकर उनके कहनेमे चलें तो वह काहे को बकेंगी ? और जब बकने लगे तो चुप होनाही दवा है दस बार बकेंगी आप ही चुप हो जायँगी। अच्छा बहन ! इस वक्त उसकी चरचा छाड़ो अब जल पान करो।"

देवरानीने जेठानीके जलपानकी तदवीर करदी। जेठानीने देखा कि अब इस घरमें किसी बातका दुःख नहीं है न कुछ दरिद्रता का लक्षण ही देख पड़ता। जिधर देखो उधर आनन्द और औल फौल है।

जेठानी यह देखकर खुश नहीं हुई। उसका जी ईर्षाके मारे जल उठा।

चौथा अध्याय।

छोटी पतोहू ने अब काम काज से फुरसत पायी। सब खेती बारी और खरीद बिक्रीका भार मोतीलालके हाथमें दिया बिहारीलाल उनके असिस्टेंट हुए। अब संसारी कामोंमें उसने अपना चित्त लगाया।

घरका काम काज रोटी पानी की तैयारी, घर आँगनकी सफाई सब छोटी पतोहूके शिरपड़ा। जेठानी कुछ काम नहीं करती सो नहीं। देवरानी जो सांसारिक काम करती है जेठानी भी उसको करने आती है इस काम करनेके बहाने वह अपने स्वामी, लड़कों का और अपना पेट अच्छीतरह भरनेके

ढंग पहलेही निकाल ले ली है । देवरानी समय पाने पर रामायण महाभारत सुखसागर आदिका पाठ करती और बहुत सी स्त्रियों को पढकर सुनाती है जेठानीको भी पढने की सामर्थ्य है वहभी इन्द्रसभा सिंहासनबत्तीसी पढती और लयलामजनूकी कथा लोगोंमें सुनाती है देवरानी टेकचन्द और मिहीलाल को लिखना पढना सिखलाती है । जेठानी कवित्त लिखने बैठजाती है । ऐसी तेज बडीपतोहू को सास क्यों आलसी कहकर अपमान करती है सोह-मलोगों की समझ में नही आता ।

एक बात और ही सच्च कहना हमारा काम है हम किसी की करनी छिपाने वाले नहीं हैं बरन सब हाल सच्चा २ ज्योंका त्यों कहदेनेवाले है । इसीसे कहना पड़ता है बड़ी पतोहू इन कामोंके सिवाय भी काम करती है कोई उससे एक गिलास पानी माँगेतो वह तुरंत ला देती है इतना जरूर है कि, एक गिलास पानी घड़ेसे उड़ेलने में घटाभर ढरका देती है लेकिन पानी जरूर ला देती है । कि-सी दिन भोजन बनानेमें उससे मदद माँगी जाय तो बडी बहू उससे भी इन्कार नही करती । वह इसके लिये तैयार हो जाती है । इतना जरूर है कि वह सब रसोईकी चीजें जल जावे और फिर दूसरा बनाना पड़े नही तो उसदिन सब मुँहमें जाब देकर सोना पड़ता है असल बात यह कि देवरानी जो बनाती है जेठानी उसको बिगाड़ने के लिये उधार खाने बैठी रहती है । फिर हम कैसे कहें कि जेठानी आलसी है और वह कुछ काम नही करती ?

इतना गोला बारूद तैयार रहते भी अब मोतीलालके घर लड़ाई झगड़ा नही होता क्योंकि छोटी पतोहू सँभालकर चलती है और सबसहलेती है । इतनाही नहीं अगर जेठानी कुछ काम बिगाड़ती है तो देवरानी अपने सिर उसका अपराध लेलेती है इस कारण सास बडीपतोहूको कुछ नही कह सकती ।

इसी तरह छ. महीने बीत गये । किसीसे झगड़ा टण्टा नही हुआ । मोती-लाल घरके मालकिन बनाकर मान सन्मानसे काम चलाने लगे । इतनेमें धूमा-वती भी बड़ी बहन आपहुँची । उसके आने से धूमावतीतक को विस्मय हुआ । छोटी पतोहूने बड़े आदरसे उन्हें घरमें पधरवाया । बहनकी दुर्गति देखकर धूमा-वतीके मनमें बड़ा दुःख हुआउसने भी उसका यथोचित आदर किया । उसदिन चम्पा कई वक्तकी भूखी थी । छोटीपतोहूने चटभोजनादिका बन्दोबस्त कर दिया ।

खापीकर जब पेट भरा तब दीठ चलानेकी पारी आयी । जो भिखमङ्गिनी की तरह आकर दरवाजेपर खड़ी हुई थी वह पेट भरनेपर मालकिनकी तरह

घरमें चारों ओर ताकने लगी । अब उसकी नजरमें मोतीलालके घरका सुप्रबन्ध और छोटी पतोहूकी बड़ाई काँटेसी चुभने लगी । नीतिकुशल रहीमने इन पातकी पेट के वास्ते बहुत ठीक कहा है:-

"रहिमन कहता पेटसों, क्यों नभयोतू पीठ ।
भूखेमान बिगारई, भरे बिगारे दीठ " ॥

भोजन हो जाने पीछे धूमावतीने चम्पाको एकान्त घरमें ले जाकर पूछा-"काहे बहन ! मौसीके यहाँ सब अच्छे तो है ?"

चम्पा मौसीका नाम सुनतेही खखुआ दौड़ी और इठलाकर बोली अरे-"जरै वैसी मौसी का मुहँ । वह मौसी अच्छी न होगी तो कौन अच्छा होगा । उसको संसार में मौअत कहाँ है ?"

धूमा०-" एल्लो तो जान पडता है उससेभी झगडा कर के आयी है कहो "

चम्पा-" अरे बहुतसी बाते है झगडे की बात मत पूँछो । उसके बेटे पतोहू में जब झगडा होता है तब सब दाहिजरे हमारे ही ऊपर थोपते हें । मानो मै उनको भाड मारने गयी थी । "

इतना कहकर चम्पा अपना कपडा उतार २ पीठ के घाव दिखाने लगी । उसे देखकर धूमावती काँपगयी । और धीरे २ बोली-"अरे बहन यह तेरा समधिमान है यहाँ यह सब बात जाहिर नही करना चाहिये नही तो मुँह देखाना भारी हो जायगा ।"

चम्पाकी दुर्दशा देखकर धूमावती को बड़ा दुःख हुआ । जो चम्पा किसी की बात नही सह सकती थी । वह आज इस तरह मार खाकर घरसे बाहर होके शरण ढूँढ़ने आयी है धूमावती बड़े आदर मानसे उसको रखती है ।

एक महीना बड़े सुखसे बीता । सब चम्पाको धूमावती की तरह देखने लगे । लेकिन चम्पाके आनेके दिनसे बेनीका दुःख बढ़ता गया । चम्पाको देखतेही उसका शरीर सूख गया । तभीसे वह मोतीलालके घर अब वैसा नही आती । कभी २ छिपकर छोटी से मिलने को आया करती थी ।

जब चम्पाकी चोट आराम होगयी और उसने धूमावतीको अपने हाथमें पाया तब उसने अपना रूप प्रगट किया । एक दिन दोनों एकान्तमें इस तरह बातें हुईः-

चम्पा-"काहे धूम ! तेरी सासतो सदा छोटी ही छोटी करती रहती है तुम्हें तो कुछ नहीं पूँछती ?"

धूमा०—"हाँ बहन बात तुम सच्च कहती हो क्या करें मुँहजरी बड़ी दुअक्खी है।"

चम्पा—"हाँ दूआँख तो करतीही है तू कहेगी क्या मैं तो आँखों देखती हूँ।"

धूमा०—"क्या करें बहन। घरके आदमी भी तो अपने हाथमें नहीं है। यह बड़ी कचाहट है।"

चम्पा०—"तो अपने लड़के बच्चे का सत्यानाश करके भाईको लेकर चाटेंगे क्या ?"

धूमा०—"का कहें दीदी। यही सब देखके तो मैं कुछ बोलती नहीं। मनका दुःख मनही में रखती हूँ।"

चम्पा—"मै इनको इतना समझाती थी उसका तो यह बीस हिस्सामें एक हिस्सा भी नही है। पढने लिखने पर क्या आदमी अपना भला बुरा भी नहीं पहँचानता ?"

धूमा०—"बहन! सब नसीब की बात है। देखो न। छोटीकी गाँवभर बड़ाई करते हैं जिसको देखो उसीके मुँहेपर छोटी है। मैने न जाने उनका कौन बेटा भतार खाया है कि, मेरा नाम सुनते ही जल उठते है"

चम्पा—"हाँ बहन! एक बात भले याद आयी। तुम अभी समझती नहीं हो भोरे २ तुम्हारी देवरानी तुम्हारा सत्यानाश कर रही है। देखो उसको लड़का बच्चा तो होता नहीं। इसके वास्ते दान पुन करती है। अन्धे, लँगड़े, लूलोंको खिलाती है। भूखोको अन्न, नङ्गोंको कपड़ालत्ता देती है ब्राह्मण भोजन कराती है यह सब तेरे लिये थोड़े है यह सब अपने लड़का बच्चा होनेके वास्ते करती है। इधर तुम्हारे धनका सत्यानाश होता जाता है। वह तुम्हारा धन जन लक्ष्मी पूत नही सह सकती इसीसे सब उड़ाती जाती है।"

धूमा०—"हाँ बहन। यह तो सब ठीक है वह भी उसदिन कहती थी कि, संसारी आदमीको यह सब करनाही चाहिये लेकिन इसकी तदबीर क्या बहन?"

चम्पा—"तदबीर तो सीधे है जो तू करे तो अभी अलग हो जा बस सब बचा बचाया धरा है।

तेरा आदमी पढ़ा पण्डित अक्कलबर है उसकी तरह गँजेड़ीभँगेड़ी नही है। एकमें रहनेसे तेरा हरतरहसे नुकसान है।"

धूमा—"हाँ बहन! यह तो है लेकिन तुम्हारे बहनोई राजी नहीं होंगे उनको यह सब नही सूझता। तुम उनको अक्कलबर कहती हो लेकिन हमारे जान तो वह पढ़े लिखे पर भी पूरे चपाट है।"

चम्पा—"अच्छा सुन । एक बात कर कि, अपनी सास और देवरानी दोनोंसे खूब कलहकर छोर झगड़ा ले फिर देखना तुरंत ठीक होजायगा । इस तरह हँस खेलकर दिन बिताये से थोड़े काम होता है ? "

इसी वक्त दोनोंने न जाने क्या काना फूसी करके कुछ सलाह किया ।

दूसरे ही दिनसे मोतीलालके घर झगडेका अवतार हुआ । सास और बड़ी पतोहू में वह महाभारत शुरूअ हुआ कि, उसका मिटना मुश्किल हो पड़ा । छोटी पतोहूने बहुतेरा चाहा कि, झगड़ा मिट जावे लेकिन होता क्या है । बीच बिचाव करने जाकर छोटी पतोहूको भी धूमावती और चम्पासे हजार बारह गालियाँ सुनना पड़ी । लेकिन उसने एक भी मनमें नही लिया ।

इसी तरह का झगड़ा अब मोतीलालके घर सांझ सवेरे दो पहर सदा होने लगा । उस झगड़ेमें छोटीको लपेटने के लिये चम्पा और धूमावतीने बहुतसी तरकीबें की लेकिन वहाँ एक भी नही चली ।

मोतीलाल बेचारेपर बड़ी विपत्ति आयी । उसमे एक बड़ा भारी दोष यह था कि, मुखराभार्य्याके आगे वह निर्जीव हो पड़ता था । उसकी अक्ल और समझ सब धूमावती के आगे चूल्हे में चली जाती थी । एक दिन झगड़ा करते २ दुःखी होकर धूमाने मोतीलाल से कहा—" अबतो नही सहा जाता तुम इसकी एक तदबीर करो । वह अपना सपूत बेटा और सुलच्छनी पतोहू लेकर रहें चलो हम लोग अलग होजायँ । "

स्त्री के मुँह से एक खराब ऐसी बात सुनकर मोतीलाल चौक उठे । उन्होंने झगडे का कारण समझलिया । लेकिन झगडा इतनी तूल खैंचेगा यह वह नही जानतेथे । अब घरनी के मुँह से ऐसा प्रस्ताव सुनकर आप बहुत झिझक कर बोले—" सुनरे हम तेरे झगडे का कारण जानते है । इतने दिन तक तेरा झगडा कलह देखकर अब मैने खूब समझ लिया है अब मै जोरू लडका छोड दूँगा लेकिन माता और भाई को नही छोड सकता । एक बात और भी है । हमारा अब इस घर में कुछ नही है. जो कुछ नही है जो कुछ है सो सब बिहारी का है । क्योंकि उसी की स्त्रीने यह सब पैदा किया है । हम लोग उसी के अन्न से पलते है फिर तू किसबातका घमण्ड करती है ? और किस भरोसे पर अलग होती है ? "

धूमावती सहमगयी । क्याजवाब देगी सो कुछ भी ठीक नकरसकी । फिर तुरंतही क्रोधने रूप दिखाया और कड़क कर बोली—" क्या ? तू भाई के

वास्ते हमे छोड़देगा ? अच्छा लेभाई के लेके रह इत दादा जेही खातिर चोरी करेसेही कहे चोरा " सबने खीसा । सब संसार- छोटी मुँहकारिखही की बडाई गाता एही से न तू उधर ढरता है !"

मोतीलाल चुप है । धीर भावसे स्त्रीकी कठोर बातें सुनते हैं । लेकिन् महाकाली का एकभी जवाब नही देते । हे परमेश्वर ! ऐसी महाकाली कंकारिनी से हमको और हमारे पाठकों को बचाइयो । मोतीलाल ने कुछ साहस लेकर कहा--" सारा संसार जिसकी बड़ाई करता है उसकी ओर कौन नही होगा ? इतने दिन तक तुझसे भी तो उसका कभी लडाई झगडा नही हुआ अब मैं ने खूब समझलियाहै इन सब झगडों की जड़ वही तुम्हारी बहन है । उसी के आनेपर तेरा मिजाज पलटा है । वही सब अनर्थ कररही है । "

इतने में पीछे आकर चम्पा गरजने लगी और दांत पीसकर बोली--" क्या मैं तुम्हारा अनरथ करती हूँ ? "

आज मोतीलाल को लज्जा न रोकसकी उन्होंने साहसकर के कहा -" हाँ तूही सब करती है ।" चम्पा अबकी कुछ नरम होकर बोली--"और जो तुम्हारा धनफूके जाती है रुपया पैसा उडाती जाती है दान पुन करके अपना नाम करती तुम्हारे बाल बच्चों का सत्यानास करती है । तुमको भीखमाँगने के लायक बनाती है वह तो अनरथ नही करती वह कुछ नही बिगाड़ती । मै अनरथ करती और सब बिगाड़ती हूँ ? "

मोती०-" वह कौन है ? "

चम्पा--वह और कौन है तुम्हारी भयेहूतो है । "दुःशीला चम्पाके चलते मुँहसे सुशीला भयेहू की निन्दा सुनकर मोतीलाल उबल उठे पापके समीप पुण्य का अपमान नापाकके आगे पाक का निरादर देखकर उनके जीमें आगलग गयी । मोतीलालने जलकर कहा--" खबरदार अपने मुँह से उसकी बात फिर मत कहना ।

चम्पा--" काहे ? "

मोती०--काहे क्या वह स्वर्ग है तू नरक है, वह धर्म्म तू अधर्म, वह लक्ष्मी तू पिशाचनी है तेरे पिशाच मुँहसे उसके पवित्रनाम की शोभा नही है ।"

तुरंतका पकडा हुआ सांप जैसे हांडीमे फोंफों करताहै । चम्पा भी मोतीलाल की बात सुनकर उसीतरह फुफुआने लगी । आज चम्पाका चलता तो वह क्या करडालती ? हमारे पाठक पाठिका गण समझ लेंगे । मोतीलाल यही कह

बातें कहकर वहांसे चले गये चम्पा कुछ स्थिरहुई । लेकिन इस घटनाके पीछे उसका सबसे अधिक कोप छोटीपतोहूपर हुआ और उसीसे बदला लेनेकी फिकरमें वह व्याकुल हुई ।

पाँचवाँ अध्याय ।

मोतीलालके घरमें आज बडा गोलमाल है । भोजनके पीछे आज उनके दोनों लडके बेहोश होगये हैं । डॉक्टरने देखकर कहा कि, भोजनके साथ कुछ जहरीली चीज खानेसे ऐसी हालत हुई है । परिवारके सबलोग इन दोनों लड़कोंके लिये व्याकुल हैं । इस आकस्मिक विषयसे सबका मन दुःखी है । विहारीलाल जल्दी २ दवालाकर खिला रहे हैं । मालकिन देवघरा जाकर नाक रगड रही है । बडी बहू अर्थात् लडकोंकी मा झगडे के मारे आस्मान फाड रही है छोटी पतोहू डॉक्टरके कहे मुताबिक दोनों लड़कोंको दवा दे रही है ऐसा सर्व्वनाश किसने किया यही कहकर चम्पा बेरोक गालीकी बरसा कर रही है । मोतीलाल एकदम हत बुद्धि होपडे है ।

जो दवा खिलायी जारहीथी उसने मुनालिया लडकोंको कय होनेलगी । सब लोगोंको जीनेका भरोसा हुआ जब डॉक्टरने दोबार आकर देखा और कहा कि, अब किसी तरहकी फिकर नही है । बहुत जल्द लडके आराम होजायँगे । तब सबके मनका भरोसा पक्काहोगया ॥

बालकोंने आरोग्य लाभ किया । आहारके साथ कौनसा जहर खाकर यह बेहोश होगये थे इस बातके जाँचनेको डॉक्टरकी फिकर बढ़ी । जब सबने वही चीज़ें खायी थी तब इन दोनों लड़कोंहीके भोजनमें जहरीली चीज कैसे आगयी इस बातके जाननेको सब उत्सुक हुए । डॉक्टरने पहले समझा था फिर किसी सागभाजीके विषैले कीडे वा किसी दैवी घटना से यह बात हुई है लेकिन कैके नरिठ पेटसे निकली हुई चीजोंकी जिसवक्त परीक्षा की उस वक्त वह बहुतही अकचकाये । जाँचसे जाना गया कि, उसमें संखिया मिली है । बिना किसीके डाले भोजनमें संखिया कैसे आसकती है ?

डॉक्टरने कहा—"किसी दुष्टने लड़कोंकी जान आफ़तमें डालनेको इनके भोजनमें संखिया डालदी थी उसकी करनी अच्छी नहीं थी ।

परमेश्वरकी मरज़ीसे थोडी देरबाद कै करनेकी दवा पहुँच गयी नहीं तो जान बचना कठिन था ।

इस बातको सुनकर सब दाँतों उँगली काटने लगे। किसने ऐसा हुकुम किया था इसी बातकी सबको चिन्ता हुई और सबके मनमें इसीने घर किया। उस वक्त बहुतसे पड़ोसी भी बैठेथे। उनमेंसे एकने कहा—"यह तो बिलकुल लड़के ही नही है कि, संखियाको चीनी समझकर खालेंगे। जरूर किसीने खिला दिया है।"

इतनेमें डॉक्टरने कहा—"लेकिन यह संखिया देंगे कहाँसे ? घरमें कोई संखिया खाता है ?"

सबने यह बात नामंजूर की। तब डॉक्टरने कुछ सोचकर कहा—"तो जिसने रोटी बनायी है उसका यह काम है या जिसने इन दोनों लड़कोंको खिलाया है उसका।"

उस दिन किसने रसोई बनायी थी और लड़कोंको किसने खिलाया था। इसकी बात छिड़तेही चम्पा बोल उठी—"वही छोटीने बनाया खिलाया था।"

छोटीने भी उस बातको नामंजूर नहीं किया। क्योंकि उसीने रसोई बनायी थी और अपनेही हाथसे उन्हें खिलाया था। वह भी वहीं बैठी थी उसने एक बात भी नही कही। मोतीलालने कुछ देर सोचकर लम्बी साँसली और कहा—"मेरी स्त्री और उसकी बहन हमारी बहूके आगे अनेक कसूर वार हो सकती हैं लेकिन हमारे दोनों लड़कोंने उनका कुछ नही बिगाड़ा है। फिर इन बालकोंके लिये ऐसी बुरी नियत करनेका क्या सबब है ?"

यह बात छोटीको बाण सी लगी। अगर उस वक्त उसके सिरपर बज्र गिरता तो भी उसे उतनी पीड़ा न होती। वहाँ जो लोग बैठे थे वह भी मोतीलालकी बात सुनकर "नहीं, नहीं, यह बात नही हो सकती।" कहते हुए वहाँसे चले गये। लेकिन चम्पा और धूमावती चुप न रही। बहुत दिनोंबाद उनकी मनकामना पूरी हुई है। वह इन बातोंको अलंकारसे सजकर कईरूपमें ढालती हुई लोगोंमें फैलाने लगीं।

चम्पाकी खुशीका आज ठिकाना नही है। वह अपनी खुशी रोक नहीं सकती। आज दैवसंयोगसे अगर दोनों लड़के मर जाते तो भी चम्पाको इससे कम खुशी नही होती।

मोतीलाल सूखा मुँह लिये बैठकेमें आये और उस दिन मारे दुःखके उन्हें भीतर जाते नही बना। बिहारीलाल आज हतबुद्धिकी तरह पड़ा था। कभी अपनी स्त्रीके अश्रुप्लावित मुखकी ओर देखता था। इतनेमें जेठानीने आकर देवरानीसे कहा "काहे अब मनकी बात नहीं भयी ऐसे यहाँ आके रोने बैठीहो ?

राम राम पेटमें इतनी अक्कल भरे थी सो कौन जानता था दादा ।" इतना कहकर अपने दोनों लड़कोंके पास से उसको उठा दिया । देवरानी वहांसे उठी और सासके पास जाकर डबबायी आँखोसे कहने लगी—"काहे माजी ! तुम भी इस बातपर यकीन करती हो ? "

सासने पतोहूका आँसू पोंछकर कहा—"नहीं बहू ! यह क्या मैं अपनी आँखसे देख लेती तौ भी ऐसी बातपर विश्वास नहीं होता ।"

पतोहूसे अब रहा नहीं गया । वह करुणास्वरसे चिल्लाकर बोल उठी— "तो माजी ! बतलाओ हमारा यह कलंक कैसे जायगा " ।

सासने पतोहू को समझाकर कहा—" नहीबेटी ऐसी कोईबात कहता है, तुम आप समझदारहो । तुम्हें भला क्या समझाऊं ? ऐसीबातपर कोई विश्वास नहीं करसकता । तुम से ऐसीबातके होनेका किसीको भरोसा नही है । मैं खूब जानतीहूँ यह सब उसी मुँहकारिखहीका काम है । वह तो हमारा घर सत्यानाश करने आयीही है ।"

सासकी बात सुनकर सुशीला पतोहू के जीमें जीआया । कुछ स्थिर होकर स्वामीके पासगयी और उनसे पूँछा—" काहेनाथ । तुम्हारा कैसा विश्वास है ? ॥

बिहारीलालने कहा—" मैं खूब जानेबैठाहूँ कि, यह काम चम्पानेही किया है दुनियामें ऐसा काम करनेवाला चम्पाके सिवाय कोई नहीं है मै इसबात को खूब समझे बैठाहूं । लेकिन तुम अधीर काहेहुई जातीहो । भैयाने जो बात कही है वह हमको बाणके समान छेद गयी है लेकिन इसबातकी कुछ चिन्ता मतकरो सच्चीबात छिपीनहीं रहेगी " ।

छोटी प०—" सच्चीबात कभी छिपी नहीं रहसकती तुम्हारी इसीबातको मैं वेदवाक्य मानतीहूं और मै अधीर नहींहूँगी " ।

लेकिन बात सहजही नहीं मिटी, मोतीलालके मनका सन्देह किसीतरह नहीं गया । क्योंकि उनको इसबातपर पक्का भरोसा है कि, मौसी होकर वह अपनी बहनके लडकोंको जहर नहीं देसकती और उनकी धूमावर्तानेभी जहांतक बना तद्बीर करके उनके दिलका यह विश्वास पक्का किया ।

मोतीलालने कुमंत्रणामें पड़कर अलग होनेकी बात कही । लेकिन छोटीने अलग होने नहीं दिया । इसके पहले वह जिन्दगी भर बापके घर रहनेको राजी हुई । लेकिन सास इस बातपर राजी नहीं हुई । तब छोटी पतोहूने कहा—"तुमने इतना दुःख सहकर जो अपना संसार सिरजा है वह एक बार बिखरनेपर फिर नहीं

जुटेगा। माजी! मैं कौन हूँ जिसके लिये तुम अपना बना बनाया घर बिगा-ड़ेगी! मुझे इसके वास्ते दुःख न होगा। केवल सोच इसी बातका रहा कि, मैं तुम्हारी सेवा न कर सकी।"

सासने रोकर कहा—"सुनो बहू! तुम्ही हमारे इस संसारकी लक्ष्मी हो। तुम्हें खोनेपर फिर यह संसार मरघट हो जायगा। मै इस संसार को नही चाहती, तुमको चाहती हूँ।"

सास इसबार भोंकार मारकर रोने लगी। मुँह से और कुछ कहते नहीं बना। माताका रोना सुनकर बिहारीलाल पहुँचे और माताको समझाकर कहने लगे। "मा! रोवो मत। सच्ची बात छिपी नहीं रहेगी। एक दिन ऐसा आवेगा कि भैया इसके वास्ते अफसोस करेगे। इस वक्त अलग होनेके बदले यही बात अच्छी है कि, तुम इसको मायके भेज दो।"

माता समझाने बुझानेसे राजी हुई और उसी दिन सुशीलाके घर जानेका ठीक हो गया। गाड़ीपर बैठते समय बहुत कुछ रोआ रोहट के बाद उसने टेकचन्द और मिहीलाल को बुलाया उन्हे गोदीलेनाही चाहती थी कि, चम्पा बाघिनकी तरह गरजकर पहुँची और दोनोंको छुड़ा लेगयी।

सुशीला डबडबायी आँखोंसे दोनों लड़कोंको देखती हुई गाड़ीमें बैठी! बिहारीलाल पहुँचानेके लिये चले। साथमें नफरचन्द भी गया।

नफरचन्दके जानेकी तो कोई जरूरत नहीं थी। मोतीलाल और उनकी मा ने भी उसे रोका लेकिन वह नहीं रह सका।

आज जिन्दगी भरके लिये सुशीला गाजीपुरसे बिदा हुई शत्रुका उपकार करनेके लिये उसने अपने स्वार्थके गलेपर तलवार मारी।

गाड़ी चली गयी आनन्दसागरमे गोतालगाती हुई चम्पाने धूमावतीका आलिङ्गन किया।

सँभालो धूमावती! सँभालो! यह कर्कशा चम्पा किसीकी नहीं होगी।

छठा अध्याय।

छोटी बहूके मायके जानेपर सास तीनदिन तक सेजसे नहीं उठी और तीनों दिन भोजनतक नहीं किया। मोतीलालने माको पहले भोजन करनेका बहुत कहा लेकिन जब कुछ भी फल नहीं हुआ तब झुँझला उठे और कुछ खाह बाह भी बकने लगे।

फिर माता धीर धरकर उठी, लेकिन घरका काम काज नहीं करतीं। एक समय आहार करके महल्ले २ फिरनाही अब उनका काम रहगया है । चम्पा और धूमावती ही इस समय पाँड़ेजीके घरकी मालकिन हैं। मोतीलालने स्त्री की सलाहसे ठेकेदारीका काम शुरूअ किया है। इसलिये उनको बहुधा बाहर रहना पड़ता है। रुपये और स्त्रीकी मोहिनी शक्तिमें मोतीलाल अब पहले की सब बातें भूल गये हैं। मूर्ख भाई का धन लेकर जो वह ऋणी हुए हैं युक्ति से उसकी बढ़ती करके अब उसी उपार्जित धनसे ऋण चुकानेकी इच्छा करते हैं। बिहारी लाल का किसी काममें अब वैसा उत्साह नहीं है तौ भी वह भाईका कुछ भी कहना नहीं टालता। मोतीलाल जब जो कुछ कहते हैं बिहारीलाल खड़ा खड़ा उसे करलाता है। बिहारीलालको अब उस घरमें रहनेकी इच्छा नहीं है तौ भी माके सन्तोष और भाईकी सेवाके कारण वह सुसराल नहीं जाता।

लोगोंने जो बात कही थी वही धीरे २ सच्ची होने लगी छोटी पतोहूके बिदा होनेपर पाँड़ेजीके घरकी लक्ष्मी भी धीरे २ बिदा होगयी।

बारह महीने जो तेरह पार्वन होता था वह सब बन्द हो गया। आगत अतिथिकी अब सेवा नहीं होती भिखारी आनेपर भीख नहीं पाता। घरद्वारकी भी अब वह शोभा नहीं है। इधर ठेकेदारीके काम में लाभ के बदले मोतीलालका बहुतसा रुपया नुकसान हो गया। अब इज्जत बचाना कठिन हो गया।

एकदिन बिहारीलाल बिना किसीसे कुछ कहे सुने न जाने कहाँ चला गया। उसके तीन दिन पीछे अकस्मात् गुरुदयालको साथ लेकर आ पहुँचा। गुरुदयाल गाजीपुर आकर पहले अपनी स्त्री के पास न गये और मोतीलालसे ही एकान्तमें मिले।

मोतीलाल गुरुदयालको पाकर बहुत खुश हुए और बहुतसी बातें पूँछने लगे। उन सब बातोंको काटकर गुरुदयालने कहा—"सुनो पहले तुम्हारे भाईसे हमने जो कुछ सुना है उसके बारेमें मैं दो चार बातें तुमसे पूँछना चाहता हूँ पीछे मैं और बातें कहूँगा। सुनते हैं टेकचन्द और मिहीलालको किसीने संखिया खिलाया था उसके बारेमें तुम अपनी भयेहूको शक करते हो।"

मोतीलालने स्थिर होकर कहा—"जो सब बातें उसमें हुई उनसे उनपर शक किये बिना कोई नहीं रह सकता।"

गुरु०—"मुझे इस बातका बड़ा अफसोस है कि, तुम सब ज्ञान सुनकर भी ऐसा शक करते हो। पहले की बातें तुम्हें एकदम बिसर गयी हैं।

जिसदिन तुमने मेरी कर्कशा बहनको अपने घरमें टिकाया उसी दिनसे सर्व्व-नाशका बीज बोया है। जब मैं सुना कि बहनके रहतेही यह बात हुई तभी मैंने समझ लिया कि, यह सब उसीकी करनी है। और ऐसा समझनेका मैं पक्का सुबूत भी रखता हूँ।"

मोती०—"तुम्हारी बहनका मैं सब हाल जानता हूँ लेकिन इस बारेमें उसपर शक करनेकी हमको कोई जगह नहीं मिली।"

गुरुदयाल—" और कोई जहर होता तो मेरा बहनपर खाली शकही होता लेकिन अब मैंने सुना कि, संखिया थी तभी मैंने ठीक निश्चयकर लिया कि, यह सब काम उसी चाण्डालिनी चम्पाका है। तुमको क्या मालूम नहीं कि, बाबा मराफिया खाते थे? उनके आगेहीसे इसने भी छिप छिप कर खाना सीखाथा। यह बात खाली हमारे बापको मालूम थी और अब हमको मालूम है। तुमने उस बेगुनाह सतीपर नाहक सन्देह करके कलंक लगाया है। इसबात का तुमको जल्द प्रायश्चित्त करना चाहिये।"

इतनीबातें सुननेपर मोतीलालकी मति फिरी। हठात् जैसे आँखका जाला निकल जानेपर नयनोंके आगे उजियाला हो आता है मोतीलालकी भी ठीक वहीदशा हुई। मानो सबबातें उनकी आंखोंके आगे आकर खड़ी होगयीं। गुरु-दयालने फिर कहा—" अबभी अगर तलाश करो तो हमको ठीक भरोसा है उसके पास मराफिया मिलेगी?"

मोतीलालने न जाने क्या सोचकर गुरुदयाल को वहीं बिठाया और आप भीतर चलेगये। और थोड़ी देरबाद अन्तःपुरसे हाथमें एकभुकड़ी लगीहुई पुरानी शीशीलिये लौटआये। गुरुदयालको शीशी देकर कहा—" अच्छा देखो इसमें क्याहै "?

गुरुदयालने हाथमे शीशी लेकर कहा—"वस इसमें मराफियाहै।" तब मोती-लालने कहा—"तो तुम्हारी बात ठीक है। मैने भयेहूपर सन्देह करके बड़ा पातक लिया है।"

गुरुदयाल—" अब तुमको उचित है कि, सच्चीबात जाहिर करो।"

गुरुदयाल यही कहकर अपनी ससुराल चलेगये इधर सच्चीबात सर्वत्र फैल-गयी। मालिकिन आनन्दके मारे देवीदेव मनाने लगी।

जब यह हाल धूमावतीने पाया उसके कोपकी सीमा नरही। मारे गुस्से के अधीर होकर चम्पापर चिल्लाउठी। और गुर्राकर बोली—" अरे काहे रे! मैंने दूध पिलाकर क्या इतने दिनसे घरमें साँप पालाहै? तेरे शरीर में क्या तनकदया माया नहीं! तूने हमारे दूधमुँहे बच्चोंको जहर खिलाकर मारना चाहाथा?"

चम्पा पहले तो सकपकायी, मुँहसे बात नहीं निकली । लेकिन इस समय चुप रहने में खैरियत नहीं है यही समझकर गरजनकी जवाब गरजन सेही देना चाहती थी लेकिन भीतरके दुःखसे वह तो नहीं बना और बडे कष्ट से जोर करके बोली–" अरे । तेरा ऐसा दिमाग तू हमको इतनी बडीबात कहती है ? ऐं ॥"

चम्पाने चिचिया कर मुँहसे इतनी बातें कही सही लेकिन भीतर उसके कलेजे मे धडका होनेलगा मुँह सूखगया । इधर धूमावती फिर गरज उठी । और आकाश फाड़कर बोली–" अरे तेरेही बाकस से शीशी निकली है । तुझे क्या धर्म अधर्म समझ पडता है । तूतो जिस पतरी मे खाती है उसीमें छेद करती है । दादा के घरमे आगदे आयी है । मौसीका घर जला चुकी है । अब हमारा वंश बोरने आयी है । हमारा सत्यानास करने आयी है । तू किसीका भला नही देखसकती । तेरा बुराहाल हो कहीं मुट्ठीभर दाना नहीं मिलेगा । हाथसे माँगी भीख गिर पडेगी "।

चम्पाने झगडा झाँटामे एम ए. पास कियाथा, लेकिन छोटी बहन धूमावती अभी बी ए तक पहुँची थी । तौभी ग्रेजुएट होकर आज इसने एम ए. को ऐसा रगडा कि, चम्पा उसके आगे ठहर न सकी ।

पाठक । चम्पा क्याकरे अभ्यासकी बात है । अभ्याससे आदमी वह लियाकत पैदा करलेता है कि, जिसको देखसुनकर दाँतों उँगली दाबना पड़ता है । सभाविलासमें लिखाहै ।

"करत करत अभ्यासते, जड़मति होत सुजान ।
रसरी आवत जातते, सिलपर परत निसान " ॥

वही बातहै । सुनते हैं एक भरीसभामें राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द बनारसने अभ्यासके एण्ट्रेन्सहोकर बडेमशहूर एक एम. ए. ब्राह्मणको रगड़ा था । एम. ए. महाशय बडे प्रसिद्ध और पूरे भग बङ्गाल स्वभावके जेण्टलमेनहै । आप अपनेजान अङ्गरेजीमें अपना सानी नहीं रखते । पश्चिमोत्तर देशमें आप स्कूलोंके एक बड़े अधिकारीहैं । शिक्षाखाते में आपहीकी तूती बोलतीहै । आपने देशी बोली समझने वाले हिन्दुस्तानियोंकी भी सभामें एक लम्बी स्पीच अङ्गरेजीमें दी थी । स्पीचके अन्तमें राजासाहबने खड़े होकर कहाथा कि "हिन्दी समझनेवाले लोगोंको भरीसभामें हिन्दी मे नकहकर अपना भाव एक विलायती बोलीमें कहना अपना पाण्डित्य दिखानेके सिवाय और कुछ नहीं है ।

ब्राह्मण एम.ए ने कहा–" अङ्गरेजीमें स्पीच देनेका मतलब हमारा पाण्डित्य दिखाना नही मगर जोकुछ कहा चाहतेथे उसको बतलानेके लिये हिन्दी में शब्द नही है इसीलिये मुझे स्पीच अंगरेजीमे देनापडी है।"

राजासाहबने कहा–" यहबात भी खाली हिमाकतकी है। एक हिन्दुस्तान का जन्माहुआ हिन्दुस्तानी जिसने मा बापसे हिन्दीमे दुनिया भूगोल सीखा। हिन्दीमें जिसको मुँह फाड़कर काका बाबा मामा दादा कहना सिखलाया वह कहे कि, मै अपने भावोंको हिन्दी में नही बतला सकता विलायती बोली में कह सक्ताहूँ यह तो ठीक वही देशी मुरग बिलायती बोलकी बात ठहरी। हमने ऐसा तो किसी अङ्गरेजी जानने वाले देशी से नही सुना कि, अपना भाव बताने के लिये हिन्दी में शब्द नहीं है और अंगरेजी में है। मैं जानताहूं हिन्दी में ऐसे लफ्जहैं जो अंग्रेजी में नही है।"

ब्राह्मण जेण्टलमेन ने झझककर पाँचलफ्ज अङ्गरेजी में कहे और उसका हिन्दी भरीसभामें राजा शिवप्रसाद से पूँछा।

राजाजी अङ्गरेजी के कुछ बडे विद्वान तो नही थे लेकिन् अभ्यास के बलसे चार शब्दों की हिन्दी उन्हों ने बतलायी। जिसको सुनकर और अकलमन्दों ने भी सराहा। राजा साहब ने उलटा होकर तीन लफ्ज देशी बोली के कहे और एम्. ए. बाबूसे अंगरेजी उनकी माँगी बाबू पसीने में थकबकहोगये, लेकिन एक की भी अंगरेजी नकहसके। पाठक! देखो अभ्यासका कितना प्रभावहै।

उसी अभ्यास के बलसे आज धूमावती ने अपने धूमके आगे एम्. ए. पास चम्पा को हरा दिया। चम्पा का गलाभी सूखआया था वह धूमावती की तरह गरज भी नही सकी। विषदन्तविहीन साँपकी तरह फुफुआती रही। मुँहसे एक बात भी नही कह सकी। ऐसी दशामें भी चम्पाको फुफुआते देखकर धूमावती का कोप और बढ़ा करने लगा–" भैयाने तुझे घरसे बाहर करदिया मौसी के घर गयी वहां से भी झाडूखाकर आयी। अब मैं झाडू मारकर निकालदूंगी तो कहां जाके खडी होगी? रे चाण्डालिन! मुँहकारिखदी?" अब नही सहागया चम्पाकी पत्थर की आखोंने आँसूबहाया रोते रोते बोली– "हमारा ऐसानसीबही है जिसके वास्ते भला करतीहूं झाडू मारता है।"

धूमावतीका कोप उससे भी नही घटा गुस्सेसे अधीर होकर कहनेलगी–"ना ना! तेरी भलाई हमें नही चाहिये। तू अभी दूरहोजा। दूरहो सामनेसे आगेसे अभी चलीजा। निकलजा हमारे घरसे। अब मै तेरी मायामें नही भूलसकती"

इस दारुण अपमानसे चम्पाका रोना थम्हगया उसने कोप करके अपनारूप दिखाया और दाँतपर दाँतें रगड़कर बोली—" दूरहूँगी ! पहले तेरा सर्वनाश करके तो पीछे दूरहूँगी । "

धूमावती और जलउठी वह बडी बहनका झोंटा पकड़ कर मारने लगी । चम्पाका झोंटा चरचराने लगा । इतनेमें न जाने कहाँसे बिहारीलाल पहुँचा और बडी मिहनतसे भौजीको हटाकर चम्पाको बचाया । चम्पा जमीनपर पछाडखाकर रोने और चिल्ला चिल्लाकर कहने लगी—" अरेबापरेबाप ! अरे कहां गयेहोबाबू ! तुम्हारे बिना तुम्हारी आदरकी पाली चम्पाकी क्यादशाहै एकवार देखजावो बापरे बाप" उसरोनेकी आवाज सर्वत्रगयी लेकिन किसीने आज उस को चुपनहीं कराया ।

सातवाँ अध्याय ।

इधर गुरुदयाल बहनोईके घरसे सुसरालको चले. चलते चलते उनको पहली बातें याद आयी । बेनीकी उनको याद आयी । उसका वह भोलारूप, वह सदाशङ्कित भाव, वह लज्जावनतदृष्टि, विना अपराध स्वामीके पास वैसा निरादर होनेपर भी उस शुद्धहृदयकी वह अक्षोभित अगाध प्रेमराशि वह दो एक समयानुसार कातरबातें सब एक एक करके गुरुदयालको याद आनेलगी । इतनेपर बहन चम्पाका वेणीपर जुलमभी गुरुदयालको याद आया । एक एक दिन बातें याद करके बालिकाके असलगुणपर विस्मित होनेलगे ऊपरसे उन्होंने खुद भी स्त्रीपर जुल्म कियाथा वहभी यादकरके अपनेको सैकड़ों धिक्कार देनेलगे । सन्ताप से उनका हिया जलने लगा । आज स्त्रीके आगे कैसे मुँह दिखावेंगे इसीकी चिन्ता करनेलगे ॥

बहुत देरतक चिन्ता करने पीछे आँसू पोंछकर गुरुदयालने श्वशुरालयमें प्रवेश किया । भीतरजातेही सामने स्त्री बेनीका दर्शन मिला बेनी स्वामीको देखतेही मूर्छिता होकर जमीनमें गिरपड़ी । यह दशा देखकर गुरुदयालकी छाती फटने लगी । लडकेकी तरह रोते रोते गुरुदयाल स्त्रीको पलंगपर लेगये और बड़े यत्नसे उसकी मूर्च्छा छुडायी ।

चेत होनेपर बेनीने सामने स्वामीको पाया एकबार चारोंओर देखकर फिर पतिका मुँह देखने लगी । फिर उसकी आँखें ढपगयीं । गुरुदयालने अपनी आँखें पोंछकर कहा—" प्यारी !"

प्यारी कहाँ सुनती है। थोड़ी देरबाद वह सिहर उठी और फिर एक बार आँखें खोलकर देखा फिर आँखें बन्द करलीं। लेकिन मुँहसे कुछ कह न सकी।

थोडी देरबाद उसने कहा—"अरे यह क्या है! भगवान्" गुरुदयाल का कण्ठ उस समय बन्द था। वह चुपचाप रहे। बेनीने करुणास्वरसे कहा—"अगर मैं सपना देखती हूँ तो या परमेश्वर इस सपनेसे कोई न जगावे।"

गुरुदयालने रुकते कण्ठसे कहा—"प्यारी! यह सपना नही। मैं सचमुचतेरा वही निठुर स्वामी आया हूँ। तुम्हारे क्षमा किये विना हमारा निस्तार नहीं है इसीसे मै प्रार्थना करने आया हूँ।"

बेनी जो सोती थी अब उठ बैठी। और रोते २ स्वामीके दोनों पाँव पकड़कर कहा—"नाथ! क्या इतने दिन बाद मै याद आयी हूँ?"

इसका जवाब क्या बातोंसे हो सकता है? गुरुदयाल रोने लगे। बेनी भी स्वामीका पाँव पकड़े हुए बिमूर२ रोने लगी। स्वामीने स्त्रीको गोदमें ले लिया। दोनोंका आँसू एक हुआ। आँसूका इस तरह एक होना कैसा सुन्दर है? कितना सुखकर है? यह आप लोगोंमेसे जिनको समझनेकी प्रभुता है वह समझलें. हमें तो साहस कहनेकी प्रभुता नही है। सखीसे सूम भला जो ठावें देय जबाब। थोड़ी देरबाद बेनीने कहा—"इतने दिन काहे नही आये?"

गुरु०—"तुमको क्या मालूम नही है कि, मै कैद था?"

बेनीने अकचकाकर स्वामीकी ओर देखा। गुरुदयालने इस देखनेका अर्थ समझा। और फिर कहा—"तुमसे मै नही छिपाऊँगा। मैं एक बरसतक जेलमें था और वही अपने किये हुए पापका प्रायश्चित्त करता रहा। अब मै कुपथपर कभी नही जाऊँगा। काहे प्यारी! कहो तुम्हें मेरी बातपर विश्वास होता है?"

बेनी—"क्या! यह कैसी बात करते हो! तुम्हारी बातपर हमारा विश्वास नही होगा? तुमने कोई पाप किया हो यही बात हमारे मनमें नही—"

इतनेमें बिहारीलालने आकर गुरुदयालको पुकारा। गुरुदयालने आँसू पोंछकर स्त्रीको छातीसेलगाया और बाहर चले। बेनी इकटक स्वामीकी ओर देखती रही।

गुरुदयालके बाहर आनेपर बिहारीलालने कहा "भाई गुरुदयाल! तुमसे मैं कभी उद्धार नहीं हो सकता। तुमने हमारे मरे शरीरमें जी डाला है। भैया तुमको बुलाते है जरा चलो तो सही।"

गुरु०—"नही नहीं तुमको यह सब बातें कहनेकी क्या जरूरत है। तुम्हारा जो कुछ बुरा हुआ है सब हमारी ही करनीसे हुआ है। तुम चलो मै अभी आताहूँ।"

बिहारीलाल चले गये, लेकिन गुरुदयालको जानेकी जरूरत नहीं हुई । मोतीलाल आप आपहुँचे ।

आतेहीं मोतीलालने पूँछा—"अब हम अपनी भयेहू को बिदा कराने जाते हैं । हम लोगोंने जो उनपर अन्याय किया है उसका प्रायश्चित्त किये बिना हमारा निस्तार नहीं है ।

गुरु०—"चलो हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे । मैं भी अपने माता समान भौजाईसे अपने गुनाहोंकी मुआफी माँगूंगा । और जैसे होगा हाथ पाँव पकड़कर उनको सैदपुर लाऊँगा और फिर अपना उजड़ा घर बसानेकी फिकर करूँगा । और तुम लोगोंका भी यह सब गड़बड़ मिट जायगा ।"

मोती०—"तो अब देर नहीं करना चाहिये । मै बिहारीलाल, मा और बालबच्चे सबको वहाँ लिये चलूँगा मैने ऐसा काम किया है कि, अकेला वहाँ मुँह दिखानेका कलेजा नहीं होता ।"

गुरु०—"मै भी इनको यहाँ नहीं छोड़ जाऊँगा ।"

उसीदिन सब छोटी बहूको लेने गये । मोतीलालके घरमें गदाधरकी मा, एक नौकर और चम्पा पहेरेर रहीं ।

आठवाँ अध्याय ।

धूमावतीपर चम्पाका जोकुछ रुआब जमाथा वह सब आजकी घटनासे मिट्टी में मिलगया । अपनी बहनके दोनों लड़कोंको अपने हाथसे जहर देकर जो उसे खुशीहुई थी आज सहसा उसखुशीमे विषादका जावन पड़ाहै । अब उसके मन की क्या दशाहै सो पाठक स्वयम् समझ सकतेहै ।

इस समय डाहके मारे उसका हृदय धधाकर जलरहाहै चम्पा उस आगको बुझानेकी तदबीर सोचरही है ।

रात आधी जा चुकी है । चम्पाकी आंखमें नींद नहीं है वह उस गम्भीर रात को पागलिनीके वेषमें घर आंगन एक कररहीहै । आज घरमें कोई नहीं है । चम्पा जोचाहे वही करतीहै । चम्पाका स्वभावही ऐसाहै कि ऐसे मौकेको वह खाली नहीं जानेदेगी । लेकिन बात यह कि, अपना सोचाहै सो पूरा करेगी इस की अबतक तदबीर नहीं सोचसकी है । इसीकारण अबभी वह पागलिनीकी तरह आँगनमें दौड़रही है ।

दौड़ते २ अनाजके टालकी ओर उसकी आँखे गयीं । इतनेमें वह उठा उठी । प्रभो! इसगम्भीर रजनीमें खिटखिड़ही चम्पाका यह उठाना कैसाभयानकहै ?

न जाने क्या सोचकर चम्पा एकबार घरमें दौडकर गयी । और थोडेही देरबाद एक जलताहुआ मसाल हाथमें लेकर आँगनमें आयी । आतेही फिर वह भयङ्कर हँसी दीखपडा ।

या भगवान् ! मसालके उजियालेमें आदमीका चेहरा इतना भयंकर दीखता है । इसरोशनीके साथ चम्पाकी आँखें जलती क्यों है ? अरे ! यह मूर्ति कैसी भयंकरा है । परमेश्वर ! यह रोशनी बुझजाय और वह भयावनी मूर्ति देखनेको नसीब नहो । हे अन्धकार ! तुम एकबार आकर यह मूर्ति ढाकदो ।

लेकिन हमारे इतना विनयपरभी वह रोशनी नही बुझी अन्धकार नही आया देखतेही देखते चम्पाके हाथका मसाळ अन्नके टालको छूनेलगा । या भगवान् क्या हुआ ? अन्धकार भागतेथे और उजेला बढ़ा । अन्नका टाल जलउठा आगन में उजियालेकेमारे मानो आधीरातको सूरज निकले । उसीरोशनीके साथ साथ चम्पाकी विकट हँसीदेखी । मरघटमें जलती चिड़ाके चारोंओर विकट हँसी हँसतेहुए जैसे पिशाच पिशाचिन कूदकूदकर नाचती है । उसीतरह आज पाडेजीके घरमें आँगनके बीच जलती चिताके चहुँओर विकटहँसी दन्त दिखौअल और विकटनृत्य होरहा है ।

अब आग बुझनेकी कोई सूरत बाकी नही रही तब चम्पा अपने सोनेके मकानमें गयी और भीतरसे किवाँड बन्द करलिया आग ज्यों ज्यों हा हा करके ऊपर उठनेलगी त्यों त्यों पिशाचिनीका आनन्दोत्साहभी बढने लगा । अन्तमें आग धड़ाधड़ उड़ने लगी आगकी तेजी के साथ पिशाचिनी का आनन्द भी बढकर बाँसों ऊँचाहोगया ।

अरे ! क्याहुआ ! यह अन्धेरा घरभी अब धीरे २ उजेला क्यों होने लगा ? फिर उस पिशाचिनी का रूप देखने आया । वह आज सोयी नही है । वह भीषण भयावनी मूर्त्ति आनन्द के मारे घर में चारों ओर खेलरही है । हाँ ! यह खेल एकदम क्यो रुकगयी । आगका तेज क्या इतना बढगया न जाने क्यासोच कर बाघिनने एकबार दरवाजा खोला कि, भीषण अग्निशिखा सर्वसंहार के कालकी तरह लोलरसना विस्तार करके उसके आगे आयी । पिशाचिनीने कांपते २ दरवाजा बन्द कर लिया । लेकिन् अग्नि नही थम्ही । विकट हू हू कर के पिशाची के दरवाजा बन्द घर पर आक्रमण किया । सब विधाता की मरजी है ।

पाठक इतनी दूरआया । अब नहीं चल सकता । उस पिशाचिनी के

विपुल आनन्दका अभ्यास हम पाठक पाठिका गणको दे चुके है। लेकिन उसकी वह अनन्त यंत्रणा अब हमसे नही कही जाती। इमवक्त उसके चारों ओर अग्निराशि है घर छोड़कर अब वह भागभी नहीं सकती। जो चम्पा अबतक आनन्द के मारे घरमें नाच रही थी। उसी के अब प्राणपर नौबत आयी। उससमय का उसका व्याकुल ताप और उसकी वह विषमयंत्रणा उस पापी हृदयको चीरकर दिखाये बिना वर्णन नही किया जासकता। वह यंत्रणा असीम है उसको कौन सीमाबद्ध करनेकी कोशिस करेगा सीपीमें कौन समुद्र बन्द करना चाहेगा।

पिशाचिनीका हृदय चीरकर नही दिखा सका। लेकिन अब भी उसका विकट चीत्कार हम लोगोंका कान फाड़ रहा है। "बचाओ, बचाओ" की आवाज़ चारों ओरसे आ रही है।

लेकिन इस जलती आगमें अपना प्राण होमकर कौन पिशाचिनीको बचावे किसीने रक्षा नही की। किसीकी मदद चम्पाको नसीब नही हुई। कोपके मारे ज्ञानशून्य, देहपरिधानवस्त्रशून्य, मस्तक केश शून्य, उर्द्धबाहु मुष्टिबद्ध दाँत पर दाँत लगा हुआ। ऐसी एक विकट मूर्त्ति उस समय विकटनेत्रोंसे एकटक देख रही थी। और वह जलती आग! चारों ओर अग्नि है। आग कहाँ नहीं है? लेकिन वह मूर्त्ति देरतक इस अवस्थामें नही रही। देखतेही देखते जमीनमें गिर गयी। चारों ओरकी आरत उस समय हुंकारकर उठी।

इसी प्रकार वहाँ अपने हाथसेही चम्पा का पापमय शरीर उस जलती आगमें भस्म हो गया।

नवाँ अध्याय।

छोटीबहू मायके आकर अब सुशीला बनी। हम भी उसको सुशीलाही कहकर पुकारेंगे। आज शामके बाद सुशीला और तारा एक साथ बैठकर क्या क्या कह रही हैं! आज सुशीलाका मुँह बहुत विपन्न है। लम्बी साँस लेकर कह रही है:—"सुनती हूँ सधवा नारी स्वामीको छोड़कर मायके रहना स्वामीके लिये अच्छा नहीं होता?"

तारा—"तो काहेको आयी?"

सुशी०—"बहन! आयी क्या मै अपने सुखके लिये हूँ?"

तारा—"तो आँसू काहेरे? रोते काहे है?"